शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका : केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त पत्रिका

शोध अंक 39 मार्च 2018 200.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰)
फोन : 01342-263232, 07838090732
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ॰ मीना अग्रवाल
बी-203, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फ़ोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन॰सी॰आर॰
डॉ॰ अनुभूति
सी-106, शिव कला
बी 9/11, सैक्टर 62, नोएडा
फोन : 09560554612

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

प्रबंध संपादक
डॉ॰ मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ॰ शंकर क्षेम

उपसंपादक
डॉ॰ रश्मि त्रिवेदी

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ॰ अनुभूति

उपसंपादक
डॉ॰ अशोककुमार 09557746346

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी॰ए॰

शुल्क
आजीवन : व्यक्तिगत : पाँच हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : छह सौ रुपए
यह प्रति : दो सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

परामर्श-मंडल

डॉ॰ सुधा ओम ढींगरा, 101, Guymon Court, MorrisVille, NC-27560 USA
डॉ॰ सुरेशचंद्र शुक्ल, अध्यक्ष इंडो-नार्वेजियन सूचना एवं सांस्कृतिक मंच
प्रो॰ हरिशंकर आदेश, भारतीय प्राच्य विद्या संस्थान, कनाडा
डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका, ए-98, अशोक विहार फ़ेज-1, दिल्ली 110052
डॉ॰ आर॰पी॰ सिंह, पूर्व कुलपति, मेरठ विश्वविद्यालय एवं पूर्व प्राचार्य बरेली कॉलेज, बरेली (उ॰प्र॰)
प्रो॰ अशोक चक्रधर, जे-116, सरिता विहार, नई दिल्ली
प्रो॰ नंदकिशोर पांडेय, निदेशक केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (उ॰प्र॰)
प्रो॰ आदित्य प्रचंडिया, हिंदी विभाग, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग, आगरा (उ॰प्र॰)
प्रो॰ हरिमोहन, कुलपति, जे॰एस॰विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद (फिरोशाबाद) उ॰प्र॰
प्रो॰ बाबूराम, पूर्व अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
डॉ॰ राजेंद्र मिश्र, 14/4 स्नेहलता गंज, इंदौर 452003 (म॰प्र॰)
प्रो॰ रामसजन पांडेय, हिंदी विभाग, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ी (हरियाणा)
प्रो॰ हरिमोहन बुधौलिया, पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष हिंदी अध्ययन शाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
डॉ॰ दामोदर खड़से, पूर्व कार्याध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई (महा॰)
प्रो॰ शंकर बुंदेले, प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय, अमरावती
प्रो॰ आनंदप्रकाश त्रिपाठी, अध्यक्ष हिंदी अध्ययन मंडल, डॉ॰ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
प्रो॰ अर्जुन चव्हाण, प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महा॰)
डॉ॰ माया टाक, पूर्व प्रोफ़ेसर संगीत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज॰)
प्रो॰ अनिलकुमार जैन, प्रोफ़ेसर हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज॰)
प्रो॰ शंभुनाथ तिवारी, हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
डॉ॰ अवनिजेश अवस्थी, हिंदी विभाग, पी॰जी॰ डी॰ए॰वी॰ कालेज, नेहरू नगर, नई दिल्ली
प्रो॰ हनुमानप्रसाद शुक्ल, हिंदी विभाग, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्ध
प्रो॰ चंद्रकांत मिसाल, प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग, एस॰एन॰डी॰टी॰ महिला विद्यापीठ, पुणे (महा॰)
डॉ॰ मुकेश गर्ग, पूर्व एसोसिएट प्रोफ़ेसर हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
प्रो॰ जितेंद्र वत्स, प्रोफ़ेसर हिंदी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया (बिहार)
डॉ॰ माला मिश्रा, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, अदिति कालेज (दिल्ली विश्व॰), बवाना
प्रो॰ श्यामधर तिवारी, हिंदी विभाग, संघटक महाविद्यालय पौड़ी, गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर
डॉ॰ दिनेशकुमार चौबे, हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग (मेघालय)
डॉ॰ शाहबुद्दीन शेख़, प्राचार्य, लोकसेवा कला व विज्ञान महा॰, औरंगाबाद (महा॰)
डॉ॰ योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण', (पूर्व प्राचार्य) 74/3 नया नेहरूनगर, रुड़की (उत्तराखंड)
डॉ॰ महेशचंद्र, पूर्व एसोसिएट प्रोफ़ेसर हिंदी विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ (उ॰प्र॰)
श्री राकेशकुमार दुबे, पत्रकारिता और जनसंचार विभाग, उड़ीसा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट (उड़ीसा)
डॉ॰ महेश दिवाकर, अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी साहित्य एवं कला मंच, मुरादाबाद (उ॰प्र॰)
डॉ॰ अरुणकुमार भगत, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, नोएडा (उ॰प्र॰)
डॉ॰ एम॰एस॰ विमल, सहायक प्राध्यापक अँग्रेजी, शासकीय महाराजा पी॰जी॰ महा॰, छतरपुर (म॰प्र॰)

आजीवन सदस्य

उत्तर प्रदेश/ उत्तराखंड

डॉ॰ रामानंद शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग, हिंदू (पी॰जी॰) कालेज
9, जिगर कालोनी, मुरादाबाद (उ॰प्र॰)

डॉ॰ मधुलिका तिवारी
रीडर एवं अध्यक्ष, इतिहास विभाग,
एल॰आर॰ पी॰जी॰ कॉलिज, साहिबाबाद
गाजियाबाद (उ॰प्र॰)

श्री हरिराम 'पथिक'
स्नेहगंगा, विष्णुधाम कालोनी,
गली नं॰ 3, न्यू माधोनगर, सहारनपुर (उ॰प्र॰)

डॉ॰ वंदना सेमल्टे
टी॰एफ॰ 7, प्रेरणा अपार्टमेंट्स,
गांधीनगर, गाजियाबाद 201001

डॉ॰ मनमोहन शुक्ल
147, मायापुरी, आवास योजना
झूँसी, इलाहाबाद 211019

श्री अरुणकुमार भगत
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता
एवं संचार विश्वविद्यालय, नोएडा परिसर
'माध्यम' सी-56, ए/5, सेक्टर-62
नोएडा 201301 (उ॰प्र॰)

डॉ॰ विपिनकुमार गिरि
पुराना माधवनगर, भारद्वाज गली,
सहारनपुर (उ॰प्र॰)

प्राचार्या
आर॰बी॰डी॰ महिला महाविद्यालय
बिजनौर (उ॰प्र॰) 246701

डॉ॰ सुधारानी सिंह
सी-54, सेक्टर-3, सुशांत सिटी,
दिल्ली बाईपास, मेरठ (उ॰प्र॰)

डॉ॰ प्रेमव्रत तिवारी
सरस्वती सदन, बेतियाहाता, गोरखपुर (उ॰प्र॰)

डॉ॰ पूनम भारद्वाज
17 प्रेम विहार, मुजफ़्फ़रनगर 251001
09997100697

श्रीमती अल्पना
द्वारा श्री अरुण कपूर, III एच 288 नेहरूनगर
पवन सिनेमा के पीछे, राकेश मार्ग
गाजियाबाद 201001

डॉ॰ वंदना श्रीवास्तव
के 83 सी आशियाना, लखनऊ 226012
09415917170

प्रो॰ धर्मेंद्रकुमार द्विवेदी
असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय
पुँवारका, सहारनपुर (उ॰प्र॰)

डॉ॰ महेंद्रपाल सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिंदी
सेठ पी॰सी॰ बागला पी॰जी॰ कॉलेज, हाथरस

डॉ॰ अर्चना वालिया
286, जौनपुर दक्षिण, स्नेहकुंज कालोनी,
कोटद्वार (गढ़वाल) उत्तराखंड 246149

डॉ॰ सुचित्रा मलिक
37 गांधी आश्रम, विष्णु गार्डन
कनखल (हरिद्वार) उत्तराखंड

डॉ॰ श्रीकांत अवस्थी
राजीव गांधी विद्यालय
कोटा बाग, नैनीताल (उत्तराखंड)

सुरेंद्रकुमार जैन
हिंदी विभाग,
स॰ भगतसिंह राजकीय स्नातकोत्तर महा॰,
रुद्रपुर (नैनीताल)

मध्य प्रदेश

डॉ॰ राजेंद्र मिश्र
14/4 स्नेहलता गंज, इंदौर 452003 (म॰प्र॰)

डॉ॰ स्मृति शुक्ला
ए-16 पंचशील नगर, नर्मदा रोड, जबलपुर (म॰प्र॰)
डॉ॰ सुरेंद्र यादव
102 नवदीप अपार्टमेंट, 7 शंकर नगर (साकेत)
इंदौर 452018 मो॰ 09009566220
डॉ॰ ज्योतिसिंह
213 अनूपनगर
सी॰एच॰एल॰ अपोलो हास्पिटल के सामने
ए॰बी॰ रोड, इंदौर 452008 (म॰प्र॰)
09926300355
डॉ॰ चंदा तलेरा जैन
जी-17, रेडियो कालोनी, इंदौर (म॰प्र॰) 452001
09425944773
डॉ॰ वंदना अग्निहोत्री
194 सुखदेव नगर, एरोड्रम रोड,
इंदौर (म॰प्र॰) 452001
09926477787
डॉ॰ पुष्पा शाक्य
110, सुंदरनगर मेन, सुकलिया, इंदौर (म॰प्र॰)
09827281203
डॉ॰ चंद्रकिरण अग्निहोत्री
108, रेडियो कालोनी, इंदौर (म॰प्र॰) 452001
डॉ॰ पंकज विरमाल
अध्यक्ष हिंदी विभाग, इंदौर क्रिश्चियन कालेज
इंदौर (म॰प्र॰) 452001
प्राचार्य,
शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई
कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
किला भवन, इंदौर (म॰प्र॰)
डॉ॰ निशा तिवारी
650 नैपियर टाउन,
भँवरताल वाटर टैंक के पीछे
जबलपुर 482001 (म॰प्र॰) मो॰ 09425386234
डॉ॰ नीना उपाध्याय
प्रो॰ हिंदी विभाग
868, इंदिरा गांधी वार्ड, अंजनी बिल्डर्स के पास
गढ़ा, जबलपुर (म॰प्र॰) 482003
मो॰ 09424305641

प्रो॰ हरिमोहन बुधौलिया
6 दीप्ति विहार, इंदौर रोड
उज्जैन (म॰प्र॰) 456010
मो॰ 9826214024

पंजाब/ हरियाणा

श्री हेमांशु शर्मा
हिंदी विभाग, साईंदास ए॰एस॰सी॰ सी॰से॰ स्कूल
पटेल चौक, जालंधर शहर (पंजाब)
प्राचार्या
कमला नेहरू कालेज फॉर वुमैन
फगवाड़ा (कपूरथला) पंजाब
प्राचार्या
कन्या महाविद्यालय
विद्यालय मार्ग, जालंधर (पंजाब) 144004
डॉ॰ विद्या चौधरी
मिर्जापुर फार्म, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) 136119
डॉ॰ विजय इंदु
1608 हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी
सेक्टर 10 ए, गुड़गाँव (हरियाणा) 122001
डॉ॰ कविता यादव
पुत्राी श्री सुनिलकुमार,
ग्राम व पोस्ट पालावास
जिला रेवाड़ी (हरियाणा) 123035
डॉ॰ राजाराम अग्रवाल
ग्राम व पोस्ट शेखपुर दरौली
जिला फतेहाबाद (हरि॰) 125053
मो॰ 09896789100
डॉ॰ पुष्पा अंतिल
203, टॉवर-9, फ्रेस्को
निर्वाणा, सेक्टर 50, गुड़गाँव (हरि॰) 122018
मो॰ 096547444800
प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय, सिध्रावली (गुड़गाँव)
प्राचार्य
द्रोणाचार्य राजकीय महाविद्यालय, न्यू रेलवे रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)

ISSN 0975-735X

प्राचार्य
हरद्वारीलाल राजकीय महाविद्यालय,
तावडू (मेवात)

डॉ॰ ऋषिपाल
ऐसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिंदी-विभाग, बाबू अनंतराम जनता महाविद्यालय,
कौल, कैथल (हरियाणा)

प्राचार्य
बाबू अनंतराम जनता महाविद्यालय,
कौल, कैथल (हरियाणा)

महाराष्ट्र

डॉ॰ मेहमूद रसूल पटेल
दारुल अमन, काशीनगर,
जालना रोड, बीड़ (महा॰)

डॉ॰ शहाबुद्दीन नियाश मुहम्मद शेख़
(प्राचार्य, लोकसेवा कला व विज्ञान महा॰औरंगाबाद)
अध्यक्ष, राष्ट्रीय हिंदी सेवी महासंघ
78/484 सिविल हडको,
अहमदनगर 414003
09850119687

प्रो॰ शेख़ मुहम्मद शाकिर शेख़ बशीर
अध्यक्ष हिंदी विभाग
पूना कालेज ऑफ़ आर्ट्स, कामर्स एंड साइंस
कैंप, पुणे 411201 (महा॰)
09423017017

प्रा॰ डॉ॰ अभयकुमार रमेश खैरनार
मु॰पो॰ जुनवणे, तह॰ जि॰ धुले (महाराष्ट्र)

प्रा॰ अनंत नानाजी केदारे
5 पार्वती अपार्टमेंट, अयोध्या कॉलोनी
दातेनगर, गंगापुर रोड
नासिक 422005 (महा॰)

डॉ॰ मंजूर चाँदभाई सय्यद
'गुलसिता' 223 औदुंबरनगर, अमृतधाम
पंचवटी, नासिक 422004 (महा॰)
09822991516

डॉ॰ शोभा साहेबराव राणे
17 स्वर समृद्धि अपार्टमेंट,
नंदनवन लॉन के सामने
आशाराम बापू आश्रम मार्ग, सावरकर नगर,
गंगापुर रोड, नासिक (महा॰) 422013

डॉ॰ लियाक़त मियाँ भाई शेख़
अखिलेश नगर, प्लाट क्र॰ 11
नए बस स्टैंड के पास,
गंगापुर, (औरंगाबाद) महा॰ 09423933402

डॉ॰ संजय विक्रम ढोढरे
7, मोतीरामनगर, वाडीभोकर रोड,
देवपुर, धुले 424002 (महाराष्ट्र)

डॉ॰ अशोक द्रौपद गायकवाड़
'कृतज्ञता', अवधूत पार्क, आरोह निसर्ग के पास
कादंबरी नगर क्रमांक 1 के पास
पाइप लाइन रोड, सावेडी
अहमदनगर (महा॰) 414003
09822941330

डॉ॰ अश्विनीकुमार 'विष्णु'
अध्यक्ष अँग्रेशी विभाग
सीताबाई आर्ट्स कालेज, अकोला (महा॰)

प्रा॰ दत्तात्रााय माधवराव टिलेकर
द्वारा संतोष मेडिकल, साई प्रेस्टिज, फ्लैट नं॰ 13
पाटील अली, ओतूर
तह॰ जुन्नर, शिला पुणे (महा॰) 412409
09860229544

डॉ॰ मजीद मुनीर शेख़
ग्राम व पो॰ साष्ट, पिंपल गाँव,
(वाया अंकुशनगर) तह॰ अंबड
शिला जालना (महा॰) 431212
09765944586

डॉ॰ भरत त्रायंबक शेणकर
द्वारा होटल जय महाराष्ट्र
ग्राम, पो॰ व तह॰ अकोले
शिला अहमदनगर (महा॰) 422601
09423164521

डॉ॰ पोपट विट्ठल कोटमे
फ्लैट नं॰ 5, सत्यसंगम
कोआपरेटिव हाउसिंग सोसायटी
श्री जयनगर, इंदिरानगर, नासिक (महा॰) 422006
09850760866

डॉ॰ एस॰एन॰ देवरे
प्लाट नं॰ 17, सिद्धिविनायक कॉलोनी
देवपुर, धुले (महा॰) 424002

डॉ॰ श्रीमती विजयालक्ष्मी नारायण रामटेके
सुशीला सोसायटी, प्लाट क्र॰ 5
अजय जिम के पीछे, तेलरांधे के सामने
जरी पटका रिंगरोड, जरी पटका पोस्ट ऑफ़िस
नागपुर 440014 (महा॰)

सुश्री शारदा बी॰ जावरे
ओमकार, समृद्धि डेपलपर, फ्लेट क्र॰ 402
प्लाट नं॰ 26, सर्व क्र॰ 137/1 ए,
बराटे स्कूल के पास, वारजे, मालवाडी,
पुणे 411058 (महाराष्ट्र)
08805616654

प्रा॰ (श्रीमती) ऐनूर अजीजभाई इनामदार
स्वामी समर्थनगर, राजूरी रोड, कोल्हार 413710
तहसील राहाता, जिला अहमदनगर (महा॰)
09011449636

प्रो॰ डॉ॰ चंद्रकांत मिसाल
प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग,
एस॰एन॰डी॰टी॰ महिला विश्वविद्यालय,
कर्वे रोड, पुणे 411038 (महाराष्ट्र)

सुश्री कामिनी अशोक न्यायाधीश
661 अरुणोदय कालोनी, सिडको एन-5
औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
09975773345

प्रा॰ अशोक शामराव मराठे
116, सखाराम नगर,
पेरेजपुर रोड, साक्री, तह॰ साक्री,
जिला धुले 424304 (महाराष्ट्र)

प्रा॰ पंजाबी ममता नानकचंद
19/20, त्रिमूर्ति नगर,
मोरे अस्पताल के पास,
साक्री, तहसील साक्री,
जिला धुले 424304

प्रा॰ डॉ॰ योगेश गोकुळ पाटिल
प्लॉट नं॰ 12, नयना सोसायटी,
नकाणे रोड, देवपुर
धुले 424002

प्रा॰ उषा पुंडलिक शिरोळे
द्वारा श्री शशिकांत हरी बागड़े
गुरुकृपा हास्पिटल, डाक पारीपत्यदार
सावतानगर मालेगाँव, तह-मालेगाँव
जिला नासिक (महा॰)

प्रा॰ करुणा दत्तात्राय अहिरे
व्ही॰यू॰ पाटिल कला एवं विज्ञान महाविद्यालय,
साक्री, तह॰ साक्री,
जिला धुले 424304

प्रा॰ डॉ॰ प्रमोद गोकुळ पाटील
मु॰पो॰ मोराणे (प्र॰ल॰)
तह॰ जिला धुले 424001 (महाराष्ट्र)

प्रा॰ डॉ॰ अश्फाक सिकलगर
जीएफ-102 ताज अपार्टमेंट,
चालीसगाँव रोड, धुले (महाराष्ट्र)

प्रा॰ डॉ॰ महेंद्रसिंह रघुवंशी
सरस्वतीनगर, प्लॉट नं॰ 10,
वाघेश्वरी मंदिर के पास,
नंदुरबार 425412

डॉ॰ रेखा वसंत पाटील
सीतामाईनगर, चालिसगाँव
शिला जलगाँव (महा॰) 424101

प्रा॰ डॉ॰ मंजू तरड़ेजा (सिंघाणी)
ब्लॉक नं॰ आर-10, रूम नं॰ 10,
कुमारनगर, साक्री रोड, धुले 424001

ISSN 0975-735X

प्रा॰ डॉ॰ चंद्रमादेवी पाटील
59, ध्नदाईनगर, गोंदुर रोड, वलवाडी,
देवपूर, धुले 424005 (महाराष्ट्र)
डॉ॰ संजयकुमार नंदलाल शर्मा
38, जमनानंद, गुरुकुल कालोनी,
तलोदा, जि॰ नंदुरबार (महाराष्ट्र) 425413
श्रीमती वर्षा सुभाषचंद्र देशमुख
बी-6, चंद्रवेल अपार्टमेंट, गोविंदनगर होटेल
प्रकाश्या भागे, मुंबई नाका,
नासिक (महाराष्ट्र) 422010
डॉ॰ देवकीनंदन महाजन
1 टेलीफोन कालोनी,
धुले रोड, अमलनेर (जलगाँव) महाराष्ट्र
डॉ॰ कल्पना राजेंद्र पाटील
38, जमनानंद, गुरुकुल कालोनी, तलोदा
जि॰ नंदुरबार (महाराष्ट्र) 425413
सुश्री निर्मला पुरुषोत्तम तोमर
फ्लेट नं॰ 12, एस नं॰ 137/2
वारजे मलवाडी
पुणे 411058
08087612123
प्रा॰ डॉ॰ रामचंद्र माली
अध्यक्ष हिंदी विभाग,
क॰वा॰वि॰ महाविद्यालय
नवापुर, शिला नंदुरबार (महाराष्ट्र)
डॉ॰ सुषमा कोंडे
81/ए, प्लाट नं॰ 9/ए,
गिरिदर्शन हाउसिंग सोसायटी, बानेर रोड
पुणे 411007 (महाराष्ट्र)
09822848464
प्राचार्य
विद्यावर्धिनी महाविद्यालय,
धुले (महा॰) 424001
डॉ॰ हेमलता कांचनकर
43 नंदनवन कालोनी (कैंट)
औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
09730202528

सुश्री नेहा संदीप घोरपड़े
द्वारा सुश्री सुनीता पवार
फ्लैट नं॰ 404, प्रकाश मेमाराइज
एस नं॰ 73, दूध डेयरी, पुणे-411046
सुश्री भारती मधुकर पाटील
मु॰पो॰ सावलदे, तहसील शिरपूर
जिला धुले (महा॰)
प्रा॰ शिंदे नवनाथ सर्जेराव
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
सांगोला महाविद्यालय, सांगोला
कडलास रोड, सांगोला (सोलानुर) 413307
09763602304
डॉ॰ मीनल प्रमोद बर्वे
7, गिरिजात्मक, अष्टविनायक रेजिडेंसी,
के॰जे॰ मेहता कालेज के पास, नासिक-पुणे हाईवे
नासिक रोड (महाराष्ट्र) 422001
09423968189
प्रो॰ अमानुल्लाह मो॰ शेख़
श्रद्धा रेजिडेंसी, बिल्डिंग ए, बिंग ए-201
आई॰टी॰आई॰ कालेज के पास
पो॰ मुकिंदपुर, तह॰ नेवासा
जिला अहमदनगर (महा॰)
श्री शेख शिराज हसन
पोस्ट बोरी, तालुका खंडाला (सतारा)
415521 (महा॰)
मो॰ 09011444059
प्रा॰ ईश्वर पदमसिंग ठाकुर
जनशक्ति कालोनी
रिंग रोड, फैजपुर, तहसील यावल (जलगाँव)
डॉ॰ दीपक विश्वासराव पाटील
मुकाम सौंदाणे
निकट कलाविश्व कंप्यूटर सेंटर
पो॰ बडजाई (धुले) महा॰ 424002
099923811609

डॉ॰ अनिता मधुकर अंतरे
मयूर सोलर ऐजेंसी
स्वामी समर्थ मंदिर के पास
पो॰ लोनी बी के, तालुका रहाता
जिला अहमदनगर (महाराष्ट्र) 413736
09970343766

डॉ॰ विट्ठलसिंह नंदरामसिंह ढाकरे
'सी' टाइप कालेज
शास्त्राीनगर, लासलगाँव
जिला नासिक (महाराष्ट्र) 422306
08888590156

डॉ॰ उर्मिला मानसिंह गायकवाड
प्लॉट नं॰ 290-292, सेक्टर-29
गुरु स्मृति अपार्टमेंट, ए-विंग,
फ्लैट नं॰ 303 रावेत निकट डी-मार्ट
पुणे 412101, मो॰ 07620225839

डॉ॰ एफ॰एम॰ शाह
द्वारा श्री टी॰एम॰ धुवारे
छोटा दत्त मंदिर के पास, टी॰बी॰ टोली
गोंदिया (महा॰) 441614
मो॰ 07620042772

डॉ॰ शैला पांडुरंग चव्हाण
फ्लेट नं॰ 1, सुविधिनाथ हाउसिंग सोसायटी
मुख्य फायर ब्रिगेड आफिस के सामने
हीरा-मोती शोरूम के पीछे,
सिंघाड़ा तालाब, नासिक (महा॰) 422001
मो॰ 09850827138

प्राचार्य
कला, वाणिज्य व कंप्यूटर
एप्लीकेशन महिला महाविद्यालय
डोंगर कठोरे, यावल,
जिला जलगाँव (महा॰)

प्रा॰ पुरुषोत्तम कुंदे
हिंदी विभाग, न्यू आर्ट्स कामर्स एंड साइंस कालेज
शेवगाँव (अहमदनगर) 414502 महाराष्ट्र
09850947267

प्रा॰ अमृता भरत पाटिल
प्लाट नं॰ 23, बालाप्पा कॉलोनी
अशोकनगर के पास, जमनागिरि रोड
धुले (महा॰) 424001

डॉ॰ सचिन कदम
हिंदी विभाग, संगमनेर महाविद्यालय
संगमनेर (महाराष्ट्र)
रूपाली नामदेवराव रिंगे
द्वारा बालाजी संभाजी कदम
फ्लैट नं॰ 12, साईं श्रद्धा रेसिडेंसी, प्लॉट नं॰ 78
सी॰डी॰सी॰ पूर्णनगर, चिंचवड,
पुणे 411019 महाराष्ट्र
09420848635, 07276268922

प्रो॰ मनोहर हिलाल पाटिल
प्लॉट नं॰ 1, परिजात कॉलोनी
निकट इंदिरा गार्डन, देवपुर धुले 424002 (महा॰)

गुजरात

श्री गुलाबराव शांताराम बाविस्कर
201, के-टॉवर, श्रीनंदनगर
सोखड़ा रोड, छाणी,
बड़ोदरा (गुजरात) 391740
09624501415

कर्नाटक

डॉ॰ जुबैदा हाशिम मुल्लाँ
बैतुल हाशमी, म॰नं॰ 152, ताजनगर
हुबली 580031 (कर्नाटक)

तमिलनाडु

Dr. V. Jayalakshmi
Mathura, Plot No. 38
5th Cross Street, Gokul Nagar
Perumbakkam, Chennai-600100

डॉ॰ कैलाशंद्र शर्मा 'शंकी'
प्रोफेसर कॉलोनी, स्टेडियम रोड
चरखी दादरी (भिवानी) हरियाणा 127306
मो॰ 09812121233

ISSN 0975-735X

संपादकीय

गोपाल चतुर्वेदी के साहित्य में राजनीतिक व्यंग्य

जनतंत्रात्मक शासन होने के कारण भारत में प्रत्येक व्यक्ति को विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता है। वह अपने भाव-विचारों को साहित्य, चित्रकला, नृत्य, संगीत, वास्तुकला आदि के माध्यम से व्यक्त कर सकता है। विचार-स्वातंत्र्य होने के कारण व्यंग्य की जड़ें भी मजबूत हुईं तथा व्यंग्य के क्षेत्र का विस्तार भी हुआ। रामराज्य की कल्पना साकार न होने तथा राजनेताओं की कुर्सी-लोलुपता के कारण व्यंग्य का सबसे अधिक शिकार राजनेताओं एवं राजनीतिज्ञों को ही बनना पड़ा है। राजनीतिक परिवेश निरंतर कलुषित होता जा रहा है। नेताओं की कथनी और करनी में पर्याप्त अंतर है। लोकतंत्र के स्थान पर भीड़तंत्र व भेड़तंत्र का वातावरण बनता जा रहा है। शासक अवसर मिलते ही धन जुटाने लग जाता है और जनता को उपदेश देता है—सादगी का, संयम का। नेताओं के दर्शन केवल चुनावों के समय होते हैं। व्यंग्यकारों ने इन विडंबनाओं पर अपनी लेखनी

 ISSN 0975-735X

 ISSN 0975-735X

 ISSN 0975-735X

 ISSN 0975-735X

 ISSN 0975-735X

समीक्षा समिति

प्रो॰ हरिमोहन, कुलपति, जे॰एस॰विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद (फिरोशाबाद) उ॰प्र॰
प्रो॰ आदित्य प्रचंडिया, पूर्व प्रोफेसर हिंदी विभाग, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग, आगरा (उ॰प्र॰)
प्रो॰ रामसजन पांडेय, हिंदी विभाग, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ी (हरियाणा)
प्रो॰ अनिलकुमार जैन, प्रोफ़ेसर हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज॰)
प्रो॰ हरिमोहन बुधौलिया, पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष हिंदी अध्ययन शाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म॰प्र॰)
प्रो॰ शंभुनाथ तिवारी, हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उ॰प्र॰)
प्रो॰ चंद्रकांत मिसाल, अध्यक्ष हिंदी विभाग, एस॰एन॰डी॰टी॰ महिला विद्यापीठ, पुणे (महा॰)

 ISSN 0975-735X

अनुक्रम

ISSN 0975-735X

शोध दिशा के दो बड़े विशेषांक जो शीघ्र प्रकाशित होंगे।
1. डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका : सृजन और साहित्य विशेषांक
2. डॉ॰ राजेंद्र मिश्र : सृजन और साहित्य विशेषांक
आपकी सक्रिय भागीदारी की अपेक्षा है।

 ISSN 0975-735X

शमशेर बहादुर सिंह की काव्यभाषा में बिंब-विधान

डॉ. मानवी (कुशवाहा)

प्रतीक और अप्रस्तुत तो आरंभ से ही कविता की समीक्षा के प्रतिमानों के रूप में स्वीकार किए गए, अब बिंब को भी कविता के मूल्यांकन की कसौटी के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। आजादी से पहले तक हिंदी के समीक्षकों और आलचकों ने बिंब को काव्य का प्राणतत्त्व नहीं माना था। आजादी के बाद कई नए संदर्भ, कई नए शिल्प-प्रतिमान सामने आए। छायावादी कवियों ने भी अप्रत्यक्ष रूप से शिल्प के अंग के रूप में 'चित्रतत्त्व' को स्वीकार किया था। पंतजी ने काव्यभाषा का विवेचन करते हुए चित्रभाषा के प्रयोग की बात कही। इसका अभिप्राय था कि उन्होंने बिंब को काव्य-शिल्प के अंगरूप में स्वीकार किया था। आचार्य शुक्ल ने भी बिंब को स्वीकृति दे दी थी। 'चिंतामणि' के एक निबंध में उन्होंने लिखा था, 'काव्य का काम है कल्पना में बिंब या मूर्तभावना उपस्थित करना।[1]

बिंब काव्यभाषा की तीसरी आँख है। बिंब शब्द का अर्थ है छाया, प्रतिच्छाया, अनुकृति या शब्दों के द्वारा भावांकन। बिंब अँग्रेजी के इमेज शब्द का हिंदी रूपांतर है। सी०डी० लेविस ने कहा है–'The poetic image is more or less a sensuous picture in woroos, to some degree metaphorical, with an undernote and some human emotion, in its conteñt but also charged with releasing into the reader a special poetic emotion or passion.' अर्थात् काव्यात्मक बिंब एक संवेदनात्मक चित्र है, जो एक सीमा तक अलंकृत रूपात्मक भावात्मक और आवेगात्मक होता है। लीविस ने बिंब को भावगर्भित चित्र माना है।[2]

डॉ॰ नगेंद्र के अनुसार, 'बिंब किसी अमूर्त विचार अथवा भावना की पुनर्निर्मिति है।[3] एजरा पाउंड के अनुसार, 'बिंब वह है, जो किसी बौद्धिक तथा भावात्मक संश्लेष को समय के किसी एक बिंदु पर संभव करता है।'[4]

'तार सप्तक' में प्रभाकर माचवे ने अपनी कविता को बिंबवादी घोषित किया। फिर भी तीसरे सप्तक के कवि केदारनाथ सिंह से पहले किसी ने बिंब-विधान को प्रमुखता नहीं दी थी। केदारनाथ सिंह ने घोषणा की–'कविता में मैं सबसे अधिक ध्यान देता हूँ बिंब-विधान पर।'[5]

केदारनाथ सिंह 'बिंबों की आविष्कृति' को। कवि की श्रेष्ठता की कसौटी मानते हैं। 'आधुनिक हिंदी में बिंब-विधान का विकास' पुस्तक में उन्होंने बिंब के प्रतिमान पर छायावाद से लेकर प्रयोगवाद तक के साहित्य की परीक्षा की है।

शमशेर बहादुर की कृतियों में बिंब अधिक सजीव और ऐंद्रिय हैं। उनके काव्य में बिंब अधिक संश्लिष्ट और गहराई लिए हुए हैं।

शमशेर की कविता में लौकिक बिंबों के साथ-साथ अलौकिक बिंबों की सृष्टि भी हुई है।

शमशेर के काव्य में वस्तु या प्राकृतिक उपादानों का मानवीकरण हुआ है, जो एक प्रकार की बिंबात्मकता ही है। शमशेर की कविता में जहाँ कल्पना है, वहाँ बिंब अधिक प्रभावशाली हैं।

शमशेर बहादुर की काव्यभाषा मुख्य रूप से बिंब-प्रधान है। वह बिंबों का चयन बड़ी कुशलता से करते हैं। उनकी कुछ कविताओं में भाषिक संवेदना के साथ बिंबों-प्रतीकों का कौशल बहुत प्रभावशाली है। उनके बिंब-विधान को निम्नलिखित वर्गों में रख सकते हैं–

1. प्रकृति-बिंब, 2. गंध बिंब, 3. आस्वाद्य बिंब, 4. नाद बिंब, 5. दृश्य बिंब, 6. स्पर्श बिंब, 7. आद्य बिंब, 8.स्मृति बिंब, 9. भाव बिंब, 10. अप्रस्तुत बिंब

1. **प्रकृति बिंब**

शमशेर की कविता में प्राय: प्रकृति बिंबों का सुंदर प्रयोग हुआ है। उनके प्रकृति बिंबों में संश्लिष्ट रोमानी बिंबों की मोहकता और मार्मिकता है। उनके बिंब कल्पनाजनित होकर भी यथार्थ से परिचित कराते हैं। कहीं-कहीं वे यथार्थपरक होकर भी कल्पना जैसे लगते हैं। 'एक नीला दरिया बरस रहा', 'सारनाथ की एक शाम', 'सागर तट सौंदर्य', 'एक पीली शाम', 'पूर्णिमा का चाँद', शाम होने को हुई', 'बसंत आया' आदि कविताओं में उनकी प्रकृति बिंबों की आभा दिखाई देती है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं–

1. पी गया हूँ दृश्य वर्षा का
हर्ष बादल का
हृदय में भरकर हुआ हूँ। हवा सा-हल्का।
धुन रही थीं सर
व्यर्थ व्याकुल मत्त लहरें[6]
2. व्योम में फैले हुए मेहराब के विस्तार
स्तूप औ, मीनार नभ को थामने के लिए
उठते हुए।
विकटतम थे अति विकटतम
विगत के सोपान पर्वतशृंग।[7]

2. **गंध बिंब**

गंध बिंब गंध-विषयक अप्रस्तुतों के माध्यम से घ्राण-संबंधी अनुभूति को उद्‌बुद्ध करते हैं। दृश्य को प्राणवान बनाने में गंध योजना सहायक सिद्ध होती है–

1. धुआँ धुआँ सुलग रहा।[8]
2. सीने में सूराख हड्‌डी का।
आँखों में घास-काई की नमी।[9]
3. थी महक। शराब की।[10]

3. **आस्वाद्य बिंब**

दृश्य को स्वाद के स्तर पर अनुभव करना और कराना कल्पना-व्यापार का सबसे कठिन काम है। शमशेर के काव्य में स्वाद- संवेदना की कलात्मक अभिव्यक्ति हुई है। इसे 'रासायनिक' बिंब भी कहते हैं। स्वाद-संवेदना के अनेक चित्र उनकी कविताओं में मिलते हैं–

1. हल्की मीठी चा सा दिन
मीठी चुस्की सी बातें
मुलायम बाहों का अपनाव।[11]
2. आखिर क्यों मुस्कुराते हैं शराबी अधर?[12]
3.नमक जैसे मैले संगमरमर का बादल।[13]
4. दिलों में जैसे मीठी फाँसें।[14]

4. **रूप बिंब**

कवि अपने भावातिरेक से प्रेरित होकर कविता का सृजन करता है। काव्य की सफलता इस बात में है कि उसे पढ़ते ही आँखों के सामने चित्र जैसे घूमने लगते हैं। प्राय: रोमांटिक कविताओं में रूप-बिंब की प्रधानता होती है। कुछ उदाहरण देखें–

1. नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।[15]
2. अपनी अजीब-सी खनक और चमक लिए
गोरी गुलाबी धूप।[16]

5. **स्थिर बिंब**

काव्य में स्थिर बिंब वस्तु के आकार, रूप व रंग को प्रस्तुत कर पाठक की राग-चेतना को उद्‌बुद्ध करते हैं और उसके मन को वस्तु की कल्पना के लिए प्रेरित करते हैं। पाठक की आँखों के सामने वस्तु का चित्र बन जाता है। स्थिर बिंब द्वारा वस्तु, आकृति और अपनी रंग-रेखाओं के साथ पाठक के सामने मूर्त रूप में प्रस्तुत होती है। स्थिर बिंबों के लिए कवि संज्ञापद, विशेषण, अप्रस्तुत योजना, विशेषण विपर्यय आदि विभिन्न प्रकार के उपकरणों की सहायता लेता है–

1. रवि! कमल के नाल पर बैठा हुआ मानो
एक एड़ी पर टिकाए मौन।[17]
2. जो कि सिकुड़ा हुआ बैठा था, वो पत्थर।[18]
3. दोपहर बाद की धूप-छाँह में खड़ी
इंतजार की ठेले गाड़ियाँ।[19]

6. **स्पर्श बिंब**

स्पर्श बिंब के अंतर्गत मन:स्थितियों, शारीरिक संबंधों, क्रिया-व्यापारों, चेतना, संरचण, या अंत:वृत्ति की मांसल अभिव्यक्ति होती है। इसलिए इन्हें आंगिक अथवा जैविक बिंब भी कहते हैं। ये बिंब मातृ-वात्सल्य के परिचायक हैं।

1. जहाँ, उसने अपना सर रखा था
तुम्हारे वक्ष पर
वह स्थान बहुत ही मुकद्दस है।[20]
2. गीली मुलायम लटें, आकाश
साँवलापन रात का गहरा सलोना

स्तनों के बिबिंत उभार लिए।[21]

7. **दृश्य बिंब**

शमशेर की रचनाओं में दृश्य बिंबों की प्रधानता है। प्रकृति चित्रों में मानवीकरण की प्रवृत्ति दृश्य बिंबों को विश्वसनीयता बनाती है। इनमें हवा, साँझ, चाँद, तारे, पर्वत, नदी, घास, धूप आदि के चित्र अकेलेपन को व्यक्त करते हैं। शमशेर कविता में कई दृश्यबिंब स्थिर चित्रों की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं तो कई दृश्य बिंब मन:स्थितियों के परिचायक हैं।

1. धूप कोठरी के आइने में खड़ी
हँस रही है![22]
2. धूप में लिपटा हुआ है आसमान।[23]
3. मैली, हाथ की धुली खादी
सा है आसमान।[24]

शमशेर-कविता में मनोवैज्ञानिक बिंबों की सृष्टि सुबोध सुग्राह्य है। कवि मन में सामान्य मनुष्य की तरह भाव-विचार, धारणाएँ और घटनाओं के बिंब-प्रतिबिंब बनते रहते हैं। मगर जब वह अपनी सृजनात्मक क्षमता से उसे शब्दायित करता है तो बिंबों की रचना होती है। मनोवैज्ञानिक बिंब वाह्य वस्तु, आकार, रूप का प्रतिबिंब होते हैं। इसे मानस बिंब भी कहते हैं।

8. **नाद बिंब**

नाद बिंब की दृष्टि से प्राकृतिक ध्वनियों, वस्तु-ध्वनियों, संगीत-ध्वनियों को सम्मिलित किया जा सकता है। शमशेर बहादुर की कविता में नाद बिंबों का प्रभावशाली प्रयोग हुआ है।

1. मेघ गरजे,
और मोर दूर कई दिशाओं से
बोलने लगे-पीयूअ! पीयूअ![25]
2. हरहरा कर उठ रहा है
नव
जनमहासागर![26]

9. **गति बिंब**

शमशेर को गतिशील बिंबों के चित्रण में अभूतपूर्व हस्तलाघव प्राप्त है। इनके माध्यम से उन्होंने बहिर्जगत की गति के संदर्भ में आन्तरिक जगत की उस गत्वरता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, जिसकी ओर इसके पूर्व बहुत कम रचनाकारों की दृष्टि गई थी। कहीं तो गति-अगति के बीच एक निश्चित बिंदु पर सारे कार्य-व्यापार को केंद्रित करके उन्होंने अद्‌भुत चमत्कार का सृजन किया है। ऊषा और संध्या संबंधी बिंबों के चित्रण में हमने इस पर विचार किया है। शमशेर गति को प्रगति के साथ जोड़ते हैं-

1. सीप-सी रंगीन लहरों के हृदय में डोल[46]
2. अनवरत् बह रही है।[47]
3. तैरती आती बहार[48]
4. सुर्ख फूल ओस में

 ISSN 0975-735X

चुपचाप
लुढ़कते चले जाते[49]
5. वह सागर
सट्ठा जो, उठा, और और और [50]
6. जोकि सिकुड़ा हुआ बैठा था वो पत्थर
सजग-सा होकर सरकने लगा आप से आप[51]
(7) यह रात फिसलन से भरी हुई है। [52]

10. **स्मृति बिंब**

मानव स्वभावतया अतीत प्रेमी होता है। वह अतीत की स्मृतियों को महत्वपूर्ण स्थान देता है। 'अतीत कल्पना का लोक है, एक प्रकार का स्वप्न लोक है: इसमें तो संदेह नहीं।...स्मृतियाँ। हमें केवल सुखपूवर्ण दिनों की झाँकियाँ नहीं समझ पड़तीं। वे हमें लीन करती हैं, हमारा मर्म स्पर्श करती हैं।'[53]

1. कहीं दूर पार से
स्मृतियाँ
बहुत-सी
इकट्ठा हो रही हैं।[54]
2. यह आसमान
चूम रहा है मेरी चौखट
मैं चाँद और सूरज को निकाल
अलमारी में रखे हुए एलबम से[55]
3. आज कहाँ वे गीत जो कल थे
गलियों-गलियों में गाए गए[56]
क्रिया बिंब
4. एक आदमी दो पहाड़ों को कुहनियों से ठेलता
पूरब से पश्चिम को एक कदम से नापता
बढ़ रहा है।[57]
5. चुंबन की मीठी पुचकारियाँ
खिल रही कलियों को फूलों को हँसा रही[58]

11. **आद्य बिंब**

शमशेर के काव्य बिंबों की व्यंजना विशिष्ट है। उन्होंने मानस बिंबों के साथ भावमय वैचारिक और रोमानी विविधवर्णीय बिंबों की उम्दा अभिव्यक्ति की है। इनके अतिरिक्त उनके काव्य में प्राचीन पुराकथाओं (पुराख्यानों) से संबंधित बिंब भी प्रस्तुत हुए हैं। 'आद्य बिंब सामूहिक अचेतन की सृष्टि होते हैं...इनकी प्रकल्पना युग ने की है। ये आदि अनुभूतियों के संस्कार रूप में आज भी मानव जाति के अचेतन मन में विद्यमान हैं, और अनेक प्रकार से अपनी अभ्यिक्ति करते हैं।'[10] आद्य-मिथ की सृष्टि की दृष्टि से उनके काव्य में सूर्य, चाँद, धूप, मछली,

साँप, शिव आदि के बिंब आए हैं। आद्य बिंब कविता को कालजयी बनाने में सहायक होते हैं। उसे विशिष्ट अर्थ-सौन्दर्य सौंपते हैं। शमशेर की 'वाम वाम वाम दिशा' कविता इसका श्रेष्ठ उदाहरण है।

1. एक ऋतुओं में विहँसते सूर्य
काल में (तम घोर)-[59]
2. क्या शिवलोक के बीच कोई
विभाजक दीवार
खड़ी की जा सकती है
सिवाय सच्चाई की उज्ज्वलता के[60]
3. वरुणा के किनारे एक चक्रस्तूप है
शायद वहीं विश्व का केंद्र है[61]
4. इक मौन कमल खिलता है
और नयी लहरियों में लगातार
हँसता है।[62]
5. बिजलियों-सी कौंदली लहरें
मछलियों-सी बिछल पड़ती तड़पती लहरें
बार-बार [63]

12. **अप्रस्तुत बिंब**

अप्रस्तुत बिंब काव्य में कलात्मक सौंदर्य की सृष्टि करते हैं। 'अलंकृत बिंबों का एकमात्र आधार कलात्मक सौंदर्य होता है किसी चमत्कारपूर्ण अथवा दूरान्वयी कल्पना द्वारा इस श्रेणी के बिंबों की सृष्टि होती है।'[64] दरअसल, अलंकृत बिंब वर्ण्य वस्तु- प्रसंग-दृश्यांश को अलंकारों के द्वारा प्रत्यक्ष करते हैं। शमशेर की कविता में भौतिक-प्राकृतिक दोनों तरह के दृश्यों-बिंबों की अभिव्यक्ति हुई है, जिनसे मानसिक विनोद या रस का अनुभव होता है। अलंकृत बिंबों में अप्रस्तुत कवि-कथ्य को अर्थवान बनाते हैं। इसमें अनुभूतियों और अर्थों का भाव सूक्ष्म स्तर पर प्रतिष्ठित होता है। यदि किसी कथ्य-अनुभव का सामान्य वर्णन किया जाए तो वह पाठक को विशेष प्रभावित नहीं कर सकता और न ही उसमें अधिक संप्रेषणीयता होती है। काव्य में अलंकार विधान की विशिष्टता प्रतिपादित की गई है। शमशेर की कविता में अप्रस्तुत विधान की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। उनकी कविताओं की अग्रांकित पंक्तियों में विपर्यय का उपयोग कितना सुंदर हुआ है। 'कविता में बिंब भिन्न-भिन्न कोणों पर रखे गए दर्पण जैसे होते हैं। ज्यों-ज्यों कविता का विषय विकसित होकर आगे बढ़ता है, वह अपने विविध रूपों में इन दर्पणों में प्रतिच्छायित होता है। ये दर्पण जादू के दर्पण हैं, वे केवल विषय-वस्तु को ही नहीं प्रतिच्छायित करते हैं, वे इसे नाम और रूप भी प्रदान करते हैं।'[65]

1. सूर्य मेरी पुतलियों में स्नान करता
केश वन में झिल मिलाकर डूब जाता
स्वप्न-सा निस्तेज गतचेतन कुमार [66]

2. एक नीला दरिया बरस रहा है
और बहुत चौड़ी हवाएँ
मकानात है मैदान
किस कदर ऊबड़-खाबड़
मगर
एक दरिया
और हवाएँ
मेरे सीने में गूँज रही हैं।[67]
3. बादलों के घने नीले केश
चपलतम आभूषणों से भरे
लहरते हैं वायु संग सब ओर।
अल्लमत यदि मैं संस्कृत में
संध्या कर ली तो तू
मुझे दोजख में डालेगा?[68]
4. ईश्वर अगर मैंने अरबी में
प्रार्थना की तू मुझसे
नाराज हो जाएगा।[69]

अप्रस्तुत को प्रस्तुत करने के लिए कवि तुलना, सादृश्य, साम्य, विपर्यय, सान्निध्य, आवेग संकर्षण तथा एकरूपता के संयोग का सामान्यतः उपयोग करता है। छायावादोत्तर कवियों में गिरिजा कुमार माथुर, अज्ञेय, धर्मवीर भारती, मुक्तिबोध, अंचल, सर्वेश्वर, श्रीकांत वर्मा, राजकमल चौधरी, धूमिल आदि की कविताओं में इसका प्रायः प्रयोग हुआ है। शमशेर के काव्य में अप्रस्तुत कहीं-कहीं आकारमूलक रूप में भी प्रस्तुत हुआ है-

1. शिला का खून पीती थी
वह जड़, जोकि पत्थर थी स्वयं।
सीढ़ियाँ थीं बादलों की झूलती
टहनियों-सी,
और वह पक्का चबूतरा, ढाल में चिकना
सुतल था, आत्मा के कल्पतरु का?[70]

जिस प्रकार उन्होंने 'पक्का चबूतरा' को उपरोक्त कविता में आकार प्रदान किया है उसी प्रकार 'सींग और नाखून' कविता में आलंकारिक बिंबों को यूँ रूपायित किया है-

2. सींग और नाखून
लोहे के बख्तर कंधों पर।
सीने में सूराख हड्डी का।
आँखों में घास-काई की नमी।
एक मुर्दा हाथ
पाँव पर टिका

उल्टी कलम थामे।
तीन तसलों में कमर का घाव सड़ चुका है।
जड़ों का भी कड़ा जाल
हो चुका पत्थर।[71]

आकारमूलक अप्रस्तुत विधान की बड़ी प्रभावी प्रस्तुति नागार्जुन, नरेश मेहता, कुमारेंद्र पारसनाथ सिंह, जीवन प्रकाश जोशी, जगूड़ी, रमेश गौड़ की कविताओं में हुई है। इन कवियों ने नए पन की तलाश में परम्परा की जीवन्तता को बिंबायित किया है। उनकी कविता में जन-जीवन समाजधर्मी विविधवर्णीय रूप-रंग के बिंब प्रतीक हैं जो उन्हें समकालीन समवयस्क कवियों से अलग करते हैं। शमशेर ने अप्रस्तुत विधान के अंतर्गत उपमामूलक बिंबों- चाँदनी, सीपी, मोती, शंख, ओंठ, नारंगी, अधर, कुहरा, धूप, छाँव, आदि के प्रयोग से ताजगी पैदा करने का सार्थक प्रयास किया है–

कुसुमों से चरनों का लोच लिए
थिरक रही हैं
भीनी भीनी सुर्गंधियाँ[72]
इसी प्रकार–
और दरिया राग बनते हैं।-कमल
फानूस-रातें मोतियों की डाल-। दिल में
साड़ियों के से नमूने चमन में उड़ते छबीले, वहाँ
गुनगुनाता भी सजीला जिस्म वह–
जागता भी। मौन सोता भी, न जाने
एक दुनिया की। उम्मीद-सा। किस तरह![73]

उक्त बिंबों के अतिरिक्त शमशेर के काव्य में अप्रसृत और उदात्त बिंबों का विधान भी है। अप्रसृत बिंब उक्त सभी बिंबों से अलग प्रतीत होता है। इसमें शब्द-विस्तार या शब्द-बाहुल्य नहीं होता। कुल मिलाकर, शमशेर के काव्य का उत्तरार्ध बिंब-बहुल है। ये कवि की अनुभूति को गहराई और ऊँचाई प्रदान करते हैं। उनके काव्य में जहाँ एक ओर वस्तुपरक यथार्थ बिंब है वहीं दूसरी ओर रोमानी यानी स्वच्छंद बिंबों की प्रकल्पना भी की जा सकती है। उनकी विता में प्रकृति के उपादानों और अनुभूतियों का बड़ा अनूठा तालमेल है। कहीं-कहीं साहचर्य-समन्वय भी व्यक्त हुआ है। कल्पना-शक्ति का सौष्ठव देखते ही बनता है। कलागत उपलब्धि के अर्थ में शमशेर की कविता अपना विशिष्ट मूल्य रखती है। इस दृष्टि से उनके काव्य में वाह्य उद्दीपन (शब्द-स्पर्श-रस और गंध बिंबों) के निर्माण की प्रक्रिया बड़ी सूक्ष्म है। यूँ मूल अनुभूति की अतीतता का ज्ञान उनके बिंबों में होता है।

बिंबों का अस्तित्व मानसिक अर्थ में विशेष होता है। यदि बिंब स्वतन्त्र रूप से काव्य में आते हैं, तो वे उतने प्रभावी नहीं होते जितने होने चाहिए इसलिए इनकी रचना में सर्जक के विगत अनुभवों का अधिक योगदान रहता है।

शमशेर के काव्य में बिंब उसकी रचना तंत्र के संपन्न और भाषा को समृद्ध करते हैं। उनके बिंब जीवंत हैं। उनमें बासीपन नहीं है, ताजगी है। इन बिंबों में उनका सौंदर्य बोध निहित है। जहाँ

बिंबात्मकता नहीं है, वहाँ गद्यात्मकता सी आ गई है। शमशेर के बिंब-विधान की विशेषता है कि उनकी कविताओं में वर्ण्य-विषय और बिंब अनायास एक दूसरे पर आरोपित हैं। कह सकते हैं कि पूर्ववर्ती रचनाओं की अपेक्षा उत्तरवर्ती रचनाओं में (वायवियत के बावजूद) निर्मित बिंब लोकोन्मुखता लिए हैं। भाषा की सार्थक शक्ति- सहयोग पाकर वे पर्याप्त प्रभावशाली और आकर्षक बन गए हैं। उनके बिंबों-प्रतीकों में विविधता, अर्थगर्भिता और प्रयोगधर्मिता है जो उन्हें छायावादोत्तर विशिष्ट रचनाकारों में एक नयी पहचान देती है।

मानव संसाधन विकास मंत्री श्री अर्जुन सिंह के शब्दों में, 'शमशेर बहादुर सिंह आधुनिक भारतीय कविता के निर्माताओं में से एक थे, उन्होंने पूरी अर्धशती हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि में समर्पित की। वे अपनी प्रयोगधर्मिता, विशिष्ट बिंब विधान और गहन मानवीयता के लिए स्मरण किए जाएँगे।'[74]

संदर्भ

1. चिंतामणि, आचार्य रामचंद्र शुक्ल पृ॰ 228
2. सी॰डी॰ लेविस, पोयटिक इमेज, पृ॰ 22
3. हैले, डॉ॰ नगेंद्र द्वारा उद्धृत काव्यात्मक बिंब, पृ॰ 5
4. रेनेवेलेक एण्ड अस्टिन वारेन, थिअरी ऑफ लिटरेचर, पृ॰ 187
5. कविता की तीसरी आँख, प्रभाकर श्रोत्रिय, पृ॰ 30
8. कुछ कविताएँ, पृ॰ 37
10. चुका भी हूँ मैं नहीं, पृ॰ 33
11. कुछ कविताएँ, पृ॰ 38
12. कुछ कविताएँ, पृ॰ 40
15. कुछ और कविताएँ, पृ॰ 154
16. कुछ और कविताएँ, पृ॰ 68
17. कुछ कविताएँ, पृ॰ 36
18. चुका भी हूँ मैं नहीं, पृ॰ 36
19. वही, पृ॰ 57
21. शमशेर प्रति॰ कवि पृ॰ 19
22. काल तुमसे होड़ है मेरी, पृ॰ 51
23. शमशेर की प्रतिनिधि कविताएँ, पृ॰ 102
24. कुछ कविताएँ, पृ॰ 49
25. चुका भी हूँ मैं नहीं, पृ॰ 51
26. कुछ और कविता, पृ॰ 158
27. चुका भी हूँ मैं नहीं, पृ॰ 32
28. वही, पृ॰ 70
29. वही, पृ॰ 85
30. कुछ कविताएँ, पृ॰ 44
31. कुछ और कविताएँ, पृ॰ 128
32. वही, पृ॰ 131

33. काल तुमसे होड़ है मेरी, पृ॰ 64
34. कुछ कविताएँ, पृ॰ 48
35. वही, पृ॰ 21
36. वही, पृ॰ 62
37. कुछ और कविताएँ, पृ॰ 37
38. चुका भी हूँ मैं नहीं, पृ॰ 87
39. कुछ कविताएँ, पृ॰ 32
40. वही, पृ॰ 41
41. कुछ और कविताएँ, पृ॰ 60
42. कुछ कविताएँ, पृ॰ 20
43. वही, पृ॰ 43
44. चुका भी हूँ मै नहीं, पृ॰ 36
45. काल तुमसे होड़ है मेरी, पृ॰ 71
46. कुछ कविताएँ, पृ॰ 35
47. वही, पृ॰ 45
48. वही, पृ०. 62
49. चुका भी हूँ मैं नहीं, पृ॰ 32
50. चुका भी हूँ मैं नहीं, पृ॰ 71
51. कुछ और कविताएँ, पृ॰ 36
52. कुछ और कविताएँ, पृ॰ 142
53. आचार्य शुक्ल, चिंतामणि प्रथम भाग, पृ॰ 153
54. काल तुमसे होड़ है मेरी, पृ॰ 53
55. कुछ और कविताएँ, पृ॰ 153
56. काल तुमसे होड़ है मेरी, पृ॰ 42
57. कुछ कविताएँ, पृ॰ 87
58. कुछ कविताएँ, पृ॰ 62
59. कुछ कविताएँ, पृ॰ 15
60. चुका भी हूँ मैं नहीं, पृ॰ 50
61. वही, पृ॰ 31
62. वही, पृ॰ 107
63. कुछ कविताएँ, पृ॰ 38
64. आधुनिक हिंदी कविता में शिल्प, कैलाश वाजपेयी, पृ॰ 284
65. शमशेर, कवि से बड़े आदमी सं॰ महावीर अग्रवाल, पृ॰ 113
66. चुका भी हूँ मैं नहीं, पृ॰ 24
67. चुका भी हूँ मैं नहीं, पृ॰ 17
68. चुका भी हूँ मैं नहीं, पृ॰ 108
69. चुका भी हूँ मैं नहीं, पृ॰ 87

 ISSN 0975-735X

70. कुछ और कविताएँ, पृ॰ 155
71. कुछ और कविताएँ, पृ॰ 154
72. कुछ कविताएँ, पृ॰ 63
73. कुछ कविताएँ, पृ॰ 65
74. शमशेर: कवि से बड़े आदमी, सं॰ महावीर अग्रवाल, पृ॰ 113

शमशेरबहादुर सिंह की काव्यभाषा में बिंब विधान (हिंदी) साहित्यकुञ्ज। अभिगमन तिथिः ३० जनवरी, २०१५

भोजपुरी लोकगीतों में रामकथा का स्वरूप

डॉ॰ सतीशकुमार श्रीवास्तव
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
मारवाड़ इंटर कॉलेज, गोरखपुर
असिस्टेंट प्रोफेसर

रामकथा अपने रंग-रूप, भाव-भाषा, वेश-विन्यास और आकार प्रकार में विशाल, विविध एवं विलक्षण है। इसमें न केवल किसी देशकाल विशेष की मानवीय संवेदनाओं, कामनाओं तथा अनुभूतियों को उभार कर उसके पारिवारिक एवं सांस्कृतिक जीवन की करुण कथा को उद्धृत किया है, अपितु जीव-जंतुओं के साथ प्रकृति को भी उसका भागीदार बनाया है। राजा से लेकर रंक तक ही नहीं गगनचारी पक्षियों से लेकर पातालवासी प्राणियों तक को प्रभावित किया है। नगर निवासियों से लेकर वन-वासियों तक को आत्मसात् कर लिया है। नर-नारी से लेकर बालवृद्ध तक को भाव विह्वलित कर दिया है। देव-दैत्यों से लेकर सिद्ध-साधकों तक को मंत्र-मुग्ध बना दिया है।

मूक पाषाण से लेकर वाचाल सागर तक को भाव-विभोर कर दिया है। इसकी भाव-प्रवणता ने लोक-मानस को ही नहीं, प्रबुद्ध पंडितों तक को आकर्षित एवं आंदोलित किया है।

हमारे लिए 'रामकथा' भारतीय ग्रहिणी की मर्मव्यवस्था ही नहीं, राष्ट्रकथा भी बन गई है। इस करुण कथा ने न केवल देशकाल का ही सीमोल्लंघन किया है, अपितु लिपि-भाषा भेद संबंधी बाध्यता एवं व्यवधान को भी अस्वीकार कर दिया है। फलतः यह मार्मिक कथा न केवल देश-विदेश तक फैल गई है, अपितु वहाँ के कला, साहित्य और संस्कृति को भी समृद्ध बनाने में इसने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है।[1]

लोक-कवि अब भी रामकथा के लोक-रंजनकारी प्रसंगों द्वारा लोकमानस को उच्छवसित एवं आह्लादित कर नव-जीवन का संचार किया करते हैं। लोकगीतों में उपलब्ध कथा-प्रसंग प्रायः इसी कोटि के हैं। अज्ञात लोक-कवियों ने अपनी मार्मिक उद्भावनाओं द्वारा न केवल रामकथा के स्वरूप को निखारा है, अपितु लोक-मानस में अंतर्निहित उसके प्रभाव को भी संवारा है।

अवध भगवान श्रीराम की जन्मभूमि है, जिसकी धूल में लोट-पोट कर उन्होंने अपने स्वरूप का निर्माण किया है। भोजपुरी प्रदेश उनकी जीवन यात्रा का प्रथम चरण है, वहाँ पहुँचकर रामकथा की भूमिका तैयार हुई है।

लोकगीतों में वर्णित कथाएँ बहुधा कोरे तथ्य 'मिथक' का रूप धारण कर लेती हैं। यही 'रामकथा' के क्रम में भी हुआ है। 'रामकथा' घटना प्रधान होकर भी लोक-भावना के माध्यम से

 ISSN 0975-735X

व्यक्त हुई है। इसी कारण से उसमें एकसूत्रता न होने पर भी क्रमबद्धता पायी जाती है। एक सूत्रतों के अभाव का एक बहुत बड़ा कारण यह है कि यह वाचिक कथा-परंपरा न होकर लोक-कंठ में निवास करती है। यदि ध्यानपूर्वक विचार किया जाय, तो लोक मानस में उसका एक कथा-क्रम रहता है, जिसकी क्रमबद्धता विस्तृत न होने पर आगे चलकर उसमें क्रमबद्धता आ जाती है।

रामजन्म

भोजपुरी लोकगीतों में उपलब्ध रामजन्म-कथा भाग का विभाजन पौराणिक तथा लोक-प्रवाढ़ दो वर्णों में किया जा सकता है। ब्रह्मपुराण[2] मे अंधमुनि के पुत्र-वध श्रवण का वृत्तांत मिला है। जिसके अनुसार अंधमुनि ने राजा दशरथ को पुत्रशोक में मरने का शाप दिया था। भोजपुरी लोकगीतों में भी पुत्र जन्म का पौराणिक कारण प्राप्त है। इन लोकगीतों में पुत्र-शोक शाप के साथ-साथ अयोध्या में रामजन्म होने का भी वर्णन मिलता है।[3] पद्मपुराण[4] में राजा दशरथ श्रृंगी ऋषि द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ कराने का संकल्प करते हैं। परंतु कशत्रिवास रामायण[5] में लोमपाद के यहां से श्रृंगी-ऋषि को अयोध्या ले आकर पुत्रेष्टि यज्ञ करवाते हैं।

यज्ञ से प्रसन्न होकर अग्निदेवता राजा दशरथ को आहुति 'पायस' देते हैं। इसी 'हव्य' के सेवन से तीनों रानियाँ गर्भवती होती हैं।

भोजपुरी लोकगीतों में यह वर्णन मिलता है कि राजा दशरथ भगवान शंकर की तपस्या करते हैं और भगवान शंकर उनहें पुत्र-प्राप्ति होने का वरदान देते हैं।[6]

लोक-मानस में पुत्र-रत्न प्राप्ति का विशेष महत्व है। भारतीय संस्कृति में पितृ-ऋण से 'उऋण' होने के लिए पुत्र का होना जरूरी है तथा वंश-परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए मानव जीवन में संतानोत्पत्ति एक आवश्यक धर्म माना जाता है।

जिस व्यक्ति को पुत्र नहीं है, उसे लोकमानस तिरस्कृत भावना से देखता है तथा पति-पत्नी दोनों को लोग निरवंशी और बांझिनी कहकर ताना मारते हैं। वह स्थिति कितनी हृदय विदारक और कारुणिक हो जाती है, जब लोग उस दंपत्ति का मुँह तक देखना पाप मानने लगते हैं।

भोजपुरी लोकगीतों में रामकथा से संबद्ध एक हृदय को झकझोर देने वाले वर्णन मिलते हैं। उसके अनुसार निम्नवर्ण वाली 'हेलिन' राजा दशरथ को निरवंशी कहकर उनका तिरस्कार करती है और प्रात:काल उनका मुँह देना अशुभ मानती है। कौशिल्या रानी के लिए सोना, राखी और चाँदी मिट्टी अयोध्या के बारहों महल उनके लिए जल गये हैं।

अत: राजा दशरथ पत्नी के साथ गाँठ जोड़कर गंगा में स्नान और पुत्र प्राप्ति के लिए सूर्योपासना करते हैं।[7] भोजपुरी लोकगीतों में एक स्थान पर, राजा दशरथ के निरवंशी होने पर 'लता' का व्यंग्य मिलता है[8]

सोने के खड़ऊवाँ राजा दशरथ,
बेइलि तर ठार भइने।
बेइली पतवा कंचन अस तोर,
त फल काहे निष्फल हो।
और लता राजा दशरथ को दू टूक उत्तर देती है–
राजा तोहरे घरे रनियाँ कोसिला देई,
ओनहीं से पूछा हो।

एक अन्य भोजपुरी लोकगीत में रामजन्म के एक अन्य हेतु का वर्णन किया गया है, जिसके अननुसार कौशिल्या स्वयं कहती हैं कि कौशिल्या एक स्थल गंगा स्नान करके, सूर्य अराधना करने रविवार का व्रत रखने, भूखे ब्राह्मणों को भोजन कराने वस्त्रहीन लोगों को वस्त्र दान देने और तुलसी के पास नित्य दीपक जलाने के फलस्वरूप मैंने श्रीराम को पुत्र रूप में पाया है।'[9]

भोजपुरी लोकगीतों में रामजन्म का एक अन्य कारण रानी कौशिल्या द्वारा 'ओखद' (औषधि)[10] सेवन करना भी माना गया है। एक-दूसरे भोजपुरी लोकगीत में महारानी कौशिल्या के पुत्र प्राप्ति के निमित्त माहर औषधि औषी 'माहर ओखद' (विषय औषधि) का सेवन का भी वर्णन मिलता। इसके अनुसार रानी कौशिल्या बढ़ई को बुलाते हुए उससे कहती है कि मेरे घर के पिछवाड़े माहुर नाम की औषधि है, तुम मुझे उसे लाकर दो, पुत्र प्राप्ति के निमित्त मैं उसका सेवन करूँगी।[11]

धीरे-धीरे समय व्यतीत होने लगता है, अंतत: रानी कौशिल्या का प्रसव काल निकट आ जाता है, वे यह सोंचकर बहुत चिंतित और बेचैन हो जाती हैं कि कहीं ज्येष्ठा मूल[12] (अभूक्त मूल) में ही बालक का जन्म न हो जाय, क्योंकि ज्योतिषाचार्यों के मतानुसार ऐसा माना जाता है कि 'ज्येष्ठा' का फल बुरा होतता है। इसका कारण यह है कि 'ज्येष्ठा' का स्वामी देवराज इंद्र तथा मूल का स्वामी दैत्य होते हैं। इन दोनों के संबंध का काल अशुभ तथा अमंगलकारी होता है, इसके अनुसार देव और दैत्य के बीच शत्रु भाव बना रहता है। इसलिए ज्येष्ठा मूल में उत्पन्न होने वाली संतान हर तरह के विघन बाधाओं के बीच आजीवन संघर्ष करती रहती है। माता की यह बेचैनी अंतर्यामी भगवान श्रीराम से छिपी नहीं रह पाती, वे गर्भ के अंदर से ही आश्वासन भरे शब्दों में बोलते है कि मैं शुभ मुहूर्त में ही जन्म लूँगा।[13]

संग्रहित भोजपुरी लोकगीतों में लोकगीतों में अलौकिक ज्योति से युक्त[14] नवजात शिशु राम शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी विष्णु हैं जो राजा दशरथ के यहाँ पुत्र रूप में जन्म लेते हैं।[15] एक दिन चिर प्रतीक्षित शुभ घड़ी आ ही गई, जिसकी राह देखते-देखते आँखे पथरा गई थीं।[16]

एक अन्य भोजपुरी लोकगीत में गंगा मैया 'श्रीराम' के अवतार के बारे में राजा दशरथ को बताती हैं तथा उनका चरण छूने के लिए आतुर हैं।[17]

संग्रहित भोजपुरी लोकगीतों में कौआ से सगुन विचार का वर्णन मिलता है। प्राचीन काल में पशु-पक्षियों द्वारा सकुन विचार तथा पत्र-व्यवहार किया जाता था। इसमें शकुन विचार के लिए कौआ तथा पत्र-व्यवहार का माध्यम कबूतर हुआ करते थे।

महारानी कौशिल्या के महल के पीछे बेइली की डाली पर कौआ बैठकर 'श्रीराम जन्म' की पूर्वाभास कराता है और कौशिल्या रानी उस कौए की सुंदर वाणी सुनकर, उसके चोंच, पंख में सोना जड़वाने तथा सोने की कटोरा में दूध-भात जेवाने का वचन देती हैं।[18] कितना मार्मिक वातावरण हो जाता है और पुत्र प्राप्ति की बात सुनकर मातृ-ममता छलक उठती है।

संग्रहित भोजपुरी लोकगीतों में श्रीराम त्रेता-युग[19] और चढ़ते चैत[20] में जन्म लेते हैं। एक अन्य भोजपुरी लोकगीत में तिथि[21] और नक्षत्र के साथ-साथ यह भी वर्णन मिलता है कि राजा दशरथ ने राम-जन्म के बाद पंडित से पोथी बचवाई और पंडित ने बताया कि राम शुभ नक्षत्र 'रोहिणी' में जन्म लिए हैं, लेकिन जब राम बारह वर्ष के होंगे, तो वन-गमन करेंगे।[22]

नि:संतान राजा दशरथ और उनकी तीनों रानियाँ पुत्र रत्न पाकर आनंद-विभोर होकर अन्न-धन,

 ISSN 0975-735X

गो-धन, स्वर्ण-धन आदि 'नेवछावर' करती हैं।[23] एक अन्य भोजपुरी लोकगीतों में चारों भाईयों, यथा-राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुध्न का नाम मिलता है।[24]

एक अन्य संग्रहित भोजपुरी लोकगीत में राजा दशरथ पुत्र-रत्न की प्राप्ति की समाचार पाते ही भाव-विभोर होकर, मोहर, अशर्फी और वस्त्र इत्यादि लुटाते हैं, इसी प्रकार उनकी तीनों रानियाँ, अन्न, सोना और पुखराज लुटाती हैं। एक पुरानी कहावत है कि 'पत्थर पर दूब जमना' तो निरबंशी राजा को तो कठिन तपस्या के पश्चात् 'पुत्र-रत्न' की प्राप्ति हुई थी, भला हीरे और जवाहरात लुटाने से मन कैसे अघाता? जितना लुटाया जाय, वह राजा के लिए थोड़ा ही था।

राजा दशरथ को लता का व्यंग्य भूला न था। उन्होंने उसे कटा देने का प्रस्ताव किया, किंतु कौशिल्या रानी तो माँ बन चुकी थीं। उन्होंने राजा से कहा–

मोरे राजा दुधवन बेइली सिंचइबइ त,
जे न मोहे बुधि देयेउ हो।

पुरुष की कठोरता को यदि नारी की क्षमा की छाँह न मिले, तो वह रसातल को चला जाय। राजा दशरथ ने पंडित से पोथी बचावई और पंडित ने कहा–

बहुत सुघरी राम जनमें त, रोहिनी नखत में।
राजा बारहे बरिस के होइहें, त वनन के सिधरिहें।

रानी कौशिल्या तो पुत्र जन्म की प्रसन्नता में, हीरे, मोती लुटा रही थीं। राजा ने राम के वन-गमन का अप्रिय समाचार सुनाया, इस पर रानी कौशिल्या दो टूक उत्तर देती हैं–

राजा छुवल बझिनियाँ के नाँव,
भलेही राम वन जइहें।

एक अन्य भोजपुरी लोकगीत में राम के वन-गमन का वर्णन मिलता है। इस लोकगीत के अनुसार–बालक 'राम' के जन्म लेने के पश्चात् पूरे अवध में हर्षोल्लास का वातावरण छाया हुआ है।

सभी प्रसन्न हैं, बालक 'राम' के रूप-सौंदर्य की वर्णन जितना किया जाय, वह कम ही है। वह अद्‌भुत सौंदर्य के लिए हुए हैं। उस बालक को देखने के लिए माताएँ (सुमित्रा, कौशिल्या, कैकेयी) सुंदर पालकी पर चढ़कर आती हैं और राजा दशरथ लाल घोड़ा पर चढ़कर आते हैं।

आँगन को चेरी साफ करती है और पीला वस्त्र बिछाती है। बालक राम की माता रानी कौशिल्या अपने गोतिनी (रानी सुमित्रा और कैकेयी) से बैठने का अनुरोध करती है। माताएँ राम को देखने के लिए लालायित हो उठती हैं, रानी कौशिल्या कहती हैं कि अभी तो मेरा बेटा राम कुछ दिन का ही हुआ है, जब बारह दिन का हो जायेगा, तब आँगन में निकालूँगी।

ऐसा लोक-विश्वास है कि 'नवजात शिशु' को बारह दिन (बरही) पर ही आँगन में निकालना चाहिए। बालक राम को न देख पाने पर माताओं (सुमित्रा और कैकेयी) को कष्ट होता है, वे कहती हैं कि जब राम बारह वर्ष के होंगे, तो वन को चले जाएँगे।

संदर्भ

1. मराली, डॉ॰ किरन, अवधी और भोजपुरी लोकगीतों में रामकाव्य भूमिका से।
2. ब्रह्मपुराण, अध्याय-23
3. हे दशरथ जीवन सोगवा हमके सुनावला,

तवन सोगवा तोहके परोजी।
तोहरा जे रामा जमि है,
अजोधा मा सोर हो हयं।, उपाध्याय, डॉ॰ कृष्णदेव, 'भो॰लो॰, सं॰ 1/24-25

4. पद्म पुराण, गौड़ीय पाताल खंड, अध्याय-14
5. कृत्तिवास रामायण, अध्याय-39
6. सिव जी हमरे संततिया के साथ,
संततिया हमें चाहिं ल रे।
जाइ ए राजा जाइ लवटि घरवा चलि जाइ हो।
राजा आजू कय ननव महिनवाँ,
संततितया तोहे होय हो। लोक प्रचलित परंपरा
7. गाँठी ही जोरी नहइली, सूरुज माथे लागेली
सूरुज जतिया के पातर हेलिन, हेलिनियाँ कहेले निरबंसिया, आठ महीना , नव लागत, होरिला जनम लिहले। भोजपुरी लोकगीत सं॰ 2/17 से 19
8. तिवारी, डॉ॰ हीरालाल, 'गंगाघाटी के गीत', भाग-1, पृ॰ 186-187
9. 'गंगा पिछुववाराया बढ़इया भइया,
बेगे चलि आवसु हो।
ए भइया जरि से नना काटहु ओखदवा,
बेगे से लावहु हो।
ओर रगरि-रगरि जरिया पिसलो,
कोसिला रानी पीयुसु हो। 'भा॰लो॰ सं॰ 5/4-5
10. हमरे पिछुवरवा बढ़इया भइया, बेगे चलि आवा रे।
भइया बन बढ़े लावना महूरवा, कोसिला जी का ओखद हो। 'भो॰लो॰, सं॰ 4/11/12
11. 'अश्विनीमय भूलानां तिस्त्रोगण्डाध नाडिकः।
अन्त्या पौष्णीगेंद्राणां पाश्चैव यवना जगुः।।
मूलेंद्रयोद्रिदवा गंडो निशाचपितश सर्पयोः।
सान्ध्यसाराजि दिवाभागे गण्डयोगोद्रमः शिशुः।
आत्मानं मातरं तातं विनिहन्ति यथाक्रमम्।
सर्वेषां गंड जातानां परित्यागो विधीयते।
तातेनादर्शनंवापि यावत् शाण्मासिको भवेत्।।
ज्योतिष तत्वम् श्लोक, 39-41
12. मराली, डॉ॰ किरन, 'अवधी और भोजपुरी लोकगीतों में रामकाव्य'।
13. 'अवध में रामजी जनमलें, जनमि भुइया लोटले।
रे उनकी हथवा में दुई दुई लाल, त लिलार में मानिक जड़ल हो।' भो॰लो॰, सं॰ 9/11-2
14. जनमेले रघुकुल नन्दन निकंदन हो।
ललना शंख, चक्र, गदा, पद्म हाथ, जग में मुनिरंजन हो।
धनि हो कोसिला तोहार गोद, खेलवो जगवंदन हो।।' भो॰लो॰, सं॰ 8/3-5
15. तिवारी, डॉ॰ हीरालाल, 'गंगा घाटी के गीत', पृ॰ 186-187

 ISSN 0975-735X

16. कहवां से गंगा उतरेली, कहवां से पसरेली हो
आरे केकरी दुअरिया भइली ठाड़, लहरिया लेई दउरेली हो।
शिव जी के जटा से गंगा उतरेली, धरती पर पसरेली हो।
आरे दशरथ दुअरिया भइली ठाढ़, लहरिया लेई दउरेली हो।
लोक-प्रचलित परंपरा
17. मोरे पिछुअरवां बेइलिया, बेइलिया डरिया पसरेले हो।
आरे ताहि पर बइठेला कगवा, त बोलिया सोहावन हो।
घर में से निकलेली कोसिला रानी, त कगवा से बात करे।
लोक-प्रचलित परंपरा
18. त्रेता युग नगर अजोधा में, राम अवतारेले हो।। भो॰लो॰, सं॰ 8/1
19. आहो रामा चढ़ते चइतवा, राम जनमने हो राम, भो॰लो॰, सं॰ 10/1
20. तिवारी, डॉ॰ हीरालाल, 'गंगा घाटी के गीत', पृ॰ 186-187
21. वही।
22. मिलहू न सखिया सलेहरि, मिलि जुलि आवहु हो।
जहाँ राजा के जनमे हैं राम, करिय नैछावर हो।
केहू नाचै बाजूबंद, केउ नावै कजरावट हो, केउ नाचे कजरावट हो।
लोक-प्रचलित परंपरा।
23. कोसिला के भइले राजा रामचंदर,
सुमित्रा के लछुमन हो।
कैकइया के भइले भरत-भुवाल, तीनों घर मंगल बाजेला हो। भो॰लो॰, सं॰ 5/11-12
24. पावै राजा दशरथ खबरिया त, मोहर, बसनवा लुटावैले हो।
ललना मुठिया में लेई असरफिया, बसनवा लुटावेले हो।।
कोसिला लुटावेली अनधन, सोनधन हो, सुमितरा कैकेयी हीरवा नू हो। भो॰लो॰, सं॰ 8/11 से 14

जातीय व वर्गीय चेतना एवं समाजवादी पार्टी

डॉ॰ शशिकांत मणि त्रिपाठी
प्राचार्य
पी॰डी॰आर॰ पी॰जी॰ कॉलेज, तिलौरा
सहजनवाँ, गोरखपुर, प्रोफेसर

भारत की सामाजिक व्यवस्था में जाति की भूमिका महत्त्वपूर्ण होने के साथ ही निर्णायक भी रही है। आज भी समाज में व्यक्ति की प्रतिष्ठा और उसका स्थान काफी सीमा तक उसकी जाति पर निर्भर करता है। जाति पर आधारित समाज-विभाजन मूलत: वर्ण-व्यवस्था का ही विकृति रूप हैं। वर्ग व्यवस्था की जड़ें अतीत के अंधकार में ही छिपी हुई हैं। अधिकांश विचारक इस विषय पर एकमत नहीं हैं कि, जाति-भेद की अनूठी प्रथा का आरंभ और विकास कैसे हुआ। वैदिक काल में वर्ण-व्यवस्था के प्रवर्ग अंदर से खुले थे और व्यक्ति की साममाजिक स्थिति जन्म निर्धारित नहीं थी। जन्मजात जाति प्रथा का आरंभ वैदिकोत्तर काल में माना जाता है। इन वर्गों में से प्रत्येक का विशेष सामाजिक कृत्य, संस्कृति और जीवन शैली का अपना अलग स्तर था। ऋषि-मुनियों ने वर्ण-व्यवस्था को सनातन और शाश्वत की संज्ञा दी और धीरे-धीरे लोगों में यह विश्वास ैल गया कि जाति प्रथा ईश्वर प्रदत्त व्यवस्था है।

कालान्तर में भारतीय समाज इन्हीं वर्णों के कारण हजारों जातियों और उप जातियों में बँट गया। यहाँ तक कि जब 1957 में जब भारत सरकार ने अनुसूचित जातियों की प्रथम सरकारी सूची प्रकाशित की, तो उसमें ऐसी ग्यारह सौ जातियों का उल्लेख था।[1] पिछड़ी जातियों पर नियुक्त अर्वाचीन मंडल आयोग ने तीन हजार सात सौ सैंतालीस जातियों में ही आंकलित किया।[2] जाति की कठोरता और जटिलता में भी उत्तरोत्तर वृद्धि हुई, जिसके कारण यह सामाजिक भेद-भाव के साथ-साथ आर्थिक विषमता का आधार बन गई। जाति प्रथा ने भारतीय समाज को प्रगति से विमुख कर दिया और यह सामाजिक विषमता, सामाजिक ह्रास, जातिगत राजनीति के विघटन और विनाश का कारण बन गई।

आजादी के पश्चात् अतीत से विरासत में मिली जातीय वर्गीय और सामाजिक असमानताओं ने भारतीय राजनीति को सशक्त रूप से प्रभावित किया है। भारतीय राजनीति में जाति एक बहुत बड़ा तथ्य है, जो शक्ति के ढाँचे को नियंत्रित करता है और राजनीतिक अभिजनों की भर्ती में यही प्रमुख निर्णायक कारण हैं। भारत में राजनीतिक आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के प्रारंभ होने के पश्चात् यह धारणा विकसित हुई कि पश्चिमी ढंग की राजनीतिक संस्थाओं और लोकतांत्रिक मूल्यों को अपनाने के फलस्वरूप जातिवाद जैसी पारंपरिक संस्था का अंत हो जाएगा, परंतु

 ISSN 0975-735X

स्वाधीन भारत की राजनीति में जाति का प्रभाव अनवरत् रूप से बढ़ता रहा। जहाँ सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में जाति के बंधन ढीले हुए, वहीं राजनीतिज्ञों एवं प्रशासनिक अधिकारियों की कृपा से राजनीति और प्रशासन में इनका महत्त्व अधिक बढ़ गया है। प्रमुख राजनीतिक विचारक मायनर वीनर ने लिखा है, 'अनेक मामलों में दल जाति का पर्याय बन गया है और दल का प्रत्येक सदस्य इसी बात का इच्छुक है कि दल ऐसी इकाई बनी रहे, जिसमें कोई अपरिचित या बाहर का व्यक्ति न हो।[3]

समाज सुधार आंदोलन, शहरीकरण और सुधरी हुई संचार व्यवस्था ने जाति प्रथा को तोड़ने के बजाय उसे और बढ़ाया है, क्योंकि विकास के कारण जातियों में अधिक कारगर ठोस और दृढ़ संगठन बने जिससे जाति एक संगठित संस्था के रूप में उदित हुई और राजनीति में अपने को एक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया। मोरिस जोन्स ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि, 'हर प्रकार की राजनीति में जाति एक ऐसी ताकत बन गई है कि इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है। चुनाव लड़ने के लिए नामजद किए गए किसी दल के उम्मीदवार की सूची के पीछे एक आंतरिक कथा होती है, अर्थात् इस बात का बड़ी बारीकी से अध्ययन व विचार किया जाता है कि कौन उम्मीदवार किस जाति का वोट प्राप्त कर सकेगा।[4] इस प्रकार मायनर वीनर और मॉरिस जोन्स ने जातियों की प्रबलता को भारतीय राजनीति में स्वीकार किया है, परंतु इस तथ्य की ओर दोनों ने ही ध्यान नहीं दिया कि कौन-सी जातियाँ राजनीतिक सत्ता और रूतबा प्राप्त करने में अधिक सफल रही हैं।

भारत की वर्तमान सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति एक संक्रमणकालीन जटिलताओं की अभिव्यक्ति है। इन जटिलताओं में एक जटिलता भारत के राजनैतिक क्षितीज पर एक प्रबल सामाजिक, राजनैतिक शक्ति के रूप में पिछड़े हुए वर्गों का अभ्युदय है।

04 नवंबर, 1992 को जब मुलायम सिंह ने समाजवादी पार्टी का गठन किया, तो उस समय भारतीय राजनीति संक्रमणकालीन दौर से गुजर रही थी। काँग्रेस नरसिंहाराव के नेतश्त्व में अपने पतन की तरु अग्रसर थी। उत्तर प्रदेश में उसकी स्थिति और बिगड़ी हुई थी। तात्कालिक परिस्थितियों में भारतीय राजनीति में संप्रदायवाद तथा जातिवाद अपने चरमोत्कर्ष पर था, क्योंकि एक तरफ राममंदिर विवाद तथा दूसरी तरफ मंडल कमीशन के कारण जातिवाद तथा संप्रदायवाद का बड़ी तेजी से विकास हो रहा था। इन्हीं सारी परिस्थितियों तथा केंद्रीय नेतृत्व के अभाव के कारण ही जातिवाद तथा संप्रदायवाद के आधार पर क्षेत्रीय दलों का गठन होना शुरू हुआ। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी तथा बहुजन समाज पार्टी इन्हीं तात्कालिक परिस्थितियों की उपज हैं, इसके साथ ही भाजपा के आधार पर अपने को भारतीय राजनीति में स्थापित करने का प्रयास कर रही थी। राम मंदिर विवाद के कारण अल्पसंख्यक मुस्लिम अपने को नेतृत्वविहीन पा रहे थे, उनका नेतृत्व करने वाला कोई दिखाई नहीं दे रहा था। लेकिन जब मुलायम सिंह यादव ने अयोध्या में विवादित ढाँचे को सुरक्षित रखा, तो मुस्लिम जनता, मुलायम सिंह यादव के साथ हो गयी, दूसरी तरफ पिछड़ी जातियाँ मंडल कमीशन लागू होने के बाद जनता दल के साथ हो गईं। स्वर्ण हिंदू, राममंदिर विवाद के कारण भाजपा के साथ तथा दलित वर्ग बसपा के साथ हो गए थे। लेकिन जनता दल के विघटन के बाद विशेषकर उत्तर प्रदेश में पिछड़ी जातियों का सबल नेतश्त्व करने वाला कोई व्यक्ति नहीं मिल रहा था। मुलायम सिंह यादव ने यह देखा कि प्रदेश के 45

प्रतिशत पिछड़ा तथा 15 प्रतिशत अल्पसंख्यक हैं। अत: यह दोनों मिलकर 60 प्रतिशत होंगे। अत: दूसरी ताकत बनकर उभरकर आने का उन्हें पूरा विश्वास था। इसी जातीय समीकरण के आधार पर वे नई पार्टी का गठन किये।

1993 में विधानसभा चुनाव को देखते हुए समाजवादी पार्टी ने पिछड़ी जातियों और अल्पसंख्यकों के लिए अपने चुनाव-घोषणा-पत्र में भी यह व्यवस्था दी कि, ह्समाजवादी पार्टी दलितों, पिछड़ों, सभी वर्गो की महिलाओं और अल्पसंख्यकों को बराबरी पर लाने के लिए संसद, विधान सभाओं तथा पंचायत राज संस्थाओं में 70 प्रतिशत आरक्षण दिए जाने की नीति घोषित करती है। भलाईदार परत को अस्वीकार करते हुए मंडल कमीशन को ज्यों का त्यों लागू करने की घोषणा करती है।[5]

समाजवादी पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में भी यह प्रस्ताव पारित किया गया कि, 'समाजवादी पार्टी औरतों, दलितों, अल्पसंख्यकों और पिछड़ों को विशेष अवसर उपलब्ध कराने की पक्षधर है, इसके लिए जब तक जातिगत, विद्या, बुद्धि, संस्कार की भिन्नता मिट नहीं जाती, तब तक इन वर्गों को विशेष अवसर के सिद्धांत के अनुकूल 60 से 70 प्रतिशत नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा मंडल आयोग की सिफारिशों को वैद्य ठहराने का समिति स्वागत करती है और इसे समाजवादियों की जीत मानती है।[6]

समाजवादी पार्टी, पिछड़े वर्गों को आरक्षण की सुविधा देने की पक्षधर थी। पार्टी का मानना था कि देश का समाजवादी आन्दोलन लम्बे समय से पिछड़े वर्ग को सामाजिक न्याय दिलाने का नारा लगाता रहा कि, 'सोशलिस्टों ने बाँधी गाँठ, पिछड़े पावें सौ में साठ।' यह व्यवस्था मंडल कमीशन के रूप में आयी। परंतु इसमें जो 'क्रीमीलेयर' की बात थी, तो समाजवादी पार्टी उसका विरोध की, क्योंकि पार्टी का मानना था कि, 'कानूनी दाँवपेंच में मलाईदार परत' के नाम पर समाज के दलित, पिछड़े एवं किसान वर्ग को दिग्भ्रमित किया जा रहा है और उसका हक छीना जा रहा है, उन्हें आपस में लड़ाने की साजिश की जा रही है। समाजवादी पार्टी क्रीमिलेयर की अवधारणा को अस्वीकार करती है और मंडल कमीशन की रिपोर्ट को ज्यों का त्यों लागू करेगी। चाहे इसके लिए सर्वोच्च न्यायालय में पुनर्विचार याचिका दायर करना पड़े या संविधान में संशोधन करना पड़े।'[7]

सन् 1993 के विधान सभा चुनाव में मुलायम सिंह यादव ने सर्वाधिक 47 प्रतिशत स्थानों पर टिक पिछड़े वर्गों को दिए। उत्तर प्रदेश में मुस्लिमों के रहनुमा होने के कारण प्रदेश में उनकी 14 प्रतिशत संख्या को देखते हुए मुसलमानों को 14 प्रतिशत स्थान पर टिकट दिए। इसके साथ-ही-साथ प्रदेश में 47 प्रतिशत पिछड़ों के होने के कारण 40 स्थानों पर यादवों को पार्टी का उम्मीदवार बनाया।

सत्ता में आने के बाद समाजवादी पार्टी की सरकार द्वारा पिछड़े वर्गों तथा अनुसूचित जातियों को लोकसभा में आरक्षण देने के 11 दिसंबर, 1993 को उत्तर प्रदेश लोकसेवा संशोधन अध्यादेश 1993 को प्रख्यापित किया गया। इसके साथ ही साथ मुलायम सिंह ने मुसलमानों के हितों के लिए भी कई तरह के कार्य किए। सन् 1992 के बाद ज्यादातर मुसलमान मुलायम सिंह यादव के साथ थे। मुलायम सिंह ने सरकार बनाने के बाद मुस्लिम वकफ संशोधन अधिनियम 1994 के अंतर्गत उत्तर प्रदेश मुस्लिम वकफ अधिनियम-1960 की धारा-144 की उपधारा-2 राज्य

 ISSN 0975-735X

सरकार को यथास्थिति बोर्ड के कृत्यों का निर्वहन तथा कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए सशक्त करती थी, में संशोधन किया गया। इसके साथ-ही-साथ उत्तर प्रदेश अध्यादेश संख्या-13 सन् 1994 के अंतर्गत एक अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना का भी आदेश जारी किया गया। जो भारत सरकार अधिनियम नेशनल कमीशन फार माईनार्टिज एक्ट 1992 के तर्ज पर एक विधि स्थापित किया गया।

मुलायम सिंह यादव ने पिछड़े वर्गों तथा मुसलमानों के हितों के लिए कई तरह के कार्य किए। लोहिया के विचारों का अनुसरण करते हुए श्री यादव ने लोहिया को विशेष अवसर के सिद्धांत को लागू करते हुए समतामूलक समाज की स्थापना का प्रयास किया। लेकिन मुलायम सिंह यादव के ऊपर पिछड़े वर्गों के नेता तथा पिछड़ी जातियों की राजनीति का जो लेबल लगा हुआ था, उससे वे उबरना चाह रहे थे, क्योंकि वे अब प्रदेश की राजनीति से निकल कर केंद्र की राजनीति में अपनी भूमिका निभाने का प्रयास कर रहे थे, इसके लिए वे पिछड़े वर्गों तथा अल्पसंख्यकों के वोट बैंक से परे जाने की कोशिश कर रहे थे। 1995 में सरकार गिरने के बाद मुलायम सिंह यादव की सोच में कुछ परिवर्तन आया जिसके परिणाम स्वरूप उन्होंने कई जगह ऐसे विचार व्यक्त किए, जिससे यह स्पष्ट होता था कि राजनीति में जाति के पक्षधर तो थे, लेकिन वह भी एक सीमा तक रखने से सम्बन्धित मान्यताओं को सामने लाते थे। सन् 1996 के विधान सभा चुनावों में 'उनके हिस्से में आयी 282 टिकटों में से 60 सवर्णों को भी टिकट दिए। यह एक नये किस्म की समस्वरवादी राजनीति थी। जिसके जरिए वे प्रदेश के दायरे से निकल कर केंद्र की तरफ बढ़ने की कोशिश कर रहे थे।[8]

मुलायम सिंह यादव राजनीति से परे हटकर सवर्णों को अपनी सांगठनिक पदों पर लाने का प्रयास करने लगे। आमतौर पर उनकी आलोचना करनेवाले कई पत्रकारों ने भी इस परिवर्तन को लक्ष्य किया कि सपा में यादवों की जगह गैर-यादवों और कई मामलों में सवर्णों की संख्या बढ़ती चली जा रही है।'[9]

मुजफ्फरनगर में पिछड़े वर्गों की एक सभा में अपनी जातिवादी व्यवस्था पर दृष्टि डालते हुए श्री यादव ने कहा था कि, 'बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री स्व॰ श्री कर्पूरी ठाकुर व स्व॰ चौधी चरणसिंह का नाम लेकर उन्होंने कहा कि श्री ठाकुर नाई थे, बिहार में उनकी जाति कितनी रही होगी, लेकिन वे वहाँ के बड़े नेताओं में एक थे और दो बार मुख्यमंत्री बने। इसी प्रकार चौधरी चरणसिंह पहले मुख्यमंत्री और बाद में प्रधानमंत्री भी बने। यह कोई उनकी जाति के ताकत के बल पर नहीं हुआ था। उन्होंने महात्मा गाँधी का नाम लेकर कहा कि श्री गाँधी अपने कुशल नेतृत्व तथा सिद्धांत निष्ठा की ताकत पर देश को आजाद कराया। बाबू राजेंद्र प्रसाद देश के राष्ट्रपति अपनी जाति के बलबूते पर नहीं बने थे, जयप्रकाश नारायण भी कौन-सी जाति के ताकत पर देश के नेता बने। उन्होंने इसी क्रम में डॉ॰ लोहिया व राजनारायण वगैरह का नाम लिया।[10]

इस प्रकार समाजवादी पार्टी कके गठन के बाद से लेकर सत्ता में आने तक मुलायम सिंह यादव पर जातिवादी राजनीति का आरोप लगाया जाता रहा है। सत्ता में आने के बाद वे पिछड़े वर्गों के हितों के लिए कई तरह की घोषणाएँ की। मुलायम सिंह यादव ने भी लोहिया की तरह पिछड़े वर्गों को हमेशा आगे लाने की बात किया करते थे। सत्ता में आने के बाद लोहिया की नीतियों को लागू करने का प्रयास किए। लेकिन अगर देखा जाय, तो मुलायम सिंह यादव की पिछड़े वर्गों की

राजनीति एक विशेष जाति तक ही सीमित थी। जातिवादी राजनीति भारतीय राजनीति में स्वतंत्रता के बाद से ही शुरू हो गई थी, लेकिन इसका ज्यादातर प्रयोग 1967 के आम चुनाव में दिखाई दिया। उसके बाद भारतीय राजनीति से जाति ग्रसित होती चली गयी। इसका स्पष्ट प्रमाण जनता दल सरकार के गठन के बाद भारतीय राजनीति में विशेष रूप से देखने को मिला। 90 के दशक में सभी राजनीतिक दलों ने जातिवादी राजनीति की शुरूआत कर दी, जिसमें लगभग सभी जातियों का अपना दल तथा नेता हो गए और और ये अपनी जाति के लोगों को अपनी तरु आकर्षित करने का प्रयास करने लगे। मुलायम सिंह यादव ने भी पिछड़े वर्गों की राजनीति शुरू की, जिसमें ज्यादातर पिछड़े वर्ग के लोग उनके साथ थे। इसी बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने नए दल का गठन किया। सन् 1993 के विधान सभा चुनाव में मुलायम सिंह ने बहुजन समाज पार्टी के साथ समझौता किया, जिसको दलित वर्गों का समर्थन प्राप्त था। इस समझौते के आधार पर वे प्रदेश में सत्ता के सर्वोच्च पद पर पहुँचे। जून, 1995 में बहुजन समाज पार्टी द्वारा मुलायम सिंह यादव सरकार से समर्थन वापस लेने के बाद समाजवादी पार्टी की सरकार का पतन हो गया। इसके बाद मुलायम सिंह यादव ने अपनी नीतियों में परिवर्तन किए, क्योंकि उनको लगा कि यदि सर्वण वोट भाजपा के पाले में छोड़ दिया जायेगा, तो उत्तर प्रदेश में उन्हें ज्यादा सफलता नहीं मिल सकती। अतः उन्होंने सवर्णों को अपनी तरु आकर्षित करने का प्रयास करने लगे। सम्मेलनों, जनसभाओं में वे जातिवादी राजनीति से परे हटकर सभी वर्गों के हितों की बात को उठाने लगे। मुलायम सिंह यादव का मूल उद्देश्य समाजवादी पार्टी को भविष्य में एक मजबूत दल के रूप में स्थापित करना था।

संदर्भ

1. ईशाक, एच॰आर॰, इंडिया अनटचेवल्स न्यूयार्क 1965 पृ॰ 29
2. मंडल आयोग रिपोर्ट, पिछड़ा वर्ग आयोग पर मंडल आयोग की रिपोर्ट, पृ॰ 302, 354
3. मायनर वीनर पार्टी, पॉलिटिक्स इन इंडिया, नई दिल्ली, पृ॰ 73-74
4. जोन्स, मोरिस, 'भारतीय शासन एवं राजनीति', 1977, पृ॰ 58
5. समाजवादी पार्टी का चुनावी घोषणा-पत्र, 1993
6. समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के प्रस्ताव, 4-5 दिसंबर, 1992, नई दिल्ली।
7. समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के प्रस्ताव, 06 मई, 1993, भोपाल।
8. दूबे, अभयकुमार मुलायम सिंह एक आलोचनात्मक अध्ययन, नई दिल्ली, 1997, पृ॰ 49
9. वही
10. जनसत्ता, 6 जून, 1997

 ISSN 0975-735X

शोषक व्यवस्था के खिलाफ आदिवासियों की बुलंद आवाज : ऑपरेशन जोनाकी

डॉ॰ संजय गडपायले

वर्तमान में प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढ़ानेवाला कोई कथाकार है तो वह संजीव ही है। संजीव के अधिकतर कहानी-संग्रह और उपन्यासों में आदिवासियों के जीवन का संत्रास है। यह कहना अनुचीत नही होगा कि आदिवासी विमर्ष की अभिव्यक्ति उनके कथासाहित्य मे हुई है। गाँव के मनुवादी सामंती मूल्य और उसके आतंक से संघर्ष करते आदिवासी, जाति संघर्ष, कोयला खदानो का संघर्ष, नक्सलवाद से प्रभावित राजनैतिक जूझारुपण आदि उनके कथा साहित्य के विषय रहे है। रमणिका गुप्ता ने आदिवासियों की वास्तविकता को स्पष्ट करते हुए कहा है कि 'वे विस्थापित हो रहे है पलायन कर रहे है, जड़ो से कट रहे हैं उन की भाषाएँ खत्म हो रही है, संस्कृति खत्म हो रही है।'[1] संजीव का कथा साहित्य इस बात को ही उदघाटीत करता है। संजीव यह जानते है कि वर्तमान में आम आदमी साम्राज्यवाद और बाजारवाद से अनछुआ नही है और उसके दुष्परिणाम व्यक्ति भोग रहा है। संजीव शोषितों के हितैषि और शोषकों के विरोधी है वे एकस्थान पर स्पष्ट कहते है कि 'विज्ञान और टेक्नॉलॉजी, संसाधन, उत्पादन और वितरण पूरी तरह अमेरिकी साम्राज्यवाद और बाजारवाद के शिकंजे मे हैं और राजनिति, धर्म, कला और संस्कृति भी उसकी दाढ़ी से समाती जा रही है। इसलिए आज जनधर्मी साहित्य की चुनौतियाँ कठिन है और बहुआयामी भी। इस मायावी दैत्य को जनधर्मी आंदोलन ही तोड़ सकता है।'[2]

संजीव की कहानियों मे और उपन्यासों में समकालीन यथार्थ के खौफनाक चित्र दिखाई देते है जो सही मायने वास्तविकताओं को बया करते है। सामंती मूल्यों की विद्रुपताओं को परत-दर-परत उघाड़ती उनकी कहानियाँ नक्सलबाडी आंदोलन की विचारधारा और समाज के लहू-लुहान यथार्थ जुड़ी है। सरकार, साहुकार और जमींदारों के अत्याचारों के विरुद्ध आगाज है नक्सलवाद। और इसी आवाज ने हिंदी कहानी को एक नया स्वर देकर उसकी दिशा मोड़ दी। बेचैन कथाकार संजीव की अनेक कहानियों में यही चित्र अधिकतर रूप में दिखाई देते है। यह मानना पडेगा कि संजीव की कहानियों मे आरंभ से लेकर आज तक समाज मे व्याप्त गतिरोध को तोड़ने का सर्वकष प्रयत्न है और इसी कारण आलोचकों ने उन्हे बेचैन कथाकार कहा है।

संजीव ने आदिवासी समुदाय के जीवन यथार्थ, उनके रीतिरिवाज, जीवन संघर्ष को अपनी कथाओं में प्रस्तुत किया है। ऑपरेशन जोनाकी कहानी नक्सलवादी आंदोलन से जुड़ी कहानी है जिसमे नक्सलवादियों की वास्तविकता को उद्घाटीत कर शासन के उनके प्रति रवैये को भी चित्रित किया गया है। इस कहानी मे संजीव ने षड्यंत्र रचनेवाली पुलिस यंत्रना और भ्रष्ट

राजनैतिक दावपेंच का भांडाफोड़ किया है। इस कहानी मे मानवीय संवेदनाओ से जुडे अनिमेष दा एक ईमानदार सरकारी अफसर है जो अपनी ईमानदारी और कादारी के कारणअनेक बार सस्पेंड हुए और उनके तबादले भी होते रहे। अनिमेश दा को जोना की ऑपरेशन की जिम्मेदारी सौंपकर प्रषासन ने उनके साथ धोका किया था।

कहानी में मजूमदार नामक पात्र है। वे काँग्रेस की विचारधारा के है जो स्वभाव से अत्यंत सिधे-साधे ईमानदार व्यक्ति है। अनिमेश दा के घर के पास ही उनका घर है पर एक दिन उनकी हत्या हो जाती है जिस से खुद अमिनेष दा परेशान हो जाते है अनिमेश दा ही इस मर्डर केस की तहकिकात करते है पर कुछ ठोस सबुत न मिलने पर उनकी कार्यपद्धति पर को दोष दिया जाता है। एक दिन मंत्रीजी अनिमेश दा को इस विषय मे बातचित करने के लिए बुलाते है। तब वे अपने बेटे सौरभ के साथ वहाँ पहुँच जाते है। पहुँचने वर सौरभ देखता है कि मंत्रीजी के साथ दो व्यक्ति चाय पीते हुए बातें कर रहे है। सौरभ उन दोनों व्यक्तियों को पहचान लेता है क्यों सौरभ चश्मदीत गवाह था। उसने तुरंत उनके सामने अपने पिता से कहा कि 'बाबा, एराई मजूमदार काकू के छूरी मेरे छोलो'[3] यह सुनकर सभी गंभीर हो गए। अमिनेष दा ने खूनियों को पहचान लिया था पर वे विवष थे कुछ भी न कर सके। जिस तहकिकात के लिए उन्हे जिसने दोशी ठहराया था वही खून का सूत्रधार था। और इसका परिणाम बहुत क्रूर हुआ। दूसरे दिन अमिनेश दा के बेटे सौरभ का स्कूल से लौटते समय अपहरण हुआ जो फिर कभी नही मिला। परिणाम स्वरूप अमिनेष दा की पत्नी बेटे की याद मे पागल होकर मर गई। भ्रष्ट और घिनौनी राजनिति ने अनिमेष दा का सब-कुछ लूट कर उन्हे तबाह कर दिया था। फिर भी वे कर्तव्यदक्ष अधिकारी के रूप में जाने गए।

इस कहानी का एक पात्र सत्येन है जो शिक्षित है। जोना की गाँव की सामंतवादी रूढ़ि-व्यवस्था, जमीदार, साहुकार तथा प्रस्थापित वर्ग, भूमिहीन, चासा एवं दलित आदिवासियों पर अन्याय अत्याचार कर उनका शोषण करते है। साथ ही में दलित और आदिवासी स्त्रियों का यौन शोषण भी इनके द्वारा होता है। सत्येन इन चासा, दलित-आदिवासियों के आत्मसम्मान को जागृत करते हुए उनमे चेतना निर्माण कर अपने अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा देकर उन्हे प्रतिरोध के काबील बनाता है। इसलिए पुलिस और स्वार्थि राजनैतिक व्यवस्था सत्येन को देशद्रोही करार देती है। अर्थात अन्याय और अत्याचार के खिलाफ लड़नेवाले सत्येन को प्रजातंत्र में दोशी ठहराया जाता है। पुलिस और राजनैतिक व्यवस्था अनिमेष दा को जोनाकी ऑपरेशन का प्रमुख बनाते है जिसमे सत्येन को पकड़ने की जिम्मेदारी उन पर सौपी जाती है। सत्येन शोषित पीड़ित चासा, दलित और आदिवासियों को उनके अधिकार और आत्मसम्मान को बचाए रखने के लिए उनमें जागृति लाने का प्रयास करता है पर सरकार इस बात को विद्रोह मानती है। और इसी गतिविधियों को रोकने के लिए सरकार अमिनेष दा की नियुक्ति करती है। कहानी में इस बात का भी उल्लेख है कि किस तरह से आदिवासियों की स्त्रियों का व्यवस्था द्वारा यौन शोषण होता है। जिनका विरोध सत्येन और आदिवासी करना चाहते है, पर इसे सरकार और प्रस्थापित व्यवस्था इसे दबा देना चाहती है। अमिनेश दा भी अक्सर आदिवासियों, चासाँ और दलितो के पक्ष में सोचते है यहाँ तक की उनको आदिवासियों की माँग सही ही लगती है।

कहानी का एक प्रमुख पात्र चिन्मय भी है जो अमिनेष दा की सोचविचार में परिवर्तन लाता है। पर सरकार ने चिन्मय को नक्सलवादी घोषित किया है। चिन्मय वही कार्य करता है जो सत्येन

 ISSN 0975-735X

करता है। चिन्मय को अनिमेष दा गिरफतार करते है। उस पर वो आरोप लगाए जाते है, जिसका उसके साथ कोई संबंध ही नही होता। उसपर जोर जबरदस्ति कर कबूल करवाने की कोशिश खोखले प्रजातंत्र में की जाती है। अमिनेष दा उससे कहते है–'संवैधानिक सरकार के खिलाफ तख्ता पलटने का षड्यंत्र तुम लोगो ने किया है। देषद्रोही नही। हो तुम?'[4] तब चिन्मय का जवाब बडा मार्मिक है वह कहता है कि 'जब गरीब किसानों, भूमिहिनों पर महाजन, सूदखोर, जोतदार और जमींदार हिंसा करते है तब आपका आदर्श कहाँ रहता है? सत्ता केंद्रित हर लड़ाई में बलात्कार, लूट, गुंडागर्दी, खड़ी फसलों को रौंदने से लेकर हत्याएँ तक आपकी इस हिंसा की सूची में नहीं आती। विजेता के लिए जो देशभक्ति है, पराजित के लिए वही देशद्रोह है।'[5] यहाँ भारतीय खोखले प्रजातंत्र को संजीव ने बेनकाब किया है। अमिनेष दा चिन्मय को अपने घर लेकर आते है। पति-पत्नी मिलकर उसका ध्यान रखते है। दोनो उसे अपने बेटे सौरभ के रुप में देखते है। पर एक दिन आर्मी चिन्मय को उठाकार लें जाती हैं, जिसे अमिनेश दा रोक नहीं पाते।

अनिमेश दा सोचते है कि जो सचमुच अपराधी है वो सरकार और राजनिति के कारण सुरक्षित है और चिन्मय, सत्येन, मजूमदार जैसे न्याय माँगनेवालों के खिलाफ षड्यंत्र रचे जाते है। कहानीकार बताते है कि प्रजातंत्र में न्याय माँगनेवालों को सरकार ताकद से दबोचने का प्रयास करती है जो प्रजातंत्र के लिए घातक है। जब अनिमेष दा को पता चलता है कि न्याय माँगनेवालो की आवाज दबाने के लिए ही वे नियुक्त है, तब उनका हृदय परिवर्तन होता है और वे दलित, शोषित, आदिवासियों के पक्षधर बनकर उसके साथ उनकी सच्ची न्याय की लडाई में शामिल हो जाते है। अनिमेश दा जैसे काबील, सक्त और ईमानदार अफसर का मत परिवर्तन ही ऑपरेशन जोना की कहानी की चरमसीमा है। कहानीकार यह चाहता है कि आदिवासियों पर जमींदारो, प्रशासन, महाजन, सुदखोरों द्वारा होनेवाले अत्याचारों को रोककर सरकार उनका शैषिक, आर्थिक विकास कर उन्हें सुरक्षितता प्रदान करें। साथ ही मे विकास की विविध योजनाएँ सही मायने में उन तक पहुँचाई जाए।

इस कहानी से निम्न निष्कर्ष निकलते है–

1. यह कहानी भारतीय खोखले प्रजातंत्र को बेनकाब कर व्यवस्था की पोल खोल करती है।

2. पुलिस यंत्रणा पर गहरी चोट करती यह कहानी पुलिस यंत्रना को ही कटघरे में खडा करती है।

3. आदिवासियों की जमीन, जल, जंगल और संस्कर्षति की सुरक्षिता की बात को संजीवने उठाया है।

4. यह कहानी आदिवासियों की अस्मिता को प्रतिष्ठित करती है।

5. शहरीकरण एवं विकास के नाम पर प्रस्थापित व्यवस्था आदिवासियों की संस्कृति को ही उखाड़कर फेकने के पक्ष में है जिसका नग्न यथार्थ कहानीकार ने प्रस्तूत कर उसके समाधान ढूँढ़ने के प्रयास किए है। जो सराहनीय है।

6. कहानी यह स्पष्ट करती है कि जबतक आदिवासियों को उनके मूलभूत अधिकार प्राप्त नही होंगे तब तक यह संघर्ष चलते ही रहेगा।

7. ऑपरेशन जोना की यह कहानी व्यवस्था के खिलाफ दलित आदिवासियों की बुलंद

आवाज है।

संदर्भ

1. रमणिका गुप्ता, कथाक्रम पत्रिका, अक्टूबर-दिसंबर, 2011, पृ॰ 18
2. संपादक गिरीश काशिद संजीव, पृ॰ 22
3. संजीव दुनिया की सबसे हसीन औरत, ऑपरेशन जोना की किताब घर, पृ॰ 65
4. वही पृ॰ 66
5. वही पृ॰ 67

डॉ॰ संजय गडपायले
माधवराव पाटील महाविद्यालय, पालम
जि॰ परभणी
मो॰ 9421391833
drsanjay1335@gmail.com

वित्तपोषण योजनाओं में लघु उद्योग इकाईयों की समस्या एवं समाधान

डॉ॰ प्रमोद कुमार त्रिपाठी
सहायक अध्यापक, वाणिज्य विभाग
मारवाड़ बिजनेस स्कूल, गोरखपुर
असिस्टेंट प्रोफेसर

इस शोध-पत्र में यह जानने का प्रयास किया गया है कि भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक अपने संसाधनों अर्थात् कुल वित्तीय कोषों का उपयोग किस प्रकार कर रहा है। इस दृष्टिकोण से बैंक समग्र संसाधनों अर्थात् कोषों को किस प्रकार विनियोजित किया है तथा विविध प्रकार की सहायता, वित्तपोषण क्रिया-कलापों को किस प्रकार कर रहा है, को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है–

अ. समग्र संसाधनों की संरचना एवं प्रवृत्ति
क. समग्र संसाधनों के उपयोग की संरचना एवं प्रवृत्ति
ख. ऋण व अग्रिम की संरचना एवं प्रवृत्ति
ग. निवेश की संरचना एवं प्रवृत्ति
घ. नकदी एवं बैंक अतिशेष क संरचना एवं प्रवृत्ति
ब. वित्त सहायता क्रिया-कलापों का विश्लेषण
क. समग्र सहायता की संरचना एवं प्रवृत्ति
ख. पुनर्वित्त सहायता की संरचना एवं प्रवृत्ति
ग. बिल वित्तपोषण की संरचना एवं प्रवृत्ति
घ. संस्थाओं को संसाधन सहायता की संरचना एवं प्रवृत्तियाँ
ड़. परियोजना वित्तपोषण की संरचना एवं प्रवृत्ति
च. अल्प ऋण सहायता की संरचना एवं प्रवृत्ति
छ. प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहायता

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक द्वारा बिल वित्तपोषण योजनाओं का मुख्य उद्देश्य लघु उद्योग इकाईयों के विलबिंत संबंधी समस्या का समाधान करना है। बिल वित्तपोषण के अंतर्गत सिडबी द्वारा बिल पुनर्भुनाई (अंतर्देशीय आपूर्ति बिल) बिल पुनर्भुनाई 'देशी बिल', बिलों की प्रत्यक्ष भुनाई योजना तथा बिलों की प्रत्यक्ष भुनाई नामक चार योजना से चलाई जा रही है। तालिका संख्या 4.7 जो कुल बिल वित्तपोषण की संरचना एवं प्रवृत्ति को इंगित करती है, के अध्ययन से

स्पष्ट होता है कि अध्ययन अवधि के दौरान 753.35 करोड़ से 2008.85 करोड़ रूपए इस योजना के अंतर्गत मंजूर की गई जो अध्ययन अवधि के बीच के चार वर्ष 2001 से 2004 तक 753.35 करोड़ रुपए से 951.91 करोड़ रुपए के बीच रही। पूरी अवधि में आठ वर्षों तक गिरावट की प्रवृत्ति थी, परंतु बाद में यह ठीक हो गई। बिल वित्तपोषण के अंतर्गत की गयी मंजूरियों का संवितरण वर्ष 1997 से निरंतर बढ़ता हुआ वर्ष 2006 में 96.77 प्रतिशत हो गया, अर्थात् संवितरण निरंतर ठीक हुआ।[1] बिल वित्त पोषण योजना के अन्तर्गत बिल पुनर्भुनाई कुल वित्त पोषण के 0. 06 प्रतिशत से 17.69 प्रतिशत के बीच है जो कि बाद के दो वर्षों में नहीं की, बिल पुनर्भुनाई योजना के अंतर्गत कुल बिल वित्तपोषण का बहुत थोड़ा ही प्रतिशत इस योजना के अंतर्गत मंजूर की गई है, जो कि 35 से 7.72 प्रतिशत के बीच है। बिल वित्तपोषण योजना के अंतर्गत प्रत्यक्ष भुनाई एक महत्त्वपूर्ण मद हैं, जिसके[2] अंतर्गत उपकरण बिल वित्तपोषण तथा घटक (प्राप्य बिल) बिल वित्तपोषण सम्मिलित है। इसके अध्ययन से स्पष्ट है कि उपकरण बिल वित्तपोषण कुल बिल वित्तपोषण के 7.90 से 31.29 प्रतिशत के बीच है, जोकि अध्ययन अवधि के बाद दो वर्षों में 7.90 से 31.29 प्रतिशत के बीच है, जोकि अध्ययन की अवधि के बाद के दो वर्षों में 7.90 एवं 10.01 प्रतिशत है।[3] घटक बिल वित्तपोषण कुल वित्तपोषण का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं बड़ा मद है, जिसके अंतर्गत भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक ने कुल वित्तपोषण का 51.70 से 90.95 प्रतिशत मंजूरियाँ की है, जोकि वर्ष 2001 के बाद उत्तरोत्तर बढ़ी है। कुल बिल वित्तपोषण के के मंजूरियों के संवितरण के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बिली पुनर्भुनाई का संवितरण 57.58 से 87.41 प्रतिशत हुआ है, जो कि निरंतर बढ़ा है। बिल पुनर्भुनाई की मंजूरियों का संवितरण 98.04 से 99.67 के बीच हुआ है, जो कि अध्ययन के दौरान का संवितरण वर्ष 1997 में 70.72 से बढ़ता हुआ वर्ष 2006 में 82.82 प्रतिशत हुआ।[4] इसी प्रकार घटक बिल वित्तपोषण के मंजूरियों का संवितरण 96.34 से उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ वर्ष 2006 में 82.72 प्रतिशत हुआ। इसी प्रकार घटक बिल वित्तपोषण के मंजूरियों का संवितरण 96.34 से उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ वर्ष 2006 में 98. 33 प्रतिशत हो गया। इससे स्पष्ट है कि बिल वित्तपोषण योजना के अंतर्गत सभी मदों के अंतर्गत मंजूरियों का संवितरण निरंतर ठीक हुआ है।[5]

संस्थाओं को संसाधन सहायता की संरचना एवं प्रवृत्तियाँ

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक लघु इकाईयों के संवर्द्धन एवं विकास से जुड़ी हुई संस्थाओं को संसाधन सहायता प्रदान करती है। ताकि इस क्षेत्र को शीघ्रता से ऋण उपलब्ध कराया जाना सुनिश्चित हो सके। भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक ने मुख्यत: पाँच संस्थाओं को संसाधन सहायता प्रदान करती है, जिसके अन्तर्गत राज्य वित्तीय निगम एवं राज्य औद्योगिक विकास निगम, गैर-बैंकिंग वित्त कंपनियाँ, फैक्टरिंग कंपनियाँ अल्पावधि ऋण राज्य बिजली बोर्ड एवं विद्युत निगम तथा अन्य संस्थाओं, जिनमें बैंकों को विदेशी मुद्रा में ऋण व्यवस्था तथा सिडबी की सहयोगी संस्था शामिल हैं।[6] तालिका संख्या 4.8 संस्थाओं के संसाधन सहयोग सहायता की संरचना एवं प्रवृत्तियों को इंगित करता है, के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सिडबी में अध्ययन अवधि के दौरान 492.00 करोड़ रुपए से 1603.97 करोड़ रुपए की सहायता मंजूर की है, जो वर्ष 2000 तक अधिक है तथा बाद में कम हुई है, अर्थात् इसमें उच्चावचन की प्रवृत्ति दिखती है।[7]

इस सहायता की मंजूरियों का संवितरण 46.81 से 107.09 प्रतिशत के बीच हुई है जो कि अध्ययन अवधि के बाद के वर्षों में तुलनात्मक रूप से अधिक है।[8] संस्थाओं को सहायता के अंतर्गत सिडबी ने राज्य वित्तीय निगम, राज्य औद्योगिक विकास निगम को कुल संसाधन सहायता का 5.24 प्रतिशत से 67.10 प्रतिशत मंजूरियाँ की है, जोकि वर्ष 2001 तक 32.44 से 67.10 प्रतिशत के बीच है तथा वर्ष 2002 से वर्ष 2006 के बीच 5.24 से 23.38 प्रतिशत के बीच है अर्थात् बाद के वर्षो में मंजूरियाँ घटी हैं।[9] गैर-वित्तीय कंपनियों को कुल संसाधन सहायता का 2. 18 से 30.94 प्रतिशत मंजूरियाँ की गई जो कि अपवाद स्वरूप वर्ष 2006 को छोड़कर शुरू के वर्षों में अधिक तथा बाद के वर्षों में कम हुई।[10] सिडबी ने फैक्टरिंग कंपनियों को संसाधन सहायता प्रदान करती है, जो कि कुल संसाधन सहायता का 4.27 से 28.25 प्रतिशत के बीच है जोकि वर्ष 2000 से 2003 के बीच 16.17 से 28.25 प्रतिशत के बीच अधिक है। अल्पावधि ऋण राज्य बिजली बोर्ड एवं विद्युत निगम को सिडबी ने संसाधन सहायता प्रदान की, जोकि कुल संसाधन सहायता का 4.22 से 33.45 प्रतिशत के बीच है, जोकि अध्ययन अवधि के दौरान अनेक वर्षों में नहीं दी गई तथा बाद के वर्षों में कम दी गई। अन्य संस्थाओं को संसाधन सहायता के अंतर्गत सिडबी में कुल संसाधन सहायता का 3.06 प्रतिशत से 70.27 प्रतिशत मंजूरियाँ की गई, जोकि वर्ष 2002 के बाद वर्षों में तुलनात्मक रूप से अधिक रहा।

संदर्भ

1. बनर्जी, अमलेश एंड सिंह, बैंकिंग एंड फाइनेंसियल सेक्टर रिफार्म्स इन इंडिया, दीप एंड दीप पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2001
2. बत्रा, जी॰एस॰ एंड डॉगवाल, बैंकिंग एंड डेवलपमेंट फाइनेन्स, न्यू विस्तार, दीप एंड दीप पब्लिकेशंस, नई दिल्ली 1999
3. शर्मा, एच॰सी॰, एक विकास अर्थव्यवस्था में बैंकिंग का विकास, साहित्य भववन पब्लिकेशंस, आगरा 1969
4. कुलश्रेष्ठ, आर॰एस॰, वित्तीय प्रबंध, साहित्य भवन पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा 2001
5. वेस्टन, फ्रेड, जे॰, दि फाइनेन्सिग ऑफ स्मॉल बिजनेस, मैकमिलन, न्यूयार्क, 1967
6. सिन्हा, एम॰के॰, मनी बैंकिंग विकास एवं समस्याएँ, विकास पब्लिशिंग हाउस, मुंबई, 1979
7. भटाचार्य, के॰एम॰, मैनेजमेंट ऑफ नॉन परफार्मिंग एडवांसेज इन बैंक्स, जर्नल ऑफ एकाउन्टिंग एंड फाइनेंस, वाल्यूम 16, नं॰ 1, मार्च, 2002
8. रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया, 'सम एस्पेक्ट्स एंड इस्यूज रिलेटिंग टू एन॰पी॰ए॰, इन कामर्शियल बैंक्स', आर॰बी॰आई॰, बुलेटिन, वाल्यूम 53, नं॰ 7, जुलाई 1999
9. वार्षिक रिपोर्ट, भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक, सिडबी टॉवर, 15 अशोक मार्ग, लखनऊ 1996 से 2006 तक
10. उद्योग व्यापार पत्रिका, नई दिल्ली, मनी एंड बैंकिंग सेंटर फॉर मौनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी प्रा॰लि॰, मुंबई 2005

मानवीय संवेदनाओं को व्याख्यायित करती बच्चन की कहानियाँ

डॉ॰ मंजू शुक्ला
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी
राजकीय स्नात॰ महा॰, नौएडा

विश्व में घटनेवाली घटनाओं का दर्शन सामान्य व्यक्ति ही करता है जैसे सूर्योदय का होना, पक्षियों का चहचहाना, नदी का बहना आदि, किंतु कवि विशेष होने के कारण, वह इन दृश्यों की अनुभूति अपने व्यक्तिगत बोध के धरातल पर करता है। साहित्यकार अपनी रचना में कहीं-न-कहीं उपस्थित अवश्य होता है। कृति में कृति की यही उपस्थिति आत्माभिव्यक्ति कही जाती है। कथासाहित्य में कथ्य और शिल्प को समाकलित करते हुए बच्चन जी ने आत्माभिव्यक्ति पर प्रकाश डाला है। उनकी कहानियाँ उनके जीवन के इर्द-गिर्द मानवीय संवेदनाओं को सशक्त व्याख्यायित करती हैं।

यूँ तो कहानी का सामान्य अर्थ कहना होता है और कहने-सुनने की यह प्रथा अत्यंत प्राचीन है। कहानी हिंदी में गद्य लेखन की अत्यंत प्राचीन विधा है। बंगला में इसे 'गल्प' कहा जाता है। मनुष्य के जन्म के साथ ही कहानी का भी जन्म हुआ और कहानी कहना- सुनना मानव का आदिम स्वभाव बन गया। इसी कारण प्रत्येक सभ्य और असभ्य समाज में कहानियाँ पाई जाती हैं। हमारे देश में कहानियों की बड़ी लंबी और समृद्ध परंपरा रही है। वेदों, उपनिषदों और ब्राह्मणों में वर्णित 'यम-यमी', 'पुरूरवा-उर्वशी', 'गंगावतरण', 'नल-दमयंती', 'दुष्यंत-शकुंतला' जैसे आख्यान कहानी के ही प्राचीन रूप हैं।

प्राचीनकाल में सदियों तक प्रचलित वीरों तथा राजाओं के शौर्य, प्रेम, न्याय, वैराग्य, साहस आदि की कथाएँ, जिनका कथानक धटना प्रधान हुआ करता था, भी कहानी के ही रूप हैं। 'वृहत्कथा' का प्रभाव दंडी के 'दशकुमार चरित', 'बाण भट्ट की 'कादंबरी', धनपाल की 'तिलक मंजरी' जैसे अन्य काव्य ग्रंथों पर साफ-साफ परिलक्षित होता है। इसके पश्चात् छोटे आकार वाली पंचतंत्र, हितोपदेश, बेताल पच्चीसी, कथा सरितसागर जैसी साहित्यिक एवं कलात्मक कहानियों का युग आया। इन कहानियों से श्रोताओं को मनोरंजन के साथ-साथ नीति का उपदेश भी प्राप्त होता है। प्राय: कहानियों में असत्य पर सत्य की, पाप पर पुण्य की, अधर्म पर धर्म की विजय दिखाई गई है।

कहानी के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए हिंदी के प्रचीन कथाकार प्रेमचंद ने कहा है कि 'कहानी वह ध्रुपद की तान है जिसमें गायक महफिल शुरू होते ही अपनी संपूर्ण प्रतिभा दिखा देता

 ISSN 0975-735X

है। एक क्षण में चित्त को इतने माधुर्य से भर देता है जितना रात भर गाना सुनने से भी नहीं हो सकता।' एक अन्य स्थान पर वह लिखते हैं कि 'कहानी गल्प एक रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करने हैं।...वह एक-सा रमणीय उद्यान नहीं जिसमें भाँति-भाँति के पुष्प, बेल-बूटे सजे हुए हैं, बल्कि एक गमला है, जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप मे दृष्टिगोचर होता है।'

आधुनिक साहित्य में कहानी का सर्वोच्च स्थान निश्चित हो चुका है। यह एक अत्यंत लोकप्रिय विधा के रूप में स्वीकृत हो चुकी है। कहानी में मानवीय संबंधों, प्रवृतियों, भावनाओं, अनुभूतियों, समस्यायों और यथार्थता को जितने सहज ढ़ग से अभिव्यक्त किया जा सकता है साहित्य की किसी भी अन्य विधा के माध्यम से नहीं किया जा सकता।

हरिवंशराय बच्चन जी विशेषत कई रूपों में जाने जाते हैं यद्यपि उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं को अपने लेखनकार्य से पुष्ट किया किंतु एक कहानीकार के रूप में उन्होंने जिस प्रकार सहज रूप से मानवीय भावनाओं को प्रकट किया वह निश्चित ही उन्हें सच्चे कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित करता है। माना जाता है कि उनके साहित्यिक जीवन का आरंभ कहानीकार के रूप में हुआ था। सन् 1930 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आयोजित कहानी लेखन प्रतियोगिता में उनकी कहानी प्रथम रही। बच्चन जी की प्रथम कहानी को प्रेमचंद ने हंस पत्रिका में प्रकाशित किया। बच्चन जी लगभग चार वर्षों तक कहानी और कविताएँ दोनों ही लिखते रहे। कहानियों का प्रथम संग्रह हिंदुस्तानी अकादमी से प्रकाशित कराने के लिए लेखक ने प्रयास किया किंतु सफलता प्राप्त नहीं हो सकी, जिसे बाद में प्रारंभिक रचनाएँ भाग 3 में संजोकर पुनः प्रकाशित कराया गया।

बच्चन जी का कहानी संसार विस्तृत न होकर भी अत्यंत मार्मिक है, उसमें निजी जीवन से प्रभावित कथ्य, चरित्र, दृश्य एवं पात्रों का सुंदर एवं मार्मिक वर्णन है जो सहज ही मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त करता हुआ प्रतीत होता है। कृत्रिमता एवं बनावट से दूर इन कहानियों में जीवन जैसे स्वतः ही स्फूर्त हो उठा है। उन्होंने जो देखा, सुना और अनुभव किया वही अपनी स्वाभाविकता में कहानी बन गया।

बच्चन जी लगभग सात से आठ वर्षों तक कहानियाँ लिखते रहे उनकी कुछ कहानियों के शीर्षक हैं 'माता और मातृभूमि', 'संकोच त्याग', 'चिड़ियों की जान जाए लडकों का खिलौना, 'अंचल का बंदी, धर्म परीक्षा खिलौने वाला, ठाकुर जी, स्वार्थ, चुन्नी- मुन्नी, दुःखनी इत्यादि। इन कहानियों को तत्कालीन पत्रिकाओं हंस, सरस्वती, माधुरी में ससम्मान स्थान मिलता रहा। देश की गुलामी के समय में लिखी गई इन कहानियों में देश भक्ति, स्वतंत्रता एव गुलामी से आजादी की भावनाएँ गूँजती रही किंतु कहीं भी इसका स्पष्ट रूप से इसका उल्लेख नहीं मिलता। अविभाजित भारतवर्ष में पाकिस्तान और बॉग्लादेश भी शामिल था, किंतु कहानीकार द्वारा अफगानिस्तान के कथ्य का सहारा लेकर देशप्रेम को उजागर किया गया है, इसके पीछे बच्चन जी की क्या मंशा रही होगी इसे समझना होगा 'प्यारे बेटा उमर सलामत रहो। मैंने खुदकुशी कर ली है। मुझे मरने में बड़ी खुशी हुई। रंज सिर्फ इस बात का था कि तुम्हें अब न देखूँगी। जब मादरे अफगानिस्तान को उसके बच्चे की जरूरत है, मैं तुम्हें अपने पास नहीं रोकना चाहती। क्या अफगानिस्तान मेरी माँ

नहीं है? प्यारे उमर तुम मेरे मरने का अफसोस मत करना तुम्हें अब मैं एक बड़ी माँ की गोद में सौंप रही हूँ। तुम अब उस माँ की खिदमत करना।'[1]

माँ की कैसी सहज प्रेममयी भावना का प्रस्तुतीकरण है। माँ जिस बच्चे को जन्म से ही जीने का आधार मानती है उसे स्वयं ही देश रक्षा हेतु भेज कर स्वयं को उसके मार्ग का अवरोध नहीं बनाती। कहानी वास्तव में रोमांचित करती है। आखिर देशभक्ति मातृभक्ति से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।

बच्चन जी का युवा मन मानवीय प्रवृतियों का बखूबी प्रतिपादन करता है। अपनी प्रसिद्ध कहानी 'संकोच त्याग' में वह मानवीय स्वाभाविकता का बखूबी चित्रण करते हैं। युवा प्रेम बड़ा आशावादी होता है। वह किसी भी स्थिति में निराशा को फटकने नहीं देता। प्रभा और बसंत ऐसे युगल प्रेमी हैं, जो अनायास ही प्रेम के सोपानों पर चढ़ते गये । कहानी में बच्चन जी की आत्म अभिव्यंजना प्रणय संबंधो को निरूपित करने के लिए उक्त कहानी में चित्रित हो गई है। कहानीकार लिखता है कि...'प्रभा और बसंत कोई असाधारण प्रेमी न थे। उनके पत्रों में भी वही बातें रहा करती थी, जिनसे प्राय: सभी प्रेमीगण पेज के पेज रंगा करते हैं। पहले तो पत्रों में हेर-फेर कर वही बातें रहा करती थी कि किसको पहले प्रेम करना प्रारंभ किया और कौन किसको ज्यादा प्रेम करता है। लोग प्रेम क्यूँ करते हैं, क्या प्रेम कभी टूट सकता है और वे एक दूसरे को सदा ऐसे ही प्रेम करते रहेंगे। बाद के पत्रों में वे एक दूसरे के वियोग मे दुखी होते, एक-दूसरे को याद करते और एक दूसरे को स्वप्न में देखते।'[2]

कहानी का प्रस्तुत प्रेम वर्णन सहज मानवीय प्रवृति के आधार पर किया गया है। प्रेम का यह सहज प्रस्फुटन है, क्योंकि प्रेम अनेकों बार स्वीकृति के पश्चात् भी आशंकित हो उठता है। प्रेम में विश्वास हो तो भी वह एकाधिकार की चेष्टा में बारंबार कसक, बैचेनी का अनुभव करता है। प्रेमियों का पत्र व्यवहार लगभग इसी प्रकार का होता है। बच्चन जी स्वयं मौज मस्ती, प्रणय और दीवाने रहे है फिर कथा पात्रों के प्रेम में स्वयं की अभिव्यक्ति क्यूँ न झलक उठे। बच्चन जी का निजी जीवन प्रणयात्मक सूत्रों से जुड़ा रहा है। वही व्यक्ति प्रणय का तादात्मय कर सकता है जिसने उसका कुछ अनुभव किया हो।

स्वार्थ कहानी का कथ्य मन की और सिपाही मोहन सिंह के बीच प्रणय वासना की कथा है। कहानीकार मोहनसिंह के हाव-भाव पर कहानी के प्रारंभ में ही टिप्पणी करता हुआ कहता है, 'संध्या का समय था बरसात के दिन। उसने अपनी वर्दी पेटी कसी, अपनी कोठरी में एक कोने में ताक पर रखे हुए टूटे शीशे के टुकड़े में अपना मुँह देखा। मूँछे उपर को चढ़ाई ओर ननकू तमोली की दुकान की ओर अपने कदम बढ़ाए। रास्ते में कुछ ऐसी मौज में आ गई की कजली गुनगुनाने लगा...सजनी प्रिया घर न आए बरसन लागे नैना...। पच्चीस-छब्बीस की उसकी उम्र थी, कसरती शरीर था अंग-अंग में मस्ती थी झूमता चला आता था।[3]

यह तो रोजमर्रा की साधारण बातें हैं, किंतु इस कहानी का अभीष्ट तो कुछ ओर ही है। मनकी का बूढ़ा अंधा पिता बेटी को पान की दुकान पर बैठाकर जीविकोपार्जन का साधन बनाए हुए है और इसके पीछे सिर्फ उसका स्वार्थ है और कोई दूसरा कुछ नहीं। ननकू चाहता है कि उसकी बेटी पान बेचकर उसका और अपना पेट भरती रहे। हमारी भारतीय संस्कृति एक पिता की ऐसी सोच को घृणित मानती है पर समाज के बदलते मानवीय मूल्यों के कारण ऐसे लोग भी

 ISSN 0975-735X

मिलते हैं, जो सिर्फ अपने बारे मे ही सोचते हैं। धीरे-धीरे मनकी जवान हो जाती है और ननकू के पड़ोसी और रिश्तेदार उस पर मनकी की शादी का दबाव बनाते हैं, लेकिन ननकू स्वार्थ में अंधा होकर सबकी बातों को नजरअंदाज कर देता है। इस बीच मनकी और मोहनसिंह की प्रणय साधना सफल होती है और अपने प्रेम को प्राथमिकता देता देते हुए जब मनकी बूढ़े बाप को याद करके रोती है, तब मोहन सिंह कथा के मूल तत्त्व की बात कहता है...'जीवन का नियम परोपकार नहीं स्वार्थ साधना है। परोपकार को जीवन का नियम बनाओ तो तो आज इसी समय हमारी टूटी हाड़ी से लेकर लाख रूपए की जान तक की दूसरों को आवयश्कता है। तेरे दादा के रोने की आवाज मेरे कानों में आ रही है। वह रो रहा है तेरी सहायता के लिए, तेरे पैसा पैदा करने के लिए, अपने सुख के लिए।'[4]

कहानीकार ने व्यक्ति-व्यक्ति के बीच मानवीय संबंधों की व्याख्या करते हुए कहा है कि समाज बदल रहा है। व्यक्ति स्वार्थवश संबंध स्थापित करने में विश्वास करने लगा है, जबकि पहले रिश्तों के बीच स्वार्थ कहीं नहीं आता था। बच्चन जी कहानी के माध्यम से बदलती मानवीय मनोवृतियों का जिस तरह वर्णन करते हैं वह निश्चित ही मन को छू जाता है।

मानवीयता और चारित्रिक उन्नयन बच्चन जी की कहानियों के विभिन्न परिदृश्यों में दृष्टिगत होता है। बच्चन जी की दार्शनिकता उनके विचार कई बार एक सामाजिक सोच से विपरीत नजर आते है। ऐसा प्रतीत होता है कि जीवन के जिस रुप को वह देख रहे हैं वह नितांत नूतन है और वही नूतनता मानवीय संवेदनाओं में मुखर हो उठी है। वह लिखते हैं कि 'मैं अक्सर सोचता–वह सुंदर है, बड़ी सुंदर है। उसका मन सुंदर होगा, उसके विचार सुंदर होंगे। मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि उसने मेरी यह इच्छा पूरी कर दी। जैस-जैसे विवाह के दिन समीप आने लगे, वैसे -वैसे मेरी इच्छा इस सुंदरता को छूने की होने लगी...चंचलता भी तो सौंदर्य का एक अंग है, पर इससे क्या, उड़ती तितली अच्छी लगती है तो क्या बैठने पर उसके पंख सुंदर नहीं लगते।'[5]

मानवीयता चरित्र की वह विशेषता है जो उसे अन्य पात्रों से अलग करती है। बच्चन जी की कहानी 'धर्म परीक्षा' का ब्राह्मण पात्र इसी उदात्त धर्म का है। वह घर से बाजार को जा रहा है घर-गृहस्थी का सामान खरीदने को उसके पास मात्र 10 रुपए हैं, जिसमें महीने भर का राशन-पानी खरीदना है, लेकिन रास्ते में एक गाय को कसाई लोग खरीदकर उसकी हत्या करना चाहते हैं, ब्राह्मण के मन में दया भाव उपजता है और वह 10 रुपयों से गाय की रक्षा कर लेता है। ब्राह्मणी इस परमार्थ से आक्रोशित हो उठती है–'अरे तुम पागल हो गये हो बड़ा धर्म सूझा है। आदमी अपने घर में चिराग जलाकर मस्जिद में चिराग जलाता है। पहले आत्मा फिर परमात्मा। खूब चले धर्म करने खुद तो दाने-दाने को तरसते हैं और चले है गौ रक्षक बनने। कुछ अपने लिए सोचा इन बेमुँह बच्चों के लिए सोचा, अरे गाय क्या पत्थर की है उसे क्या खिलाओगे।'[6]

संवेदनाओं का प्रस्फुटीकरण अनेक स्थानों पर अपने गांभीर्य के साथ प्रस्तुत है। बच्चन जी जहॉ एक ओर पात्र की संवेदनाओं को मानव हितार्थ दर्शाते हैं, तो वही दूसरे पात्र की क्रूरता से दूसरे पक्ष को भी मजबूती से प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। उनकी कहानी का ब्राह्मण पात्र जब घर से बाहर जाना चाहता है, तो तोला भर आटा अपने साथ ले जाना चाहता है जिससे वह रास्ते में चीटियों को खिला सके वही दूसरी ओर उसकी पत्नी उस आटे से अपने बच्चों का पेट भरना चाहती है। एक सामान्य गृहस्थ की सोच क्या गलत है, किंतु बच्चन जी की संवेदना ब्राह्मण से

मेल खाती प्रतीत होती है।

छोटे से कथ्य में बड़ी सी बात कह देना लघु कथा की विशेषता है। बच्चन जी की प्रारंभिक लघु कथा सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई। इस लघु कथा के माध्यम से बच्चों की संवेदनाओं और सोच का जिस प्रकार प्रस्तुतिकरण मिलता है निश्चित ही वह धर्म के बड़े-से-बड़े ठेकेदारों की सोच को बदलने हेतु पर्याप्त है। बच्चन जी की चुन्नी-मुन्नी लधु कथा इसका सशक्त उदाहरण है–'मुन्नी और चुन्नी में लॉग-डॉट रहती है। मुन्नी छः वर्ष की है और चुन्नी पाँच वर्ष की। दोनों सगी बहनें हैं। जैसी धोती चुन्नी को आए वैसे ही मुन्नी को। जैसा गहना मुन्नी को बने वैसा ही चुन्नी को। मुन्नी ब में पढ़ती थी चुन्नी अ में। मुन्नी पास हो गई, चुन्नी फंल। मुन्नी ने माना था कि मैं पास हो जाऊँगी तो महावीर स्वामी को प्रसाद चढ़ाऊगी। माँ ने उसके लिए मिठाई मँगा दी। चुन्नी ने उदास होकर धीमे से पूछा, अम्मा क्या जो फेल हो जाता है वह मिठाई नहीं चढ़ाता?[7] इस भोले प्रश्न से माँ का मन भर आया। 'चढ़ाता क्यूँ नहीं बेटी 'माँ ने यह कहकर उसे गले से लगा लिया। माँ ने चुन्नी के चढ़ाने के लिए भी मिठाई मँगा दी। जिस समय वह मिठाई चढ़ा रही थी, उस समय उसके मुँह पर संतोष के चिह्न थे, मुन्नी के मुँह पर ईर्ष्या के माता के मुँह पर विनोद के और देवता के मुँह पर झेंप के।'[8] वैसे तो इस कथ्य में कोई नई बात नहीं है, परंतु जिस प्रकार मानवीय संवेदनाओं का सुंदर प्रस्तुतीकरण हुआ है वह निश्चित ही नया है।

बच्चन जी ने अपनी कहानियों में कथा शैली को सहजता प्रदान की है। पाठक कहानी से उबता नहीं है। आम आदमी की भाषा में, आम आदमी के विचारों को लेखक ने सुंदरता एवं सहजता के साथ व्यक्त किया है। वह कहानी के मर्म को पाठकों तक पहुँचाना जानते हैं अतः कहानी समस्याप्रधान होने के बावजूद भी अंतिम चरण तक समाधानपरक बन जाती है। भाषा और भाव की संवेदना में कथा की शैली को भी मधुर एवं कोमल बना दिया है। लेखक ने पात्रों की मानसिकता का भरपूर अध्ययन किया है। कथाकार स्वयं में भी आम आदमी की प्रवृति को लेकर जन-जन के भाव संवेदन को आत्मसात् करता रहता है, इसीलिए मानवीय संबंधों को व्याख्यायित करने में सफल रहा है। कहानियों के कथ्य मूलतः जीवनमूल्यों के निदर्शन के लिए उपयोगी हैं यह बात निश्चय के साथ कही जा सकती है कि कहानीकार युग परिवेश के साथबदलते चारित्रिक मूल्यों की स्थापना करता है। कथाकार बच्चन ने कहानियों के माध्यम से सरल मुग्ध प्रणय की भावनाओं को मूर्त रूप प्रदान किया है। अतः कहा जा सकता है कि बच्चन जी की कहानियाँ स्वयं को अभिव्यक्त करती हुई पाठकों तक संदेश पहुँचाने में सफल हैं।

संदर्भ

1. बच्चन रचनावली, खंड 6, माता और मातृभूमि
2. बच्चन रचनावली, खंड 6, संकोच त्याग
3. बच्चन रचनावली, खंड 6, स्वार्थ
4. बच्चन रचनावली, खंड 6, स्वार्थ
5. बच्चन रचनावली, खंड 6, हदय की ऑखें
6. बच्चन रचनावली, खंड 6, धर्मपरीक्षा
7. बच्चन रचनावली, खंड 6, चुन्नी मुन्नी
8. बच्चन रचनावली, खंड 6, चुन्नी मुन्नी

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका

प्रा॰ डॉ॰ योगेश गोकुल पाटील
सहयोगी प्राध्यापक, विभाग अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
विद्यावर्धिनी सभा का कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, धुले

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं का योगदान विशेष महत्त्वपूर्ण रहा है। भारत में पत्रकारिता के जन्मदाता जेम्स आगस्टस हिक्की है। हिक्की भारत के प्रथम पत्रकार थे जिन्होंने प्रेस की स्वतंत्रता के लिए ब्रिटीश सरकार से संघर्ष किया। 'अपने मन और आत्मा की स्वतंत्रता के लिए अपने शरीर को बंधन में डालने में मुझे आनंद आता है।' हिक्की का यह कथन भारतीय पत्रकारों के लिए आज भी प्रेरणास्पद है। पत्र के पहले ही अंक में हिक्की ने मन और आत्मा की स्वतंत्रता का आग्रह प्रकट किया था। अपने पत्र की नीति के संदर्भ में उन्होंने लिखा था, 'यह राजनीतिक और व्यापारिक पत्र खुला तो सब के लिए है पर प्रभावित किसी से नहीं है।' इस प्रकार आधुनिक पत्रकारिता का श्रीगणेश यही से होता है।

हिंदी पत्रकारिता का श्रीगणेश युगल किशोर शुक्लने किया, उन्होंने 30 मई 1826 में कलकत्ता से 'उदंत मार्तंड' प्रकाशित किया। 'उदंत मार्तंड' का अर्थ है समाचार सूर्य। यह हिंदी का सर्वप्रथम साप्ताहिक समाचार पत्र था। हिंदी पत्रकारिता के उद्‌भव के साथ ही इस समाचारपत्र ने विकास का कार्य प्रशंसनीय ढंग से किया है। समाचारपत्र के प्रथम अंक में लिखा था 'यह उदंत मार्तंड अब पहले पहल हिंदुस्थानियों के हित के हेतु आज तक किसी ने नहीं चलाया पर अँग्रेजी और फारसी औ बंगले में जो समाचार का कागज छपता है उसका सुख उन बोलियों के जाने ओ पढ़नेवाले को ही होता है। ऐसी बातों के विचार से नाना देश के सत्य समाचार हिंदुस्तानी लोग देखकर आप पढ़ ओ समझ लेय ओ पराई उपेक्षा न करे ओ अपनी भाषा की उपज न छोड़े।' लगभग डेढ़ वर्ष तक चलनेवाले इस साप्ताहिक पत्र ने 4 दिसंबर 1827 को अपना दम तोड़ दिया।

'पया में आजादी' क्रांति का अग्रदूत : हिंदी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास का इतिहास भाषा के साथ-साथ संघर्षों का इतिहास है। आग उगलती लेखनी ने जनमानस में राष्ट्रीयता की ऐसी भावना भर दी की 1857 ई॰ का स्वतंत्रता संग्राम इतिहास में एक युगांतकारी घटना बन गया।

'स्वतंत्रता आंदोलन के मूर्धन्य नेता अजीमुल्लाखां ने 8 फरवरी 1857 ई॰ में 'पया में आजादी' का प्रकाशन किया। यह एक ऐसा शोला था, जिसने अपनी अपनी प्रखर एवं तेजस्वी वाणी से जनता में स्वतंत्रता का प्रदीप्त स्वर फूँका। अल्प समय तक निकलेवाले इस पत्र ने तत्कालीन वातावरण में ऐसी जलन पैदा कर दी जिससे ब्रिटीश सरकार घबरा उठी तथा उसने पत्र को बंद कराने के लिए कोई कोर कसर न छोड़ी।'[1] पहले यह समाचारपत्र उर्दू में प्रकाशित होता

था, लेकिन बाद में हिंदी में निकलने लगा। यह पत्र अँग्रेजों के विरुद्ध क्रांति का प्रचारक था और जिसको जब्त कर लिया गया था। जिस किसी के पास उसकी प्रति पाई जाती थी उसे राजद्रोही माना जाता था और उसे कड़ी-से-कड़ी सजा दी जाती थी। इस पत्र ने स्वाधीनता आंदोलन के कार्य में अपना विशेष योगदान दिया। उस समय जो राष्ट्रगीत इसमें छपा था, उसकी पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

हम है इसके मालिक, हिंदुस्तान हमारा
पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा ये है
हमारी मिल्कियत, हिंदुस्तान हमारा
इसकी अहमियत से, रोशन है जग सारा
आज शहीदों ने तुमको, पहले वतन ललकारा
तोडो़ गुलामी की जंजीरें, बरसाओं अंगारा
हिंदु-मुसलमा सिक्ख हमारा, भाई-भाई प्यारा
ये है आजादी का झंडा, इसे सलाम हमारा।

'पयामें आजादी' के प्रवर्तक अजीमुल्ला खाँ स्वयं स्वतंत्रता सेनानी थे। इस पत्र ने देश की जनता में स्वतंत्रता प्रेम की आग फूँक दी। आज भारत में इसकी एक भी प्रति उपलब्ध नहीं है। लंदन के म्युजियम में इसकी एक प्रति सुरक्षित है।

भारत में अँग्रेजों के विरूद्ध स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए जिन समाचारपत्रों ने संघर्ष किया है, उनमें कलकत्ता का 'हिंदू पेट्रियट' मुख्य है। इसकी स्थापना 1853 में गिरीशचंद्र घोष ने की थी और हरिश्चंद्र मुखर्जी के नेतृत्व में असाधारण लोकप्रियता प्राप्त की। 'अमृत बाजार पत्रिका' भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम का प्रबल समर्थक रहा। इस पत्र के संपादक शिशिरकुमार घोष ने 'वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट' 1878 से बचने के लिए 'अमश्त बाजार पत्रिका' को रातों रात अँग्रेजी साप्ताहिक में बदल दिया । 19 फरवरी 1881 से इस पत्र को दैनिक कर दिया गया।

सन् 1868 में प्रसिद्ध पत्रकार गिरीशंद्र घोष ने 'बंगाली' नाम से एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया। कुछ दिनों बाद सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने इस पत्र को खरीद लिया और इसके बाद सुरेंद्रनाथ बॅनर्जी ने इस पत्र को खरिद लिया और इसके बाद, यह पत्र केवल बंगाल में नहीं, सारे भारत में स्वाधीनता संग्राम का प्रबल पक्षधर हो गया। 1885 में ए॰ओ॰ह्युम ने अखिल भारतीय काँग्रेस की स्थापना की। काँग्रेस के अध्यक्षों में से अनेक ऐसे थे, जो किसी पत्र के संपादक थे या उन्होंने किसी बड़े पत्र की स्थापना की। फिरोजशाहा मेहता ने 'बांबे क्रॉनिकल की स्थापना की। पं॰ मदनमोहन मालवीय ने 'दैनिक हिंदुस्थान' का संपादन किया और कालांतर में साप्ताहिक और दैनिक 'अभ्युदय' निकला। लाला लजपतराय की प्रेरणा से 'पंजाबी', 'वंदे्मातरम' और पीपुल नामक तीन पत्र लाहौर से निकले। महात्मा गांधी जी ने 'इंडियन ओपीनियन' आफ्रिका से प्रकाशित किया और भारत में आकर उन्होंने 'यंग इंडिया', 'नवजीवन', 'हरिजन', 'हरिजन सेवक' और हरिजन बंधु' पत्र निकालें। 'वास्तव में हिंदी पत्रकारिता अनेक अवसरों पर जनता को धैर्य, साहस और संयम का पाठ पढ़ाती भी नजर आई थी न्याय के मुकाबले अन्याय के मुहँ पर हिंदी पत्रकारिता कालिख पोतती दृष्टिगत हुई। काँग्रेस को हिंदी पत्रकारिता ने समय-समय पर सावधान भी किया। हिंदी प्रदेश से दैनिक समाचारपत्र और काँग्रेस का उद्भव एक ही वर्ष सन

 ISSN 0975-735X

1885 ई॰ में हुआ। यह हिंदी पत्रकारिता और कांग्रेस के अटूट रिश्तें का एक उद्‌हरण है।'[2]

बंग-भंग आंदोलन की प्रेरणा से अनेक समाचार पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई। बंग-भंग पर हिंदी पत्रकारिता ने जनता को उकसाने में कोई कसर बाकी न रखी। उसने जन मानस को बंग भूमि की विवशता, महानता, पावनता और दैव शक्ति का एहसास करवाया संपूर्ण देश में बंगाल विभाजन के विरुद्ध आक्रोश दिन प्रतिदिन बढ़ने लगा। इसे कर्जन के काले कारनामें का नाम दिया गया। बंग भंग आंदोलन के गर्भ से स्वदेशी की भावना फलीभूत हुई। 'युगांतर', 'वंदेमातरम्', 'संध्या' और 'नवशक्ति' आदि पत्र पत्रिकाएँ अपनी उग्र राष्ट्रीयता के कारण विशेष लोकप्रिय हुई। जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी ने लिखा है, 'जहाँ तक क्रांतिकारी आंदोलन का संबंध है, भारत का क्रांतिकारी आंदोलन बंदूक और बम के साथ नहीं समाचारपत्रों से शुरू हुआ।'[3] 'युगातंर' वास्तव में युगातंगकारी समाचार पत्र था। यह कोई जान नही पाता था कि इस पत्र का संपादक कौन है। अनेक व्यक्तियों ने समय-समय पर अपने आपको इस पत्र का संपादक घोषित किया और वे जेल गए। सरकार को दमनकारी कानून बनाने पड़े और इस पत्र को बंद करना पड़ा। चीफ जस्टिस सर लारेंस जैकिनसन ने इस पत्र की विचारधारा के बारे में लिखा था, 'इसकी हर एक पंक्ति से अँग्रेजों के विरुद्ध द्वैष टपकता है। प्रत्येक शब्द में क्रांति के लिए उत्तेजना झलकती है।'

गदर-क्रांतिकारियों का मार्गदर्शक: सन 1912 में लाला हरदयाल की गदर पार्टी ने 'गदर' नामक पत्र प्रकाशित किया। यह विभिन्न भाषाओं में छपता था और भारतीय क्रांतिकारियों का मार्गदर्शन करता था। सरदार करतारसिंह 'गदर' का संपादन करते थे।

विपिनचंद्र पाल ने अपने मित्र हरिदास के सहयोग से 'वंदेमातरम दैनिक समाचार पत्र का प्रकाशन किया। पूर्ण स्वराज, स्वदेशी प्रचार, विदेशी बहिष्कार तथा राष्ट्रीय शिक्षा इस पत्र की प्रमुख माँग थी। राष्ट्रीय आंदोलन में इस समाचार पत्र का महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसके अलावा 'संध्या', 'बिजली', 'नवशक्ति' 'बंगवाणी' और 'बंगदर्शन' जैसे समाचार पत्रों का योगदान महत्त्वपूर्ण है।

भारतेंदु युग : भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी पत्रकारिता को नई दिशा प्रदान की 'कविवचन सुधा', 'काशी 1867, 'हरिश्चंद्र मैगजीन', 'हिंदी प्रदीप', 'प्रयाग 1878', 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका आदि उनकी मित्र मंडली के वरिष्ठ पत्रकार और निबंधकार थे। स्वदेशी आंदोलन को प्रारंभ करने का श्रेय भारतेंदुजी को जाता है।

तिलक युग-स्वतंत्रता का शंखनाद : तिलक युग में प्रकाशित समाचारपत्रों ने स्वतंत्रता का शंखनाद किया और पूरी शक्ति के साथ क्रांति और विद्रोह की बगावत की। ब्रिटीश सरकार ने अनेक समाचारपत्रों के संपादको तथा पत्रकारों को यातनाएँ दी। यह युग हिंसा और आतंक का युग था। इस युग के प्रमुख समाचार पत्र थे 'देवनागर' कलकत्ता 1907,'विश्वमित्र' कलकत्ता1910 और 'स्वदेश' गोरखपुर 1919 लोकमान्य तिलक का यह नारा 'स्वाधीनता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और उसे मै लेकर ही रहूँगा।' उस युग के प्रत्येक युग का कंठहार बन गया। विष्णु शास्त्री चिपलूनकर और तिलक ने मिलकर 1 जनवरी 1881 में मराठी में 'केसरी' और अँग्रेजी में 'मराठा' नामक साप्ताहिक पत्र निकाले। राष्ट्रीय जागरण को व्यापकता देने हेतु 'केसरी' का हिंदी संस्करण 1903 से नागपुर से प्रारंभ किया गया। 'हिंद केसरी' ने स्वाधीनता आंदोलन में जो भूमिका निभाई है, वह चिरस्मरणीय है।

इलाहाबाद से 1907 में 'स्वराज' साप्ताहिक शांतिनारायण भटनागर के संपादन में प्रकाशित हुआ कुल नौं संपादकों ने 'स्वराज' के संपादन का भार संभाला और पत्र की राष्ट्रीय विचारधारा के कारण गिरफ्तार हुए और कुछ संपादकों को काले पानी तथा राजद्रोह की सजा हुई। 'स्वराज' समाचार पत्र को कैसा संपादक चाहिए इस संदर्भ में जो विज्ञापन निकला था वह इस प्रकार है–'चाहिए स्वराज्य के लिए एक संपादक। वेतन दो सुखी रोटियाँ, एक ग्लास ठंडा पानी और संपादकीय के लिए दस साल जेल।'

गणेश शंकर विद्यार्थी : सन 1913 में कानपुर से गणेश शंकर विद्यार्थी ने 'प्रताप' साप्ताहिक का प्रकाशन किया। गणेश शंकर विद्यार्थी जन-मन के प्रवक्ता थे। अत: 'प्रताप' जन आंदोलन का पर्याय बन चुका था। वे समर्पण, झुकना, रुकना, निराशा आदि से परिचीत थे। 24 मार्च 1931 को 'प्रताप' के प्रधान संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी को हिंदू-मुस्लिम एकता के महान यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी।

गांधी युग: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गांधी एक ऐसे नेता है, जिन्होंने भारत की राजनीति, साहित्य, कला तथा संस्कृति को प्रभावित किया। गांधी जी पत्रकार थे और पत्रकारिता उनके रग रग में समाई थी। उन्होंने पत्रकारिता को सत्य की विजय के लिए महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य साधन माना है। 'यंग इंडिया', 'नवजीवन' और 'हिंदी नवजीवन' समाचारपत्रों के माध्यम से गांधी जी ने अपने विचारों को जनमानस तक पहुचाँया। उनकी एक आवाज पर लोग मर मिटने के लिए तैयार थे। गांधी के नेतृत्व में हिंदी को राष्ट्रभाषा माना गया। जैसे जैसे राष्ट्रीय आंदोलन तीव्र हुआ हिंदी पत्रकारिता सशक्त हुई। इस युग के प्रमुख पत्र थे–'आज' बनारस 1920, 'स्वतंत्र' कलकत्ता 1920, 'कर्मवीर' जबलपुर 1920, 'सैनिक' आगरा 1925, 'विप्लव' लखनऊ 1938 आदि। इन पत्रों ने स्वतंत्रता आंदोलन के अंतिम चरण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सन 1930 के प्रारंभ में स्वतंत्रता आंदोलन को कुचलने के लिए प्रेस कानुन लगाए गए। जिसके कारण अनेक समाचार पत्रों के प्रकाशन बंद हो गए। ऐसी स्थिति में पत्रकारों ने भूमिगत क्रांतिकारी पत्रों को निकाला जिसका नेतृत्व काशी ने किया। बाबुराव विष्णु पराडकर, रामचंद्र वर्मा इन्होंने विप्लवकारी पत्र निकाले। 'रणभेरा', 'शंखनाद', 'चिनगारी' और 'तुफान' जैसे पत्रों ने स्वतंत्रता-आंदोलन को आगे बढ़ाया।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भारतीय स्वतंत्रता-आंदोलन में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका जनता को जागृत करने में,उनमें क्रांति की ज्वाला निर्माण करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। देश के हर कोने से हिंदी समाचार पत्रों ने राष्ट्रीयता की भावना जागृत की। जिनमें मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल से 'उदंत मार्तंड', उत्तर प्रदेश से 'बनारस अखबार', हिमाचल प्रदेश से 'शिमला अखबार', मध्य प्रदेश इंदौर से 'मालवा अखबार' राजस्थान भरतपुर से 'मजहरुल सरुर', दिल्ली से 'पयामें आजादी', गुजरात अहमदाबाद से 'धर्मप्रकाश', पंजाब लाहोर से 'ज्ञान प्रदायिनी', जम्मू कश्मिर से 'वृतांत विलास', उत्तरांचल से 'अल्मोडा अखबार', बिहार पटना से 'बिहार बंधू' हरियाणा गुड़गाँव से 'जीयालाल प्रकाश' आदि प्रादेशिक स्तर के महत्त्वपूर्ण प्रकाशित प्रथम हिंदी समाचार पत्र है।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता के संबंध में डॉ॰ धर्मवीर भरती कहते है, 'स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता की परंपरा और भी परवान चढ़ती गई। वह चाहे क्रांतिकारियों का

 ISSN 0975-735X

सशस्त्र आंदोलन हो या गांधीजी का सत्याग्रह ये अखबार उनके माध्यम थे, जन जागरण के अग्रदूत थे। रोज जमानत माँगी जाती थी, रोज रोज पुलिस छापे मारती थी, संपादक का एक पाँव जेल मे रहता था। संपादक और पत्रकार जनता का आदमी था। अपनी मातृभाषा के गौरव से उदीप्त थी वह पत्रकारिता।'

संदर्भ

1. तिवारी अर्जुन, हिंदी पत्रकारिता का बश्हद इतिहास, पृ॰ 95
2. पवार हरपालसिंह, हिंदी पत्रकारिता और राष्ट्रीय आंदोलन, पृ॰ 184
3. वही, पृ॰ 77
4. हिंदी पत्रकारिता, इतिहास एवं संरचना, पृ॰ 81

मो॰ 09403341652 /9860286711
dryogeshgpatil@gmail.com

देवी-तत्त्व एवं 'सिंह' का मिथकीय संबंध : एक अनुशीलन

ध्यानेंद्र नारायण दूबे (सहायक आचार्य)
प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग
दी०द०उ० गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

ब्राह्मण धर्म विशेषत: वैष्णव धर्म में कण-कण में देवत्व की अनुभूति की धारणा मान्य है। यह देव-तत्त्व दृश्य, अर्द्धदृश्य या अदृश्य क्यों न हो, प्रतीकात्मक, प्रस्तुतीकरण मानवीय चेतना की एक अपरिहार्य क्रिया है और भाषा, इतिहास, विज्ञान, कला, मिथक और धर्म के क्रिया-कलापों की समझ के लिए वह आधार का काम करता है। मिथकान्वेषण के क्षेत्र में तो प्रतीकानुसंधान उनकी पहली और आखिरी शर्त हैं इसमें भी संदेह नहीं कि मिथक बनते-बनते ही बनते हैं और उनका प्रतीकों से गहरा संबंध हैं मनुष्य के भीतर चिति (Psyche) और चेतन (Conscious) है, जो कि निस्संदेह है, तब हमारी चिति को अवचेतन से उठाकर चेतन के यथार्थ धरातल पर लाने के लिए मिथक को प्रतीक और रूपक के माध्यम से अनिवार्य है। मिथक की एक भाषा पूर्व अनिर्वचनीय भाषा तथा अनुभूति है, वह मनुष्य निर्विकल्प मनुष्य, शाश्वत मनुष्य का आर्कीटाइप (प्राक्चेतन) एवं सामूहिक अवचेतन है। मिथकीय चेतना आज भी हमारे संपूर्ण क्रिया-कलापों, चिंतन एवं संस्कारों के मूल में जीवित हैं।[1]

पुरातन प्रतीकों में पशु-पक्षी प्रतीक हों या वानस्पतिक अथवा संयुक्त मानव-पशु प्रतीक उनकी अपनी विलक्षण अर्थवत्ता रही है। इनमें आदिम मानव का संपूर्ण प्रकृति-दर्शन निहित हैं इन प्रतीकों में कहीं देव-कल्पना अभिव्यक्त है, तो कहहीं मानव जीवन का कोई अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष। जहाँ तक संयुक्त मानव पशु प्रतीकों का प्रश्न है, इसकी परंपरा अति प्राचीन है, जो न केवल पुराऐतिहासिक भारत अपितु प्राचीन विश्व की मिस्र, मेसोपोटामिया एवं अन्य भारतेत्तर सभ्यताओं में भी उपलब्ध है, यथा-सैंधव सभ्यता के नर वृषभ एवं नर-व्याघ्र का उदाहरण दिया जा सकता है।[2] इसी तरह सुमेरिया सभ्यता में गिलगामेस कथानक के एर्नाकेडू तथा बेबिलोनिया सभ्यता के वीर इअबानी का स्मरण भी किया जा सकता है। ये दोनों ही आकृति में आधार नर और वृषभ के रूप में प्रदर्शित हैं। यह नर-वृषभ यूनानी भाषा में 'मिनोतौर' कहलाता है, जो प्रजनन शक्ति के देव स्वरूप का प्रतीक रहा है।[3] इस तरह के प्रतीक असीरिया, ईरान, ईजियन, यूनानी तथा रोमन आदि अनेक सभ्यताओं में देखे जा सकते हैं।[4]

जहाँ तक सिंह प्रतीक विशेषत: नराकार सिंह-मुख अर्थात् नरसिंह का प्रश्न है, इसकी विलक्षण परंपरा केवल भारत में उपलब्ध है। ज्ञातव्य है कि वृषभ, अश्व, गज, मृग, आदि की भाँति मृगेंद्र, 'सिंह-प्रतीक' का भी भारतीय कला में खुलकर अंकन किया गया है, जो मौर्य युग

 ISSN 0975-735X

में ही अत्यधिक लोकप्रिय हो चुका था। सम्राट अशोक द्वारा निर्मित चतुसिंह शीर्षक युक्त सारनाथ का स्तंभ विख्यात है। इसके अतिरिक्त साँची, भरहुत आदि विभिन्न स्थानों से ज्ञात इस प्रतीक की लोकप्रियता समझी जा सकती है। इस संदर्भ में शुंगकालीन कला में अंकित मानव-मुख-सिंह और सिंह-मच्छ जैसे विलक्षण संयुक्त प्रतीकों का स्मरण किया जा सकता है।[5]

भारतीय पुरा-ऐतिहासिक काल में सिंह प्रजाति के बजाय व्याघ्र प्रजाति अस्तित्व में रही है। संभवत: इसलिए भारतीय कला के आरंभिक अंकन में यह प्रतीक नहीं है।

सिंह प्रजाति के अस्तित्व का परिचय सर्वप्रथम उत्तर प्रति नूतन काल में होता है। विज्ञान की भाषा में साधारणतया इस प्रजाति को Big Cat कहा जाता है। लियोपार्ड और लॉयन अर्थात् व्याघ्र और सिंह इसी का जाना-पहचाना आधुनिक रूप है। इनमें सिंह इस पूरी प्रजाति में सर्वाधिक शक्तिशाली और श्रेष्ठ माना जाता है। यूरोप में यह पहली बार हिमयुग में देखा गया, लेकिन गुहावासी सिंह भी आधुनिककाल में ही सामने आया, जबकि व्याघ्र सर्वाधिक एशिया में सीमित रहा है। सिंह अपनी शक्तिमान और अपने भयावह रूप के कारण देवताओं के प्रतीक, संरक्षक, सहयोगी अथवा प्रतिनिधि रूप में सुदूर अतीतकाल से ही जुड़ा रहा है।[6] ऐतिहासिक युगों में सिंह उत्तरी अफ्रीकी पश्चिमी एशिया और संभवत: यूनानी क्षेत्रों में दिखाई पड़ते रहे हैं और अब यह प्रजाति अफ्रीका के अधिकांश भागों में सहारा रेगिस्तान के दक्षिणी हिस्सों में और पश्चिमोत्तर भारतीय क्षेत्र विशेषकर काठियावाड़, गुजरात में पाए जाते हैं। ईरान और इराक में इब इनका अस्तित्व नहीं है।[7] सिंह यद्यपि आधुनिक ईरान का राष्ट्रीय प्रतीक रहा है तथापि यह उस भू-खण्ड के लिए अतीत की स्मृति मात्र है। कैस्पियन क्षेत्र के जंगल में कुछ व्याघ्र अवश्य ही पाए जाते हैं।[8]

जहाँ तक इस प्रजाति के प्राचीन विश्व में अस्तित्व और महत्त्व का प्रश्न है, उसके विविध स्वरूप प्रचलित थे। प्राचीन विश्व सभ्यताओं में विशेषकर भारतीय उप महाद्वीप, मध्य एशिया, मिस्र और ईजियन सागर तटीय प्राचीन यूनानी क्षेत्रों में इस पशु-प्रजाति के विविध स्वरूप को कला में किसी न किसी प्रकार अंकित किया गया है। पुरातात्विक द्मश्य-साक्ष्य के रूप में पुरावशेष आज भी एक तरु इसे एक विशिष्ट पशु के रूप में प्रस्तुत करते हैं, तो अधिकांशत: इसकी महत्ता एक प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इस तरह इसका प्रतीकत्व प्राचीन विश्व के परिवेश में तत्कालीन संस्कशति की मूल्यवत्ता के साथ विचारणीय हो जाता है, रोचक बात यह है कि तत्कालीन सचेतन मानव की परिकल्पना में यह संयुक्त मानव-पशु-प्रतीक के रूप में भी यत्र-तत्र अंकित है।

ब्रिटिश संग्रहालय, लंदन में सुरक्षित प्राचीन मिस्र के सम्राट अमेन होतेप तृतीय (1412-13776 ई॰पू॰) के काल की एक विलक्षण प्रतिमा हमारा ध्यान साम्राज्यवादी मिस्र-युगीन दुर्द्धर्ष शक्ति की ओर ले जाती है। उक्त प्रतिमा को 'स्फिक्स' कहा जाता है, जिसकी मुखाकृति मानव की तथा शेष आकृति सिंह समान दिखाई देती है। यह प्रतिकृति निश्चय ही सिंह की श्रेष्ठता को व्यक्त करती है। आधुनिक अमरीकी विद्वान विल्डूरां इस स्मारक से इतना चमत्कृत हुए कि उन्होंने इसके लिए लिखा—यह पाषाण पर मोनालिसा सदृश है।[9] मिस्र के देवशास्त्र में सिंह को सूर्य देवता रों से संबद्ध माना गया है। मिस्र में राज-प्रासादों तथा समाधियों के सम्मुख सिंह द्वार का निर्माण इस आशय से किया जाता था कि इसके कारण दुष्ट आत्माएँ दूर भाग जाएँ।[10]

मिस्र में सिंह शीर्षयुता एक देवी का भी ज्ञान होता है। इसे सखमेत अथवा सखेत कहा गया

है।[11] इस संदर्भ में विचारणीय पक्ष है सिंह और मातृदेवी का संबंध, क्योंकि मातृत्व और उर्वरता के लक्षणों से जुड़ा हुआ सिंह का प्रतीकत्व अन्य अनेक संदर्भों से भी पुष्ट होता है। असीरियाई कला में देवताओं और देवियों को सिंह के ऊपर खड़े हुए अथवा बैठे हुए दिखाया गया है। प्रसिद्ध विद्वान फ्रेजर की धारण है कि फोनीसियावासियों और हित्तियों ने असीरिया से ही इस कला-परंपरा को प्राप्त किया है।[12] इस प्रतीक के माध्यम से जो सांस्कृतिक अंतरावलंबन दिखाई देता है, वह इसी प्रतीक के कारण है। असीरिया के पूर्वकी बेबिलोनिया सभ्यता पर ध्यान दें तो देखेंगे कि वहाँ सिंह को सौंदर्य तथा श्री की देवी इश्तर का प्रेमी बताया गया हैं इस देवी के बारे में कहा जाता है कि वह अपने सौंदर्य और प्रेम से पशुओं को वशीभूत कर लेती थी और उनको अपना अनुचर बना लेती थी। इश्तर के अलावा बेबिलोनिया के युद्ध-देवता 'नर्गल' को इसी मिथक में एक शक्तिमान सिंह के रूप में वर्णित किया गया हैं, ऐसे ही सिंह के रूप में, जो मानव-रक्त का प्यासा हो इस देवता को इरेस-कि-गल का पति कहा गया है। यह देवी अपने भयावह रूप के लिए तथा हेड्स की रानी के रूप में प्रख्यात रही है।[14] यहां मातृ देवी के भयावह रूप के साथ शक्तिमान सिंह स्वरूप युद्ध देवता नर्गल का तादात्म्य अपने आप ही एक विशिष्ट प्रतीकत्व की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करता है।

स्मरणीय है कि बेबीलोन के देवता नर्गल की तरह भारत में साहित्य तथा कला दोनों ही स्तर पर बुद्ध को शाक्य सिंह कहा गया है। वह उनकी श्रेष्ठता को उपलक्षित करता हैं, कुछ विद्वानों के विचार से प्राचीन ईरान, मेसोपोटामिया और मिस्र देश में बुद्ध के आविर्भाव के शताब्दियों पूर्व सिंह एक सौर प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित रहा है।[15]

सिंह प्रजाति ईजियन सागर की तटवर्ती मिनोअन सभ्यता में भी ज्ञात है और इस सभ्यता के उत्कर्ष काल में विविध रूपों में यहां की कला-परंपरा में प्रस्तुत किया गया है। ईसवी पूर्व की दूसरी सहस्राब्दि के मध्य ऐसे विविध साक्ष्य विवेच्य प्रसंग में उल्लेखनीय है। हेराक्लिओन संग्रहालय में सुरक्षित सोने का एक मनका (Bead) उल्लेखनीय है। यह सुवर्ण निर्मित हार का मनका है, जिसे एक छोटी-सी सिंह आकृति के रूप में निर्मित किया गया है।[16] इसी कालखंडकी एक सुवर्ण जटित वर्तुलाकार पाषाण मुद्रा पर सिंह को एक देवता अथवा वीर केक साथ दिखाया गया हैं ये दोनों ही कलाकृतियाँ हेराक्लियोन संग्रहालय में सुरक्षित है।[17] उल्लेखनीय है कि आरंभिक माईसीनियन कालखंड की राजकीय समाधियों में कुछ विलक्षण अवशेष प्राप्त हुए हैं। एक ऐसी ही सुवर्ण जटित पाषाण मुद्रा एथेंस के नेशनल पुरातत्व संग्रहालय में सुरक्षित है। जहाँ एक वीर को खड्ग लिए सिंह से लड़ते हुए दिखा गया है।[18] एक अन्य वर्तुलाकार पाषाण मुद्रा पर वृषभ को विदीर्ण करते हुए सिंह का अंकन हुआ है। ये दोनों ही मुद्राएँ 16वीं-15वीं शताब्दी ई॰पू॰ की मानी जाती है।[19] इस कालखंड के आयुधों पर भी सिंह का अंकन होता था। एक खड्ग पर शिकारियों को धनुष-बाण एवं बरछों के साथ सिंह का शिकार करते हुए अंकित किया गया है।[20] तथा एकक अन्य खड्ग पर सिंहों को तीव्र गति से भागते हुए अंकन किया गया है।[21]

उक्त अंकन निश्चय ही प्रतीक रूप में किसी न किसी उद्देश्य से किए गए हैं, बाद में तो मिथकीय अंकन स्पष्ट रूप से किए जाते रहे हैं। उत्कृष्ट उदाहरण है एक तत्कालीन आभूषण का जो जैस्पर से निर्मित एक अँगूठी का नग है। इस नग में एक दाढ़ीवाला व्यक्ति अपने दोनों हाथों से दो सिंहों को पकड़े हुए हैं। एक सिंह सीधा विवश खड़ा है और दूसरा उल्टा है। व्यक्ति पूरी तरह

 ISSN 0975-735X

तना हुआ है और उसके दोनों हाथ पूरी ताकत से फैले हुए हैं।[22]

ऐसा प्रतीत होता है कि उक्त सभ्यता में शौर्य, पराक्रम अथवा अपने भयावह रूप के कारण सिंह राजकीय परंपरा का प्रतीक बन चुका था। यही कारण है कि सिंहासन-कक्ष में सिंह की भीषण आकृति बनी होती थी।[23] राजप्रासादों का द्वार-सिंह-द्वार के रूप में निर्मित किया जाता था।[24]

प्राचीन विश्व की सभ्यताओं में सिंह के विविध रूपांकनों के संदर्भ में उसके प्रतीकत्व भी विविध हों, यह आवश्यक नहीं है, क्योंकि यह पशु-प्रजाति एक विशिष्ट गुण का वाहक है। यह मूलत: हिंस्र मांस-भक्षी जीव है, जिसकी अपरिमित शक्ति और जिसकी भयावह गर्जना से सचेत प्राणी परिचित अवश्य थे। इस जीव के पौरुष या पराक्रम का एक अंकन वह है, जो इसके पशु-रूप की छवि प्रस्तुत करता है, तो इस मातृदेवी से संबद्ध होना प्रतीकवाद की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। कोई पुरुष, देवता, सम्राट अथवा विशिष्ट व्यक्ति यदि सिंह के समान या सिंह कहे गए तो वह उसके सर्वश्रेष्ठ होने का संकेत है। लेकिन यदि प्रतीक देवी से जुड़ाकर उसे पशु जगत् की अधिष्ठात्री बनाता है तो यह तत्कालीन सामाजिक चेतना का एक विलक्षण संकेत कहा जाएगा। वृषभ की भांति भी संबद्ध रहा है, मातृ-शक्तियों से। इसमें रोचक यह है कि सिंह से संबद्ध देवियाँ अनेक संहारक या रौद्र रूप के लिए भी प्रसिद्ध रही हैं। वह बेबिलोन की इश्तर हो या भारत की सिंहवाहिनी महिषमर्दिनी दुर्गा भारत में महाशक्ति की उपासना में सिंहवाहिनी देवी का महत्त्व शाक्त धर्म की पूर्ण प्रतिष्ठा और उसके सुविकसित पक्ष का द्योतक है।

प्रतीक विद्या के कतिपय नृतत्वशास्त्रियों व प्रतीक विद्या के इतिहासकारों ने इस अवधारणा के मूल में पुरुष-स्त्री के संयोग का परिणाम देखा है। मात्र सिंह ही नहीं अपितु वृषभ, अश्व, गज आदि अन्य अनेक पशु-प्रतीकों के इतिवृत्त पर विमर्श करते हुए एक पूरा शोध-प्रबंध ही इस अवधारणा को प्रस्तुत करता है। डॉ॰ आशीष सेन कृत 'प्राचीन भारतीय कला में पशु-प्रतीकों का अध्ययन' वस्तुत: इस ओर प्राक्चरित (आर्की टाइप) को महत्त्व दिया है तथा भारतेत्तर व भारतीय कला में उपलब्ध सिंह और मातृदेवी संबंधी पुरातात्विक साक्ष्यों को आधार बनाया है। उनका निष्कर्ष सर्वथा स्पष्ट न होते हुए भी इस प्रतीक पर हमें सोचने को बाध्य करता है। वैष्णव धर्म के अवतारवाद में प्रतिष्ठित नृ-सिंह की अवधारणा के मूल बीज-सूत्र भी स्पष्ट नहीं हैं। पौराणिक प्रहलाद आख्यान यद्यपि इसी गुत्थी को सुलझाने का प्रयत्न अवश्य प्रतीत होता है, पर वह एक पक्ष मात्र है। यदि इसे ऐतिहासिक युगों के सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का परिणाम मान लिया जाए, तो इसे आदिम मातृ सत्तात्मक समाज पर ऐतिहासिक पुरुष-सत्तात्मक समाज का वर्चस्व कहा जा सकता है।

आद्या मातृ-शक्ति सिंह और प्रतीक का संबंध भी अति पुरातन है। कम-से-कम उत्तर पाषाण-काल अर्थात् लगभग छठी शताब्दी ई॰पू॰ तक एक ऐसा महत्त्वपूर्ण उदाहरण है कि जहाँ विवस्त्रा देवी (नग्निका) या तो सिंह पर खड़ी प्रदर्शित है अथवा Flanked by Lions Rampant ये दोनों ही अभिप्राय इस कालखंड में भूमध्यसागरीय तटवर्ती परिक्षेत्र में बहुतायत से उपलब्ध हैं।[25]

यथापूर्व निर्दिष्ट इस संदर्भ में फ्रेजर का विचार ध्यान देने योग्य है कि असीरियाई कला में सिंह पर आरूढ़ देवता या देवियों का मिथक बाद में फेनीसियन और हित्तियों ने परिगृहीत किया। यह स्वाभाविक है कि इन दोनों प्रतीकों का तात्पर्य था, प्रेमियों के संबंध से।[26] फ्रेजर ने एक असीरियाई देवी की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया हे, जो सिंहिनी देवी अर्थात् पशु रूप में पूजी जाती थीं और पुरुष देवता को जिसके यौनाचार का सहयोगी बताया गया है।[27] यह लोक-विश्वास

बेबीलोनिया में भी प्रचलित रहा है, जिसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण है देवी इश्तर का[28] सिंह-प्रेम और नर्गल तथा इरेस-कि-गल के तादात्म्य के उदाहरण बेबीलोन में उक्त विश्वास की ही झलक देता है।[29] मातृ-देवी के प्राक्चरित के संबंध में एरिच निउमन के विचार उल्लेखनीय महत्त्व के हैं। निउमन का कथन है कि देवी स्वरूपा स्त्री की भयावह प्रकृति के दो रूप दिखाई पड़ते हैं। वह या तो स्वयमेव भयावह पशु रूपा हो जाती है अथवा उसका भयावह रूप पशु प्रतीक बन जाता है, जो उसका अनुगमन करता है और पराभूत करता है। इस प्रकार वह एक सिंहिनी है–मिस्र की सिंह-देवी की तरह अथवा वह सिंह पर खड़ी या आरूढ़ है।[30]

उपर्युक्त विवेचन से यह परिणाम सामने आते हैं कि पुरुष और स्त्री जो मूलत: भिन्न प्रकृति के हैं, एकत्व का प्रतिपादन करते हैं। उनका यह नैसर्गिक एकत्व प्रतीकों के सहारे की अभिव्यक्ति हैं, किंतु पुरुष-देवताओं की प्रतिमाओं के निर्माणारंभ के साथ ही नर-पशु प्रतीकों को आद्या मातृ-देवियों के सहचर के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा।[31] यह भी मनोरंजक बात है कि वृषभ, महिष और अज जैसे शाकाहारी नर-पशु जहाँ पुरुष देव शक्तियों से संबद्ध दिखाई देते हैं, वहीं सिंह, व्याघ्र आदि मांसभोजी पशु संबद्ध रहे हैं, स्त्री देवताओं से।[32]

मातृदेवी और सिंह प्रतीक के संबद्ध रूप के पुरातात्विक प्रमाण, नि:संदेह विश्व की प्राय: सभी सभ्यताओं में उपलब्ध है। मेसोपोटामिया की पक्षियों के पैर वाली पंखयुक्त मृत्यु और पाप की रात्रि देवी लिलिथ उलूक पक्षियों के साथ एक सिंह पर खड़ी हुई प्रदर्शित है, तो हिंसारूढा हित्ती देवी अपने बच्चे को अपनी छाती से चिपकाए हैं। माइसीनिया के द्वार पर दो सिंहों के बीच देवी को एक वृक्ष अथवा स्तंभ के प्रतीक रूपप में रूपांकित किया गया है। क्रीट में देवी एक जोड़ी सिंहों से खेलती हुई अथवा पहाड़ उठाए सिंह- युगल के बीच खड़ी है तथा एक तरुण उसकी उपासना कर रहा है। फीजिया सभ्यता में भी यही देवी अत्तिस के साथ एक सिंह-युगल के मध्य उपस्थित है। यह विलक्षण प्रतीक, लीसिया, लीडिया, सीरिया, फोनिसिया तथ अन्य स्थानों में भी उपलब्ध है।[33]

विवेच्य प्रतीक परंपरा के संबंध में एक बात और ध्यान देने योग्य है। तद्नुसार मांसभक्षी पशु और मातृ-देवी का संबद्ध होना नैसर्गिक यौनाचार की अवधारणा भी अभिव्यक्त करता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक सी॰जी॰ जुंग के विचार से यौन-कर्म और हत्या समान है तथा मृत्यु का प्रतिनिधित्व करती है।[34] सिंह हो या व्याघ्र, यदि उसे आदमी को चबाते हुए रूपांकित किया गया है, तो उसका अभिप्राय इस दृष्टि से यौन-कर्म की अभिव्यक्ति है।[35] जहाँ पुरातन लोक-विश्वास प्रतिबिंबित हैं, ऐसे रेखांकन (फलक, चित्र) में, जहाँ शीर्ष-भाग भयावह सिंह का है तथा ग्रीवा सहित शरीर का शेष भाग नारी का है, जो पूर्ण नग्न है।[36]

संदर्भ

1.श्रीवास्तव, डॉ॰ जगदीश प्रसाद, 'मिथकीय कल्पना और आधुनिक काव्य', 1985, पृ॰ 1-2

2.मार्शल, 'मोहनजोदड़ों एण्ड दि इंड्स सिविलाइजेशन' पृ॰ 50

3.ब्री फॉल्ट, 'दि मदर्स', भाग-3, पृ॰192, संयुक्त प्रतीक नर वृषभ की परंपरा के लिए विस्तार में द्र॰ त्रिपाठी, डॉ॰ माता प्रसाद त्रिपाठी, भारतीय संस्कृति में वृषभ का प्रतीकत्व, पृ॰ 17-18

4.त्रिपाटी, माता प्रसाद 'भारतीय संस्कृति में वृषभ का प्रतीकत्व', पृ॰ 17-18

5.अग्रवाल, वासुदेवशरण, 'भारतीय कला', चित्र 247, 250, पृ॰ 165

6.बर्नहार्ड, एच॰सी॰ ग्रेजीयक, 'इंसाइक्लोपीडिया ऑफ इवोल्यूशन', न्यूयार्क, पृ॰ 146
7.इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, 126 ए॰ सिंह, आजकल अफ्रीका में दिखाई देते हैं। इस महाद्वीप के सभी हिस्सों में दक्षिण अफ्रीका से लेकर उत्तर में अविसीनियाँ तक और पश्चिम में सूडान के आगे अल्जीरिया तक देखे जा सकते हैं। विस्तार के लिए देखें– 'दी स्टैंडर्ड नेचुरल हिस्ट्री', सं॰ डब्ल्यू॰पी॰ क्राफ्ट, पृ॰ 865–866
8.एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, तत्रैव, पृ॰126
9.विल्डूरा, 'दि स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन, भाग–1, अवर ओरियंटल हेरिटेज, पृ॰166
10.एनसाइक्लोपीडिया ऑफ रेलिजन एण्ड एथिक्स, भाग–1, पृ॰52
11.दीक्षित, एस॰के॰ 'मद्री गॉडेस', पृ॰168
12.फेजर, जे॰जे॰, 'गोल्डेन बाऊ' लंदन, 1914, भाग–5, पृ॰ 137–138
13.वही, भाग–9, पृ॰37
14.मैकेंजी, डी॰ए॰, 'मिथ्स ऑफ बेबीलोनिया एण्ड असीरिया', लंदन, पृ॰ 53
15.रश्न, ए॰के॰, 'पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ ऑर्टस', 1953
16.सकालिया, एच॰डी॰ 'प्री हिस्ट्री ऑफ इंडिया पाकिस्तान', 1974, पृ॰ 213
17.वही, पृ॰ 214
18.वही, पृ॰ 215
19.वही, पृ॰ 252
20.वही, पृ॰ 60–261
21.वही, पृ॰ 275
22.वही, पृ॰278
23.वही, पृ॰ 308
24.वही, पृ॰ 310, राजाप्रासाद की पुनर्रचना में दिखाया गया सिंह।
25.यह सिंहद्वार सुदूर अतीत यूनान का एक अप्रतिम स्मारक माना जाता है। विद्वानों ने स्थानक के रूप में भित्ति शिल्पांकित दो सिंहों के साथ तीन मीटर ऊँचे इस सिंहद्वार को माइसीनिया के शक्तिशाली सम्राटों के शौर्य का प्रतीक बतलाया गया है। पी॰ एंड प्रोटोहिस्ट्र, तदैव, पृ॰ 264, 66, जे॰ कैंपबेल, 'दि मॉस्क ऑफ गॉड, प्रिमिटिव माइथोलॉजी', लंदन 1960, पृ॰140
26.सेन, आशीष, 'एनिमल मोटिव इन ऐसियंड इंडियन आर्ट', पृ॰ 67
27.वही, भाग–5, पृ॰137–138
28.वही, भाग–9, पृ॰ 371
29.दूबे, ध्यानेंद्र नारायण 'नृसिंहोपासना अभ्युदय' 1998, पृ॰ 15–16
30.वही।
31.एनिरिच, न्यूमन 'दि ग्रेट मदर' न्यूयार्क, पृ॰ 67
32.सेन, आशीष, 'एनिमल मोटिव इन ऐसियंड इंडियन आर्ट', पृ॰ 67
33.एनिरिच, न्यूमन, 'दि ग्रेट मदर', पृ॰ 272
34.हिंफिल, बी॰एम॰, 'साइकोलॉजी ऑफ अनकांशस', लंदन, 1922, पृ॰ 67
35.सेन, आशीष, 'एनिमल मोटिव इन ऐसियंड इण्डियन आर्ट', पृ॰ 68–96
36.वही, पृ॰ 69

उषा राजे सक्सेना कृत 'प्रवास में' कथासंग्रह में व्यक्त संवेदना

प्रो॰ शर्मिला सक्सेना (अध्यक्ष, हिंदी विभाग)
कला-संकाय, डी॰ई॰आई॰
दयालबाग, आगरा

'प्रवास में' कहानी संग्रह प्रवासी साहित्यकार उषा राजे सक्सेना का प्रथम कहानी संग्रह है। प्रवासी भारतीय वे लोग होते हैं जो भारत छोड़कर विश्व के दूसरे देशों में जा बसते हैं। इन्हें अपनी सांस्कृतिक विरासत अक्षुण्ण बनाए रखने के कारण ही साझा पहचान मिलती है। उषा राजे सक्सेना सन् 1967 में ब्रिटेन जाती हैं जहाँ वह अपने घर-परिवार, देश और मिट्टी से अलग होकर एक नवीन देश-काल और परिवेश को स्वीकार करती हैं। कहानीकार का संवेदनशील मन नये माहौल में नवीन संस्कारों व दृष्टिकोणों को ग्रहण करता है। परिणामत: उसकी मान्यताएँ बदलने लगती हैं और दोनों देशों की सभ्यता व संस्कृति का द्वंद्व उसकी रचनाशीलता को और धारदार बना देता है–'एक कथाकार की संवेदनाएँ समय की धड़कन को अपने में समो लेती हैं। यह समोना कोई सचेत प्रक्रिया नहीं होती है जिसमें लेखक सचेत रूप से अपने समय के काल-बोध को पाठक तक पहुँचाने के लिए कहानी के माध्यम का उपयोग करे।'[1] वास्तव में नवीन माहौल जिंदगी में नवीन पेचीदगियों को लानेवाला सिद्ध होता है और कथाकार का संवेदन, संस्कार के रूप में अपने परिवेश से प्रभावित होता है, जीता है और उसकी नवीनताओं को ग्रहण कर जीवन की उलझी हुई गुत्थियों और पेचीदगियों को सुलझाता है। बदला हुआ परिवेश व्यक्ति की मानसिकता में भी यथोचित बदलाव लाता है, और वहाँ रहने वाले भारतीयों के 'भारतीय मूल्य' दरकने लगते हैं। टूटने व दरकने की यही प्रक्रिया कुछ नवीन कथानकों, मानकों व मूल्यों के जन्म का पाथेय बनती हैं। कहा जा सकता है कि आपके पात्र तो भारतीय हैं पर उनके मूल्य व मान्यताएँ भारतीय नहीं हैं वे स्थान और परिवेश के अनुकूल ही हैं। लेखिका स्वयं स्वीकार करती है–'ये कहानियाँ भारतीय मूल्यों और मान्यताओं के चौखटे में संभवत: सही नहीं बैठेंगी, परंतु इन मूल्यों और मान्यताओं के कारण ही एक परिवेश का साहित्य दूसरे परिवेश के साहित्य से अलग नहीं हो जाता। इन कहानियों के भीतर रिसी हुई गहरी मानवीय संवेदना उन्हें एक दूसरे से जोड़े रखती है। सात समुंदर पार होने पर भी यही मानवीयता इन कहानियों को समयातीत, कालेतर और समय सापेक्ष बनाती है।'[2] 'प्रवास में' संग्रह की कहानियाँ लेखिका की रचनात्मक एवं साहसपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए जानी जाती हैं। प्रस्तुत कहानियाँ उनके रचनाकर्म में निर्भीकता, खुलापन और भाषागत प्रयोगशीलता को उकेरने में पूर्णत: समर्थ हैं। आपने समय और समाज को केंद्र में रखकर अपनी रचनाओं में आधुनिक युग को जिया है। प्रस्तुत संग्रह में लेखिका की दस कहानियाँ संकलित हैं जो इस प्रकार हैं–प्रवास में, शुकराना, यात्रा में, अभिशप्त, दायरे, वह कौन थी? सफर

 ISSN 0975-735X

में समर्पिता, शक्को और तान्या दीवान। आपकी ये कहानियाँ सात समंदर पार बसे भारतीय जीवन की मर्मस्पर्शी गाथाएँ हैं। कहानियाँ पढ़ने पर किस्सागोई सा आनंद प्राप्त होता है। लेखिका की यायावरी वृति से पाठक इन कहानियों के द्वारा सहज में ही परिचित हो जाता है। आपकी यात्रावश्त्त शैली में लिखी कहानियाँ वास्तव में संवेदनात्मक ऊर्जा से ओतप्रोत हैं, उषा जी एक सजग शिल्पी हैं जिन्हें, पार्क में, ट्रेन में, बस में, हवाई जहाज में हर स्थान पर, हर परिस्थिति में अपनी कहानी दिखाई पड़ती है। कमलेश्वर आपकी कहानियों के विषय में कहते हैं–'उषा राजे सक्सेना की इन कहानियों की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वह कहानियों में खुद किसी तरह के घटनाक्रम या चरित्र उद्घाटन का ताना-बाना नहीं बुनती, उनके पात्र स्वयं उनके पास चलकर अपना रहस्योद्घाटन करते हैं। जो अक्सर सफर में घटित होते हैं।'[3]

'प्रवास में' कहानी मूलरूप से प्रच्छक्त रंगभेद पर आधारित है। प्रत्येक प्रवासी भारतीय गोरे मुल्कों में 'रंगभेद' का दंश झेलता है जिसे वह कभी-कभी आसानी से समझ नहीं पाता। ब्रिटेन जैसे देश में लोग प्रकटत: विनम्र उदार और योग्यता की कद्र करनेवाले हैं। वहाँ की व्यवस्था भी रोजगारी भत्ता, रोगियों की सहायता, बच्चों के प्रति सदाशयता आदि के कारण उदार प्रतीत होती है, लेकिन यह उदारता तभी तक रहती है जब तक कोई एशियाई या अफ्रीकी अपनी योग्यता से उन पर भारी नहीं पड़ता। जैसे ही ऐसा होता है, उनकी प्रकट उदारता ऐसा प्रच्छक्र वार करती है कि योग्यतम व्यक्ति अयोग्य सिद्ध हो जाता है। प्रस्तुत कहानी का नायक शशांक एक ज़हीन और योग्य व्यक्ति है जो बीस-बाईस वर्ष की उम्र में 'लंदन नौकरी की खोज में आया है। ब्रिटिश सिविल सर्विस कमीशन में भी उसने आवेदन-पत्र दिया है।'[4] वह इंटरव्यू में ही नहीं बल्कि इस विदेशी धरती पर स्कल जीवन-यापन करने हेतु ब्रिटिश समाज के अदब-कायदे, रीति-रिवाज तथा मनोभावों के बारे में गहराई से जानना चाहता है। उसने अँग्रेजी शब्दों के उच्चारण, बोलने के सही तरीके तथा भाषा को सुधारने एवं भाँजने के लिए 'ओरिएंटल स्कूल ऑफ लैंग्वेजेज' का सहारा लिया। इतना ही नहीं 'वह अँग्रेज मित्रों के उच्चारण, हास्य और बातचीत के विषय को ध्यान से सुनता और उनसे उन्हीं की तर्ज पर, उन्हीं के विषयों पर साधिकार व सहज ढंग से बातें करने का सफल प्रयास करता।'[5] वह अँग्रेजों को बहुत ही सहृदय मानता था। उसे भारतीयों का अँग्रेजों को रसिस्ट कहकर घृणा करना, समझ नहीं आता। उसे प्रतीत होता था कि सभी अँग्रेज साथी उसके साथ मृदुल व्यवहार करते थे। वे सभी आपस में बातचीत तर्क-वितर्क करते थे–'मतभेद होने पर एक-दूसरे का मजाक उड़ाते हुए उत्तेजित भी हो लेते हैं पर दूसरे दिन फिर अच्छे दोस्त हो जाते हैं। कई बार रंग और नस्ल पर भी करारे व्यंग्य और तानेबाजी हो जाती है (किंतु ऐसा तो भारत में भी होता है। हम लोग गुज्जू, बिहारी, बंगाली और दक्षिणियों का भी तो मजाक उड़ाते हैं।'[6] अँग्रेज भी हमारी तरह इंसान हैं, उनमें भी वही सब प्रवृतियाँ हैं जो हममे हैं। ऑफिस में लंच में यदि वह कभी बातों में रम गया तो बॉस उसका झूठा बर्तन तक धो देता है। कई बार उसके मित्र बचा हुआ झूठा भोजन तक खा लेते हैं–'मैंने अँग्रेजों में सदा मानवता, सहृदयता और उदारता को ही पाया है। एक्चुअली वी सफर फ्राम इनफीरियारिटी कॉम्प्लेक्स, स्लेव मेंटेलटी एंड एन एटरनल इनसिक्यूरिटी।'[7] शशांक ने ब्रिटेन में थोड़े ही समय में दोनों समाजों में अपना विशेष स्थान बना लिया था। ऑफिस में सभी उसकी याद्दाश्त, तत्कालबुद्धि, हाजिरजवाबी तथा समकालीन राजनीति के प्रति उसके मौलिक दृष्टिकोण और ज्ञान के कायल हो गये थे। विभाग के कोड बुक के नियम, अधिनियम

और उनकी व्याख्याएँ तो जैसे उसे जबानी रटी हुई थीं। लिहाजा उसकी पदोक्ति हर तीसरे साल होती रही। अभी हाल ही में उसकी ब्रिटिश सिविल सर्विस के एक ऐसे महत्त्वपूर्ण विभाग में नियुक्ति हुई थी, जिसमें अब तक कोई प्रवासी प्रवेश नहीं पा सका था। वहाँ के समाज में उसे विशेष सम्मान प्राप्त हो रहा था। थोड़े दिन में उसमें दंभ और अहंकारयुक्त हठ के लक्षण भी परिलक्षित होने लगे थे। शशांक उस शिखर तक पहुँच गया था जहाँ आज तक कोई प्रवासी नहीं पहुँच सका था, किंतु अचानक शशांक पर इनक्वायरी सेट अप हो गई। लोग यहाँ तक कहते हैं, 'कि शशांक ने 'ऑयल बैरन' से मिलकर 'मिलियन' बनाया है।'[8] किंतु शशांक इन बातों का कोई जवाब नहीं दे रहा था। वह पता नहीं कहाँ चला गया है, दिखाई नहीं देता। उसकी पत्नी से पूछने पर उसने बताया, 'दीदी, उनके साथ बहुत अन्याय हुआ। उन्होंने सदा सबका भला चाहा। गगगगग जो पहले उनके गुण थे, बाद में वही उनके अँग्रेज साथियों और अधिकारियों की आँख की किरकिरी बन गई।'[9] संभवत: वे लोग उसकी बुद्धि और जानकारियों से भयभीत हो उठे। शशांक पर चुपचाप नजर रखी जाने लगी। ऑफिसवालों ने कोई चाल चली, क्या हुआ, कैसे हुआ नही मालूम। 'उनकी प्रतिष्ठा, विश्वास और मान्यताओं को ऐसी ठोकर लगी कि वह अस्थिर हो उठे और उन्हें नींद आनी बंद हो गई। वह अत्यंत दु:खी हताश और अशांत हो गए। सारा आत्मविश्वास एक झटके में खंड-खंड हो गया।'[10] बहुत दिन तक शशांक ने अपनी पत्नी को भी इस दु:ख से परिचित नहीं कराया। अंर्तमुखी हो स्वयं से लड़ते-लड़ते हार गया। स्टैब्लिशमैंट ने उस पर अविश्वसनीयता का आरोप लगाकर अनंत काल के लिए वेतन सहित निलंबित कर दिया। ऐसे में शशांक सब-कुछ त्यागकर बौद्ध भिक्षुओं के पास मन की शांति के लिए चला जाता है।

'शुकराना' इस संग्रह की दूसरी कहानी है जिसमें लेखिका ने शब्दों के महत्त्व को बताया है। उनका मानना है कि यदि शब्द की महिमा पकड़ में आ जाए तो जीवन का सार मिल जाता है, ईश दर्शन हो जाता है और शायद निर्वाण भी मिल जाता है। शब्द हमारे साथ किसी देवदूत की तरह रहते हैं जो हर मुसीबत में रास्ता दिखाते हैं। शब्द कभी-कभी किसी के जीवन में आमूल परिवर्तन भी ले आते हैं। 'शुकराना' औरे उसका परिवार बोसनिया से लंदन आता है। शुकराना को थोड़ी-बहुत अँग्रेजी आती है। ये गरीब लोग हैं, स्कूल जाकर पढ़ना चाहते हैं, 'पर वहाँ उसे (भाई) कुछ समझ में नहीं आता। उसे अँग्रेजी नहीं आती और वहाँ कोई बोसनियन नहीं जानता। लोग उसे गूँगा, बेवकूफ और पागल समझते हैं (लड़के उसे मारते हैं। 'बुली' (दादागिरी) करते हैं इसलिए वह स्कूल से भाग आता है। टीचर्स सहृदय हैं, पर उससे संप्रेक्षण नहीं कर पाती हैं। गगगगग खेल के मैदान में बच्चे इसकी मारकुटाई करते हैं। हर रोज यह बदन पर नीले दाग लेकर आता है। सच हमारी जिंदगी ही एक दाग बनकर रह गयी है।'[11] इसी प्रकार शुकराना भी लगभग साल भर पहले स्कूल जाती थी। वहीं उसने अँग्रेजी सीखी। पर फिर उसे माँ को अस्पताल ले जाना पड़ता था, जो कि पेट से थी। घरेलू सामान की खरीद फरोख्त व किसी भी सरकारी काम के लिए उसे ही घरवालों के साथ जाना पड़ता था क्योंकि शुकराना के अतिरिक्त और लोग टूटी-फूटी अँग्रेजी भी नहीं जानते थे अतैव उसकी शिक्षा रुक गई। उसके पिता केब ड्राइवर हैं, पर माँ को उस पर यकीन नहीं-'उसे कार चलानी ही नहीं आती। केब ड्राइवर केसे बन सकता है। फिर वह माँ से ही पैसे माँगता है।'[12] फिर अपनी माँ के बारे में बेझिझक बताती है, 'वह मर्दों के साथ सोती है और उनसे पैसे लेती है। मुझे भी शायद यही काम करना पड़े। पर मेरी माँ कहती है

कि अगर यही काम मैंने किया तो वह मेरा मुँह कभी नहीं देखेगी और खुदखुशी कर लेगी।'[13] तब लेखिका उसे समझाती हैं कि उसकी माँ ठीक कहती हैं, क्योंकि उसके लिए यह बहुत बड़ी मजबूरी की बात है। एक माँ अपने बच्चों को भूखा नहीं रख सकती। लेखिका स्पष्ट कहती हैं कि तुम्हें अभी स्कूल जाना चाहिए और पढ़-लिखकर कोई नौकरी करनी चाहिए–'तुम सफाई कर्मचारी बन सकती हो, गार्डनिंग कर सकती हो, बस कंडक्टर बन सकती हो। इन कामों के लिए किसी खास योग्यता की जरूरत नहीं होती।'[14] इस मुल्क में 16 वर्ष तक हर बच्चे को कानून स्कूल जाना होता है। बच्चों के साथ बदसलूकी करने की बहुत कड़ी सजा होती है। छुट्टी के दिनों में भी बच्चों को लाइब्रेरी में बिना किसी खर्चे के दस्तकारी दिखाई जाती है। वह आगे कहती हैं, 'आत्मसम्मान से जीने के लिए मेहनत करनी पड़ती है, बेटी। मेहनत से मत घबड़ाना। ईश्वर भी उसकी मदद करता है जो अपनी मदद खुद करने को तैयार होते हैं।'[15] संभवत: इन्हीं शब्दों के प्रभाव से आज शुकराना डस्ट कार्ट ड्राइवर है और उसका जीवन नवीन संभावनाओं से भर गया है।

'यात्रा में' कहानी इस संग्रह की महत्त्वपूर्ण कड़ी है। यह एक ऐसे पिता की कहानी है जिसमें वह बिना विवाह और बिना पत्नी के, अपने प्रेम के सुकुमार पुष्प 'ऋचा' की परवरिश बड़े ही मनोयोग से कर रहा है। वह एक श्यामवर्णी मोहक युवक है और उसकी पुत्री, 'ऋचा! कितनी प्यारी बच्ची है–गोरी चिट्टी, बिल्कुल मेम सी।...छुट्टी मनाने दो सप्ताह के लिए रोमानिया जा रहे हैं।'[16] यह बच्ची उसके अबोध, प्रथम प्रेम का प्रतीक है जो उसे अचानक ही अठारह वर्ष की उम्र में हुआ था। बच्ची की माँ अप्रतिम रूपसी थी। वह एक सर्कस में 'ट्रपीज' करती थी। ग्यारह वर्ष की साधना के पश्चात उसका प्रथम प्रदर्शन ट्रपीज पर था, जिसमें वह प्रात:काल पार्क में मिले युवक को आमंत्रित करती है। वहाँ सर्कस में, 'वह एकाग्रचित उस तनी हुई रस्सी पर चल रही थी, उसके हाथ में संतुलन के लिए कोई उपकरण नहीं था।... मेरे मुख से तो तब चीख निकल गई जब वह ट्रपीज पर तेजी से झूलती हुई हवा में कलाबाजियाँ लगाती नीचे तनी हुई रस्सी पर खड़ी हो चक्राकार घूमने लगी।...लोग जोर-जोर से तालियाँ बजा रहे थे। और वह नटनी सबके प्रणाम झुक-झुक कर बटोर रही थी।'[17] ऐसी प्रेयसी के साथ वह संसार के समस्त बंधनों से मुक्त एक-दूसरे के आंतरिक संसार में प्रवेश कर गये थे। इसके पश्चात् वह उस रात सर्कस के अंतिम प्रदर्शन के बाद वहाँ से चली गई। कोई उसका पता नहीं बता सका। दो वर्ष के बाद वह अचानक 'कैंब्रिज विश्वविद्यालय' के ऑफिस में मिली। वह विदेशी बाला शिक्षा को एक तपस्या की तरह मानती है, 'शिक्षा एक तपस्या है, पूजा है, आराधना है, उसको कभी भी खंडित नहीं करना मुझे वचन दो।'[18] नृत्य व योगाभ्यास की शिक्षा उसने भारतीय गुरुओं से प्राप्त की है इसीलिए भारतीय मूल्य व मानदंड उसकी रग-रग में बस गए। वह बताती है, 'नृत्य व योगाभ्यास की शिक्षा मैंने शंभु महाराज से ली थी तथा ट्रपीजियम नंदलाल नटवर जी के संरक्षण में।'[19] उस दिन संध्या समय वह उसे बताती है, 'उस दिन मैंने तुम्हारा वरण अपनी इच्छा से किया था। मैंने तुम्हारी कामना की थी। संभवत: वह स्वांति नक्षत्र था। तुम्हारी पुत्री एक वर्ष की हो चुकी है।...नहीं मैं विवाह नहीं कर सकती। मैं मुक्त रहना चाहती हूँ। मेरी अपनी महत्वाकांक्षाएँ हैं। मैं नटनी हूँ। पक्षी की तरह खुले आकाश में उड़ना चाहती हूँ।'[20] इसके पश्चात् वह उसे समझाती है कि चार वर्ष तक जब तक तुम्हारी शिक्षा पूर्ण न हो जाए मैं बच्ची को संभालूँगी पर उसके पश्चात् अपनी पुत्री की शिक्षा-दीक्षा व संस्कार का भार तुम्हें स्वयं उठाना होगा। इस विचित्र परिस्थिति के विषय में वह

अपनी उदार माँ को बताना चाहकर भी नहीं बता पाता। जबकि उसकी माँ बुद्धिमती होने के साथ समाजसेविका भी है। वह सोचता है, 'माँ भी भला केसे अपने एकमात्र अविवाहित पुत्र की अवैध पुत्री को स्वीकार कर सकती थी। समाज में उसका आदर-सम्मान था। उनके लिए यह आत्महत्या सा था।'[21] काफी समय तक वह चुप रहा फिर उसकी माँ जब उसके पास रहने कैंब्रिज आईं तो उन्हें पता चलता है। उन्हें तेज झटका लगता है। वह अपने पुत्र से बहुत कुछ कहती हैं, समझाती है। पर समाज सुधारक माँ, मानवता के नाते अपनी पौत्री को संरक्षण व ममता देने के लिए तैयार नहीं होतीं। भारतीय परिवेश से जुड़ी एक माँ विदेश में रहने के बाद भी समाज की संकीर्ण मनोवृत्ति को त्याग नहीं पाती और अपने पुत्र की अवैध संतान को अस्वीकार कर देती है।

इस संग्रह की कहानी 'अभिशप्त' एक ऐसी अनूठी कहानी है जो एक कलाप्रिय बाला के अभिशप्त जीवन की करुण कथा को स्पष्ट करती है। अभिशप्त बाला की माँ जो एडिनबरा की इनफर्मरी अस्पताल में छात्र नर्स थी। चिकित्सा के लिए आये, 'एक श्यामवर्ण महाराष्ट्रियन ब्राह्मण ने उनके मन को ऐसा मोहा कि वह उससे मित्रता करने के लिए, उससे हिंदी एवं भारतीय संस्कृति की शिक्षा ग्रहण करने लगी।'[22] उस सुदर्शन युवक की ओर आकर्षित हो वह अपना प्रेम प्रस्ताव उसके समक्ष रखती है। तब वह उसे बताता है कि बचपन में उसका विवाह हो चुका है पर अभी पत्नी की वय छोटी होने के कारण गौना नहीं हुआ है। वह अपनी पत्नी से वचनबद्ध है। किंतु वह फिर भी उसकी ओर खिंचती चली गई–'अंत में वही हुआ। वह उनका प्रणय अस्वीकार नहीं कर सके। उन्होंने आपसी सहमति से गंधर्व विवाह किया।'[23] वह केवल दो वर्ष के लिए छात्रवृत्ति पर स्कॉटलैंड आए थे। वह (माँ) गर्भवती हो जाती है। युवक निश्चित समय पर भारत लौट जाता है पर उसे इस विषय में कुछ नहीं पता होता। माँ के इस दुस्साहस से समाज ने उनका बहिष्कार कर दिया। फिर वह बिना किसी को बताये लंदन आ गई–'लंदन, अत्यंत विशाल, बहुरंगी, बहुभाषीय और बहुसंस्कृति का केंद्र था। वहाँ अवैध संतान को फैशनेबुल लोगों के बीच 'विशेष प्रेम से उत्पन्न संतान' की संज्ञा दी जाती थी।'[24] अविवाहित माँ को मिलने वाली सभी सुविधाएँ उसे 'वेलफेयर स्टेट' से मिल गईं। यहाँ उसका जन्म होता है पिता की भाँति श्यामवर्णा व खूबसूरत थी। उसकी माँ ने अपनी इस बिटिया को भारतीय मूल्यों के अनुसार पंडित विवेकानंद से शिक्षा दिलवाई–'मुझे भारतीय संगीत, संस्कृति, भाषा एवं नृत्य की शिक्षा मिलने लगी। पंडितजी ने माँ को पिता का व मुझे पितामह का वात्सल्य दिया। मैं उन दस वर्षों में कब कुरूप कीड़े से तितली बन गई, मुझे पता ही न चला।'[25] विदेश में इलाज के लिए आये एक भारतीय पिता की आसक मृत्यु से पूर्व अपने पुत्र रत्नमणि के विवाह की इच्छा ही उनके विवाह का कारण बनी। रत्नमणि एक स्वर्णकार होने के साथ हीरे पक्के के व्यापारी व कलाविद थे। तभी उनके आनंद को स्वर्णकिरीट लगाने आई उनकी पुत्री। वास्तव में अब जीवन खुशियों व आनंद से परिपूर्ण हो गया था। पति के प्यार से जीवन आहलादित हो उठा था। तभी एक काले दिन, बाबरी-ध्वंस में उसके पति की मौत हो जाती है। वह संज्ञाशून्य हो अपनी छह वर्षीय पुत्री व माँ समान सास के पास अचेतावस्था में न जाने कितने दिन रही। फिर सास उसकी कम उम्र, अप्रतिम सौंदर्य व जीवन से पलायन वादी वृत्ति से सहम गई और उसका पुनर्विवाह अपनी बहन के दुहाजू देवर से करा दिया–'युवती कुछ कम उम्र की शायद चौबीस पच्चीस साल की और वह पुरुष हर हाल में पैंतीस चालीस या उससे कुछ अधिक ही रहा होगा।'[26] उस पुरुष के बच्चे लगभग उसके बराबर

 ISSN 0975-735X

होंगे। यह बेमेल जोड़ी मन व कलाप्रियता में भी बेमेल थी। जहाँ वह कोमल मृसण भावनाओं से युक्त थी तो वह इनसे नितांत शून्य केवल व्यापारी कठोर हृदय पुरुष था। वह अपनी माँ (सास) व बिटिया को नार्वे कुछ दिनों के लिए बुलाना चाहती थी। तभी उसे पता चला कि, 'विवाह से पहले ही मौसी से अनुबंध हो चुका था कि तुम्हारी सास और लड़की कभी भी नार्वे नहीं आएँगी।'[27] वह स्तब्ध हो जाती है तभी उसके द्वितीय पति की संतानें छुट्टियों में घर आती हैं। उनकी पुत्री उसे देखकर क्रुद्ध हो जाती है और माता के रूप में अस्वीकार कर देती है–'तुम मेरी माँ नहीं हो। तुम मेरी माँ का मंगलसूत्र नहीं पहन सकती हो। ...तुम उनकी रखैल हो रखैल। मेरे विलासी पिता के खेलने के लिए एक देह।'[28] और फिर उसे उस घर से निकाल देती है। अभिशप्त जीवन का एक और दुर्भाग्यपूर्ण पक्का खुल जाता है। तदुपरांत वह किसी प्रकार अपनी सास व बेटी के पास पहुँचती है और प्रथम पति के व्यापार को सँभालकर अपना नवीन जीवन आरंभ करती है। अब 'रत्नमणि ज्वैलर्स' लंदन में खुला शोरूम ही उसके जीवन का आधार है। वास्तव में जीवन एक ऐसा चित्तवृत्त है जो कभी पूरा नहीं होता। हाँ उसे पूर्ण करने का प्रयास हम जीवन भर करते हैं, और करना चाहिए, यही कर्म है, यही संसार है।

'दायरे' कहानी में लेखिका ने एक ऐसी लड़की को उकेरा है जो बहुत ही सादी और बेफिक्र किस्म की है, जिसे मर्दों में कोई दिलचस्पी नहीं है, जिसके सपने आम लड़कियों से बिल्कुल अलग हैं। वह जहनी तौर पर बिल्कुल अकेली है। उसके माता-पिता ने उसका विवाह कर दिया। अपने पति के साथ वह सात समंदर पार बरतानिया के शहर बैडफोर्ड आ गई है जहाँ उसकी कौम के और लोग भी रहते हैं। आमतौर पर वह, 'या तो अपने घर का काम करती या अपने शौहर का ख्याल रखती। हाँ, कभी-कभी खिड़कियों पर सफेद जालीदार पर्दों को हटाकर. ..स्कूल जाते उछलते-कूदते बच्चों को देखकर, अपने आनेवाले दिनों के सपने बुनती।'[29] उसका पति उसे बहुत चाहता था। उसे घरेलू तूफान पसंद नहीं थे, इसलिए उसने अपना एक दायरा बना लिया था। उसके पति को भी उसका दायरे में रहना अच्छा लगता था। धीरे-धीरे वह पति, बच्चों व अपने परिवार की जिम्मेदारियों में लीन हो गयी। उसका शौहर काम के सिलसिले में मिडिल ईस्ट चला गया, तब उसके पास काफी खाली समय रहने लगा। ऐसे में वह नज्में लिखने लगी जो बैडफोर्ड से निकलने वाले कई मादरे जुबान के अखबारों और रिसालों में निकलने लगीं। उनकी नज्मों के कोरे दर्द, ख्याल, मौसीकी की खूब चर्चा की गई। जल्द ही लोग उसकी नज्मों को पहचानने लगे और वह एक उभरती शायरा बन गई–'इसी बीच अखबार नवीसों ने उससे टेलीफोन पर इसरार किया कि वह उसके नज्मों की किताब छापना चाहते हैं।'[30] इसके पश्चात् वह एक मशहूर पब्लिशर से मुलाकात करने गई जहाँ उसने अपना परिचय देकर अपनी नज्म की पुस्तक छापने की बात की। वह पब्लिशर उसकी खूबसूरती को निहारता रहा और उसकी नज्मों को भी धीरे-धीरे पढ़ता रहा। इसी प्रकार काफी समय बीत गया। दफ्तर के काफी लोग घर चले गए। फिर वह उसे छूने लगा और उसके जिस्म के अंदर सोई हुई स्त्री को जगाने की कोशिश करने लगा, किंतु वह निश्चेष्ट बैठी रही। वह धीरे- धीरे उसे कहने लगा कि पब्लिशर और शायरा के बीच में प्रेम के जिस्मानी संबंध हो जाते हैं। लेकिन वह स्त्री अपने दायरे में बंधी किसी प्रकार के समझौते के लिए तैयार नहीं हुई वह मर्द धीरे-धीरे उस पर डोरे डाल रहा था। जब वह बोली–'मेरा जिस्म तो मेरे शौहर के लिए है। मैं अपना जिस्म देने के लिए तैयार नहीं।'[31] और वह स्पष्ट रूप से

अनैतिक संबंध बनाने के लिए मना कर देती है। उसकी स्पष्टता को जानकर वह पब्लिशर हैरान रह जाता है कि आज के समाज में भी कोई दायरे में बंधी इतनी पाकीजा स्त्री हो सकती है? मर्द को भूख थी जिस्म की और औरत को भूख थी एक अच्छे दोस्त की दोनों की जरूरतों में जाती फर्क था। मर्द उसकी पाकीजगी को नमन करते हुए उसके माथे पर मोहब्बत का बोसा धर देता है। निश्चित रूप से स्त्री देश में रहे अथवा विदेश में यदि वह अपनी जड़ों, अपने संस्कारों और अपने दायरे से परिचित है तो उसे उसकी इच्छा के बिना कोई भी मर्द नीचे नहीं गिरा सकता।

इस संग्रह की 'वह कौन थी' कहानी एक सामान्य कहानी है जोकि विदेशी सर-जमीन पर लिखी गई है। इस कहानी में एक रहस्य छुपा हुआ है, जोकि कहानी को पूर्णत: बाँधने में समर्थ नहीं हैं। एक खूबसूरत महिला जिसके वजूद में कशिश है हल्के कदमों से चलती हुई लेखिका के सामने कटे दरख्त पर बैठ जाती है और वह बताती है कि जब वह 12 वर्ष की लड़की थी उस समय उसने एक शायर को गाते हुए सुना और वह उसके गाने पर विभोर हो गई। उसकी नस-नस में उस दिलकश शायर की आवाज उतरती चली गई, जिसे वह भुला नहीं पाती। धीरे-धीरे वह बड़ी हो जाती है और उसका विवाह हो जाता है। विवाह के बाद वह पति के साथ विलायत चली आती है। उसका पति उसकी मासूमियत पर फिदा रहता है। वह भी अपने खाली समय में लेखन का कार्य करने लगती है। इसके पश्चात् बच्चे बड़े हो जाते हैं बच्चों का विवाह हो जाता है लेकिन उसका मन उसी शायर को महसूस करता है जिसका तसव्वुर उसने 12 वर्ष की उम्र में किया था। वह अपनी कहानी सुनाते-सुनाते अधूरी कहानी छोड़कर चली जाती है। लेखिका रात भर उसके बारे में सोचती रहती है फिर अचानक ही 'तमाम जरूरी और गैर जरूरी खतों के साथ एक मोटा सा रजिस्टर्ड लिफाफा भी था। कौतूहल वश सबसे पहले मैंने उस मोटे लिफाफे को खोला खोलते ही एक पत्र मेरी चाय की प्याली में गिरते-गिरते बचा।'[32] उस खत के साथ एक फोटो और नज्मों का मसौदा भी था। वह व्यक्ति उस पत्र में लेखिका से गुजारिश करता है कि कुछ दिनों पहले उसकी बीवी जो नेक और पाक ख्यालों की थी एक दुर्घटना के कारण जक्तनशी हो गयी, की नज्में किसी पब्लिशर से बात करके एक किताब के रूप में छपवा दें। पत्र पढ़ने के उपरांत जैसे ही लेखिका उस फोटो को देखती है वह सकते में आ जाती है, क्योंकि यह वही खातून थी-'जो मुझे कल पार्क में अपनी अधूरी कहानी सुना गई थी...और जिसके लिए मैं रातभर बैचेन रही। वह कौन थी?'[33] यह कहानी किसी भी प्रकार का रहस्य, रोमांच उत्पन्न नहीं करती बेहद सादी-सी विदेशी धरातल पर लिखी हुई, विदेश में बिखरे प्रकृति सौंदर्य को उकेरनेवाली कथा है।

इस संग्रह की 'सफर में' कहानी भी एक सामान्य कहानी है जिसमें लेखिका किसी कार्य से भारत आती है और उन्हें अनारक्षित सामान्य रेल के डिब्बे में गरीब लोगों के बीच यात्रा करनी पड़ती है। कथा में लेखिका बताती है कि उन्होंने गरीबी को इससे पहले कभी महसूस नहीं किया। साथ बैठे लोग उन्हें गंदे, अनपढ़, गँवार लगे। उन्हें हिंदुस्तान की गंदगी भी बहुत घिनौनी लगी-'वे लोग मुझे गंदे, अनपढ़ और गँवार लगे। मुझे उनकी सफाई की आदतों पर शक था। यो बहुत कोशिशों के बावजूद मुझे हिंदुस्तान की गंदगी और फूहड़पन पर मितली सी आती थी।'[34] सामने सीट पर एक मासूम सी 22 वर्षीय महिला बैठी थी, जिसके एक बच्ची गोद में थी दूसरी 14 महीने की थी तीसरी पेट में। वह स्त्री अपने बच्चों के साथ-साथ उसका भी ध्यान रख रही थी। उसके बैठने की चिंता कर रही थी, उसके खाने की चिंता कर रही थी और उसके सोने की

चिंता कर रही थी। अब वे गंदे लोग भी उसे अच्छे लगने लगे थे और वह उनके मोम से कोमल दिल को महसूस करने लगी थी–'मुझे लगा कि इन गंदे लोगों में भी एक तरह की सफाई है। भीड़ उनकी मजबूरी है, पर उसमें भी एक अदब है, एक तरतीब है, जिसमें भाईचारे और इंसानियत की महक है।'[35] वह सो जाती है तो उन्हें एक सपना आता है, जिसमें वह औरत डूब रही है और समुंदर के सैलाब में वह उसे बचा नहीं पाती। उनकी आँख खुल जाती है अब लेखिका को वह औरत अच्छी लगने लगती है। जब वह औरत उतरनेवाली होती है तो उसकी मुट्ठी में अपना पता थमा देती है और कहती है मुश्किलों में मुझे याद करना। कुछ समय के पश्चात् वह लंदन वापस आ जाती है। एक दिन मथुरा से उन्हें पोस्ट आती है जिसे किसी शबनम ने लिखा था। उस पत्र में उसने लिखा था कि जब आपको यह पत्र मिलेगा वह खुदखुशी कर चुकी होगी। उसकी गोद की बच्ची को उसके पति ने गला घोंट कर मार दिया था। वह अपनी बड़ी बेटी को मुमानी के पास भेज चुकी थी। उसका आग्रह था कि किसी प्रकार उस बच्ची को मुमानी के पास से लेकर किसी यतीमखाने में पहुँचा दे जहाँ कि उसका पिता उसे खोज न सके। बस कहानी यहीं समाप्त हो जाती है। लेखिका उस बच्ची को अपनी माँ के पास भिजवा देती है और बस वह वहीं पलने लगती है। लेखिका की सदाशयता व पर दु:खकातरता इसमें झलकती है।

इसी प्रकार 'समर्पिता' और 'तान्या दीवान' भी इस कथा संग्रह की दो कहानियाँ हैं, जोकि पाठकों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं छोड़तीं। 'तान्या दीवान' एक ऐसी लड़की है जो दस वर्ष पूर्व डिग्री पूरी करने लंदन आती है। उसके माता-पिता अपनी हैसियत के अनुसार उसे फ्लैट और शेयर सर्टिफिकेट दे देते हैं। यहाँ रहकर तान्या बहुत तरक्की करती है और अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व का निर्माण करती है। वह व्यवहारकुशल होने के साथ-साथ खुशमिजाज लड़की भी है जो अपने माता-पिता को प्यार करती है। माता-पिता भारतीय मूल्यों के पोषक हैं। वह उससे विवाह करने को कहते हैं। वह नहीं चाहते कि विदेशी पुरुष मित्रों के साथ अपने संबंधों को इतना आगे बढ़ा ले कि वहाँ से लौटना उसके लिए मुश्किल हो। उसके पिता गोरे पुरुष को उसका पति नहीं देखना चाहते। तान्या स्वछंद जीवन जीना चाहती है। वह विवाह नहीं करना चाहती। वस्तुत: भारतीय और विदेशी मूल्यों की टकराहट इस कहानी में साफ सुनाई देती है।

इस कथा संग्रह की कहानी 'शन्नो' बहुत ही महत्त्वपूर्ण है 'अभिशप्त' और 'शन्नो' की नायिकाएँ अपने परपीड़क तथा गैर जिम्मेदार पतियों के साथ झेली यातना के दौर को लांघ कर, अपने लिए आश्वस्तिपूर्ण और सुखद जीवन का विकल्प चुन लेती हैं। वही 'फ़र में' की नायिका अपने पति के जुल्मों के कारण आत्महत्या पर मजबूर हो जाती है। शन्नो का पति सुभाष विवाह के कुछ समय बाद ही चुपचाप 'शन्नो' विधवा बीमार माँ और अपने बच्चों को छोड़कर कहीं चला जाता है। सास अपने बेटे को कोई दोष नहीं देती बल्कि शन्नों को ही कोसती है, 'मरी उसे खुश रखती तो भला वो घर छोड़कर क्या जाता? दान दहेज का मोह छोड़ खूबसूरत देख सिर्फ दो जोड़ों में ब्याह लायी थी'[36] कुछ वर्षों के पश्चात् उसकी सास की मृत्यु हो जाती है उसके पास रुपए पैसा कुछ नहीं रहता। फिर वह आर्य समाज कन्या पाठशाला में संस्थापक आनंद बाबू के घर काम माँगने जाती है और वह वहाँ काम करने लगती है। आनंद बाबू का उसके घर आना-जाना आरंभ हो जाता है। तभी अचानक न जाने कहाँ से उसका पति सुभाष वापस घर आ जाता है। अब बच्चे तेरह वर्ष के हो गये हैं। सुभाष मीठी-मीठी बातों में फंसा कर शन्नो से नौकरी छुड़वाकर सब कुछ बेचकर उन्हें अपने

साथ ले जाना चाहता है। लंदन की तारीफ में वह जमीन आसमान एक करने लगा था। लंदन के जीवन के सुहाने सपने उन्हें दिखा रहा था–'बच्चों की पढ़ाई फोकट में, मकान फोकट में, दवा फोकट में नौकरी नहीं तो सरकार पैसे देगी। वहाँ तो भिखमंगे भी कोट पैंट पहनते हैं।'[37] इसके पश्चात् वह उन्हें लंदन ले जाता है चार-पाँच महीने में सब व्यवस्थित हो जाता है। बच्चे लंदन की रंगीनियों में लिप्त हो जाते हैं। पति और बेटे गोरी मेमों के पीछे चक्कर लगाने लगते हैं। बेटी लड़कों के साथ घूमने लगती हैं। यदि वह उन्हें मारना चाहती हैं या रोकना चाहती हैं तो बच्चे उसका हाथ पकड़ लेते हैं–'देख मम्मी, आज तो मार लिया, दुबारा कभी हाथ मत उठाना। यहाँ अठारह साल की लड़की बालिग होती है। कई लड़के मेरे दोस्त हैं। चाहूँ तो अभी घर छोड़ दूँ या पुलिस को बुला लूँ। रोकना चाहती हो तो पापा को रोको, जो तुम्हें घर बैठाकर खुद दिन रात गोरियों के साथ घूमते हैं। मोनू को रोको, जो लड़कियों से यारी करता है। जब तब मेरे कपड़े पहन 'गे' पार्टीज में जाता है। मैंने कोई ऐसा वैसा काम नहीं किया है। फैशन करना कोई क्राइम नहीं है...हाँ।'[38]

शन्नो चिल्लाने लगी और जोर-जोर से रोने लगी यह देखकर उसकी बेटी उसको और दो बातें सुनाने लगती है–'ओह शिट! ये इंडियन औरतें सच्चाई तो फेस ही नहीं कर सकतीं न जाने किस डुडोलैंड में रहती हैं।'[39] वास्तव में पाश्चात्य सभ्यता भारतीय संस्कारों पर भारी पड़ने लगती है। बच्चे पिता की तरह ही स्वतंत्र जीवन जीने लगते हैं। फिर शन्नो का मानसिक संतुल बिगड़ने लगता है। उसे समझ नहीं आता कि उसके लालन-पालन में क्या कमी रह गई कि वह बच्चा बेटा होमोसेक्सुअल हो गया। मोनू शांत प्रकृति का 'गे' था। वही उसके कष्टों को थोड़ा बहुत समझता था। थोड़े दिनों बाद उसे पैनिक अटैक होने लगे। मानसिक बीमारी का इलाज केवल दवाईयों से नहीं हो सकता था। इस बीच उसे आनंद बाबू और भारत बहुत याद आने लगा। फिर वह अस्पताल में रहने लगी। फिर वहीं एक अन्य पेशेंट रॉबर्ट के साथ उसकी घनिष्ठता हो जाती है। वह रॉबर्ट के साथ जीवन में आगे बढ़ जाती है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि प्रस्तुत संग्रह की कहानियों में समकालीन राजनीति, ग्लोबलाइजेशन, इकनॉमी के कारण बदली जीवन पद्धति और उससे उत्पन्न जटिल समस्याओं को उकेरने की कोशिश की गयी है। 'प्रवास में' की कहानियाँ शिल्प में सहज हैं। अधिकांश कहानियों में नेरेटर का काम स्वयं लेखिका करती हैं। लेखिका यात्राशील हैं जिन्हें यात्रा में ऐसा सह यात्री मिलता है जो अपने जीवन की कहानी उनसे कहता है। इस प्रकार आपकी कहानियाँ 'किस्सागोई' की शैली लिए हुए प्रतीत होती है। कहा जा सकता है कि आपकी कहानियाँ रोचक और संप्रेषणीय हैं जो पाठक को अपने साथ लेकर चलती हैं। आपकी भाषा पूर्णत: पात्रानुकूल है। प्रवासी जीवन में हिंदी के साथ घुल मिल गए अँग्रेजी शब्द भी कहानी को नई गति देते हैं। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि प्रस्तुत संग्रह में प्रवासी भारतीय मन के प्रश्नों और दुविधाओं को सामने रखने की रोचक चेष्टा की गई है। यह कहानी संग्रह भारतीय मूल्यों पर आधारित नहीं है किंतु इन कहानियों के भीतर रिसी हुई गहरी मानवीय संवेदनाएँ इसे अद्‌भुत बनाती हैं।

संदर्भ

1. प्रवास में, उषा राजे सक्सेना, ज्ञान गंगा, दिल्ली, अपनी बात से उद्‌धृत, पृ॰ 11
2. प्रवास में, उषा राजे सक्सेना, प्रकाशन-ज्ञान गंगा, दिल्ली, अपनी बात से उद्‌धृत, पृ॰ 11
3. प्रवास में, उषा राजे सक्सेना, प्रकाशन-ज्ञान गंगा, दिल्ली, भूमिका से उद्‌धृत, पृ॰ 8

4. प्रवास में, उषा राजे सक्सेना, प्रकाशन-ज्ञान गंगा, दिल्ली, प्रवास में, पृ॰ 16
5. वही, प्रवास में, पृ॰ 17
6. वही, प्रवास में, पृ॰ 17
7. वही, प्रवास में, पृ॰ 19
8. वही, प्रवास में, पृ॰ 23
9. वही, प्रवास में, पृ॰ 23
10. वही, प्रवास में, पृ॰ 23
11. प्रवास में, उषा राजे सक्सेना, प्रकाशन-ज्ञान गंगा, दिल्ली, शुकराना, पृ॰ 31-32
12. वही, शुकराना, पृ॰ 32
13. वही, शुकराना, पृ॰ 33
14. वही, शुकराना, पृ॰ 33
15. वही, शुकराना, पृ॰ 33
16. प्रवास में, उषा राजे सक्सेना, प्रकाशन-ज्ञान गंगा, दिल्ली, यात्रा में, पृ॰ 37
17. वही, यात्रा में, पृ॰ 47
18. वही, यात्रा में, पृ॰ 46
19. वही, यात्रा में, पृ॰ 46
20. वही, यात्रा में, पृ॰ 47
21. वही, यात्रा में, पृ॰ 49
22. प्रवास में, उषा राजे सक्सेना, प्रकाशन-ज्ञान गंगा, दिल्ली, अभिशप्त, पृ॰ 65
23. वही, अभिशप्त, पृ॰ 66
24. वही, अभिशप्त, पृ॰ 66
25. वही, अभिशप्त, पृ॰ 68
26. वही, अभिशप्त, पृ॰ 57
27. वही, अभिशप्त, पृ॰ 76
28. वही, अभिशप्त, पृ॰ 76
29. प्रवास में, उषा राजे सक्सेना, प्रकाशन-ज्ञान गंगा, दिल्ली, दायरे, पृ॰ 80
30. वही, दायरे, पृ॰ 82
31. वही, दायरे, पृ॰ 86
32. प्रवास में, उषा राजे सक्सेना, प्रकाशन-ज्ञान गंगा, दिल्ली, वह कौन थी, पृ॰ 96
33. वही, वह कौन थी, पृ॰ 96
34. प्रवास में, उषा राजे सक्सेना, प्रकाशन-ज्ञान गंगा, दिल्ली, सफर में, पृ॰ 99
35. वही, सफर में, पृ॰ 100
36. प्रवास में, उषा राजे सक्सेना, प्रकाशन-ज्ञान गंगा, दिल्ली, शन्नो, पृ॰ 118
37. वही, शन्नो, पृ॰ 121
38. वही, शन्नो, पृ॰ 123
39. वही, शन्नो, पृ॰ 124

मो॰ 9410005843

संत साहित्य के प्रतिनिधि कवि कबीर

सुशीलकुमार (शोध छात्र)
हिंदी विभाग
म॰गाँ॰का॰वि॰, वाराणसी

मध्यकाल में सांस्कृतिक समन्वय का कार्य स्वामी रामानंद ने किया था। उन्होंने भक्ति का मार्ग सबके लिए समान रूप से खोल दिया था। उनकी दृष्टि में हिंदू-मुसलमान, ब्राह्मण-शूद्र, यहाँ तक कि स्त्रियाँ भी समान थीं। यही कारण था कि उन्होंने विभिन्न जातियों के लोगों को दीक्षित किया, परन्तु समाज में व्याप्त कट्टरवादी संस्कारों के कारण उनके सामने कठिनाइयाँ भी थी। इसका उत्तरदायित्व कबीर जैसे निडर और स्पष्टवक्ता ने सँभाला। 'सम्मिलन की भूमि का मूल आधार हिंदुओं के वेदांत और मुसलमानों के सफ़ीमत ने प्रस्तुत किया। सूफ़ीमत भी वेदान्त का ही रूप है, जिसमें उसने गहरे रंग का भावुक बाना पहना दिया था और इस्लाम की भावना पर इस प्रकार व्याप्त हो गया कि उसमें अजनबीपन जरा भी न रहा और उसे वहाँ भी मूल तत्त्व का रूप प्राप्त हो गया।...सूफ़ीमत और उपासनापरक वेदांत, दोनों ने मिलकर कबीर के मुख से घोषित किया कि परमात्मा अमूर्त है। वह बाहरी कर्मकांड के द्वारा अप्राप्य है, उसकी केवल प्रेमानुभूति हो सकती है। कर्मकांड तो वस्तुतः परमात्मा को हमारी आँखों से छिपाने का काम करता है। सर्वत्र उसकी सत्ता ज्ञाप रही है। मनुष्य का हृदय ही उसका मंदिर है अतएव उसे वहीं ढूढ़ना चाहिए।'[1]

पिंजर प्रेम प्रकासिया, जाग्या जोग अनंत।
संसा खूटा सुख गया, मिल्या पियारा कंत।
आया था संसार में, देषण कौ बहु रूप।
कहै कबीर संत ही, पड़ि गया नजरि अनूप।
अंक भरे भेंटिया, मन मैं नाँही धीर।
कहै कबीर ते क्यूँ मिलैं, जब लग दोई सरीर।[2]

संतों ने मनुष्य में आवश्यक सुधार करने का जो संदेश दिया उससे सामान्य जनता के जड़ीभूत जीवन में एक नयी चेतना जाग्रत हुयी। संतों के उपदेशों से समाज में जो एक नई जागृति पैदा हुयी उसके संबंध में परशुराम चतुर्वेदी ने लिखा है कि 'उनकी एकेश्वरवादी भावना, सामाजिक भेदभाव विहीनता तथा धार्मिक समानता के वैशिष्ठ ने यहाँ की दलित, परिगणित एवं पिछड़ी हुई जातियों में एक नवीन आशा का संचार कर दिया, जिससे उनमें नवजागरण और स्वालंबन का भाव उठने लगा और उसकी प्रतिक्रिया में यहाँ के उच्चवर्गीय लोगों को भी अपने नियंत्रण के नियम बहुत कुछ ढीले करने पड़ गए। फलतः भारतीय समाज की सामूहिक मनोवृत्ति

 ISSN 0975-735X

का झुकाव क्रमशः लोकोन्मुख होता गया।'[3] चूँकि संतो के समय धार्मिक जीवन को ही अधिक महत्त्व दिया जाता था और उनके मुख्यतः व्यक्तिगत होने के कारण, उस समय वास्तविक सामाजिकता का भी अभाव था। उस समय प्रत्येक व्यक्ति इसी धुन में था कि किस प्रकार परमतत्त्व के साथ संपर्क स्थापित करके अपना उद्धार करे और इस संसार में बार-बार आने की आवश्यकता न पड़े। ऐसी सोच के वातावरण में सामाजिक श्रेय का प्रश्न ही नहीं उठता। ऐसी स्थिति में आदर्श समाज की कल्पना कैसे की जा सकती थी। सांसारिक मोह-माया के जाल से परे संतों के लिए समाज की इस दुर्व्यवस्था की ओर ध्यान देना और दुःखी जनों के कष्ट मिटाने के लिए, उनकी दशा सुधारने के लिए ध्यान देना स्वाभाविक था। अतः संतों ने अपने जीवन का यह लक्ष्य बना रखा था कि अपने अनुभवों से दूसरों को लाभांवित करने के लिए उन्हें भी आमंत्रित किया जाय। संतों की यह सोच बिना किसी स्वार्थ भावना के उत्पन्न हुई थी। संतों के अनुसार किसी व्यक्ति का अपकार नहीं करना चाहिए। कबीरदास ने स्पष्ट कहा है कि–

करता था तो क्यूँ रह्या, अब करि क्यूँ पछताइ।
बोया पेड़ बबूल का, अंब कहाँ तै खाइ।।
मनह मनोरथ छाँड़ि दे, तेरा किया न होई।
पाँणी मैं घीव नीकसै, तो रूखा खाइ न कोई।[4]

पंच विकारों से घिरा हुआ मनुष्य कभी सद्-विचार नहीं कर पाता क्योंकि ये पाँचों शत्रु उसे अच्छे कर्मों की ओर से विमुख रखते हैं। ऐसे में मनुष्य स्वार्थी बन जाता है और समाज के लिए कुछ भी नहीं करना चाहता। उसकी यह विकृत प्रवृत्ति समाज में तनाव और संघर्ष की स्थिति पैदा करती है। अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए व्यक्ति अनेक प्रकार के अनैतिक कर्मों में लीन हो जाता है, जिससे औरों को कष्ट होता है। इससे सामाजिक वैमनस्य बढ़ता है और समाज में एकता नहीं हो पाती। चूँकि मध्यकालीन समाज में ये प्रवृत्तियाँ मानव के चरित्र को गिरा रही थीं। लोगों की मानसिक शुद्धि करना बहुत जरूरी था, परंतु मानसिक शुद्धीकरण के लिए कोई कारगर उपाय नहीं था ऐसे में संतों ने अपनी वाणियों के माध्यम से उपदेश, निर्देश देकर सत् मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। कबीर ने कहा है–

परनारी राता फिरै, चोरी बिढ़ता खाँहि।
दिवस चारि सरसा रहैं, अंति समूला जाँहि।
पर नारी पर सुंदरी, बिरला बंचै कोइ।
खाँताँ मीठी खाँड़ सी, अंति कालि विष होइ।[5]

सभी संतो का दृष्टिकोण मानवतावादी था, इसलिए मानव के भौतिक और आध्यात्मिक जीवन को सुखी बनाने के लिए उन लोगों ने सर्वदा जनता का ध्यान अच्छे कर्मों की ओर आकृष्ट किया है तथा परमार्थिक सत्ता की एकता के लिए केवल मानव में ही नहीं बल्कि संपूर्ण जीव-मात्र में अभेद-भावना की कामना की है। संतों की वाणियों में यह स्वर निरंतर गूंजता रहता है कि सद्भावना, सदाचार और सहृदयता से केवल व्यक्ति ही नहीं बल्कि पूरा समाज लाभान्वित होता है। प्रेम, परोपकार, त्याग, अंहिसा, क्षमा, सहनशीलता, एवं सत्य के अनुपालन से समाज का कल्याण और उत्थान संभव है। अतः व्यक्ति के सुधार से समष्टि का सुधार स्वयं हो जाता है।

योगिराज अरविंद ने लिखा है कि 'आत्मा की एकता के आधार पर ही मानवता अपने

वास्तविक एकता के आदर्श को पूरा कर सकती है। विश्व प्रकृति इसी ओर मानवता को ले जा रही है। सामुदायिक प्रगति के साथ ही हम व्यक्तिगत स्वतंत्रता अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़े, यही प्रकृति की इच्छा है। मानव धर्म के इस सत्-स्वरूप का, जो आत्मा और ईश्वर के उपादानों से निर्मित है, मानव-जीवन में प्रवेश हो रहा है। मानवता इसी ओर विचारों की एकता, धर्मों के सामंजस्य और साधारण समृद्धि में समानता से बढ़ रही है। यह मानव-मान की आंतरिक चेतना की अभिव्यक्ति है जो आत्मा का आत्मा से मेल होने के कारण प्रारंभ हुई है। केवल वाह्य नहीं, अंतर एवं प्रकृति की विचित्रताओं में भी स्नेहमय सामंजस्य और एकता की अभिव्यक्ति मानव-धर्म की अभिव्यक्ति होगी।'[6] इस प्रकार हम देखते हैं कि संतों ने मानवता की रक्षा के लिए, सामाजिक एकता के लिए और धार्मिक सद्भाव के लिए जो संदेश दिए थे उनका पालन करने से व्यक्ति की आत्मा का शुद्धीकरण, आत्मा से आत्मा का मेल, सामाजिक सामंजस्य और एकता स्थापित करना संभव है। संतों ने सबको समदृष्टि से देखने की एक प्रेरणा समाज को प्रदान की थी। इसीलिए कबीरदास ने कहा है कि इस नश्वर संसार और शरीर के प्रति माया मोह छोड़ देना चाहिए–

उपजै निपजै निपजि समाई, नैनह देखत इहु जगु जाई।
लाजन मरहु कहहु घर मेरा, अंत की बार नहीं कछुतेरा।
अनिक जतन करि काइआ पाली, मरती बार अगनि संगि जाली।
चोआ चंदनु मरदन अंगा, सो तनु जलै काठ के गंगा।
कहु कबीर सुनहु रे गुनीआ, बिनसैगो रूप देखे सब दुनिया।'[7]

इस प्रकार मानसिक शुचिता के फलस्वरूप जब व्यक्ति की आत्मा और मन साफ़ हो जायेगें तब उनमें किसी प्रकार का भेदभाव नहीं दिखाई देगा। वे समाज में समानता और एकता की व्यवस्था स्थापित करने में सहयोग करेंगे। संतों की इस भावना और उपदेश के कारण तत्कालीन समाज में जो क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ था, वह मानव-जाति और मानवता के लिए शुभ संकेत था।

आज संपूर्ण देश अराजकता, हिंसा, भ्रष्टाचार, आर्थिक घोटाला, आतंकवाद, नक्सलवाद, जातिवाद की समस्याओं से जूझ रहा है। इसकी तह तक जाने पर यही तथ्य सामने आता है कि आज हमारे भीतर मानसिक शुचिता, सदाचार, परोपकार, पर दु:ख कातरता और मानवता का अभाव हो गया है। मध्यकालीन संतों के समय इस प्रकार की समस्याएँ नहीं थी, बल्कि उन समस्याओं का रूप दूसरा था, जिनका समाधान करने के लिए संतों ने मानसिक शुचिता आदि का उपदेश दिया था। यदि आज उन संतों के उपदेशों का पालन किया जाय तो समाज में फैली कटुता, अलगाववाद, जातिवाद, आतंकवाद, नक्सलवाद आदि जैसी समस्याएँ नहीं रहेगी। मानसिक और चारित्रिक शुचिता आ जाने पर समाज और देश में अमन-चैन रहेगा। यदि इसे चरितार्थ करना है तो समूह और संघ में एकता और संगठन बनाना आवश्यक है, क्योंकि विराट और व्यक्ति दोनों एक ही परात्पर पुरुष के आविर्भाव के तत्त्व हैं। विराट के परे जो परात्पर पुरुषोत्तम की सत्ता है, वही व्यक्ति और संघ के रूप में अभिव्यक्त होती है।

वर्ण व्यवस्था के कारण हिंदुओं में जो ऊँच-नीच, छूत-अछूत की भावना समाज में व्याप्त थी, उसका सामाजिक एकता और संगठन पर बहुत बुरा असर पड़ रहा था। ब्राह्मण शूद्रों को

अस्पृश्य समझते थे और उनका स्पर्श भी पाप समझते थे। दूसरी ओर हिंदू-मुसलमानों से खान-पान आदि में दूरी बनाए हुए थे। इसके कारण समाज में अव्यवस्था फैली हुई थी। संतो ने इस भेद-भाव को दूर करने का पूरा प्रयास किया तथा लोगों को समझाया कि सभी लोग एक ही परमात्मा की संतान है। कुल और जाति विशेष में जन्म लेने के कारण कोई ब्राह्मण, शूद्र और मुसलमान नहीं हो सकता। यह भेद तो मनुष्य की मानसिक अशुचिता की उपज है–

हिंदू तुरक कहाँ से आये, किन एह राह चलाई।
दिल महि सोच विचार कवादे, भिस्त दोजक कित पाई।[8]
ऊँचे कुल का जनमियाँ, जो करनीं ऊँच न होय।
सोन कलस सुरा भरया, साधु निंदा सोई।[9]
पड़ोसी सू रूसजां, तिल-तल सुख की हाँणि।
पंडित भए सरावगी, पाँणी पीवें छाँणि।[10]

सामाजिक सरमसता और सद्भाव स्थापित करने के लिए संतों ने अनेक उपदेश दिए थे। कबीर ने कहा है कि 'जाति-पाँति पूछे नहि कोई, हरि को भजे सो हरि का होइ।' कबीर की यह उक्ति साम्यवाद की ओर संकेत करती है कि इस संसार में जाति-पाँति के आधार पर श्रेष्ठ और अधम कहना सर्वथा भ्रम है। सभी लोग उसी परमात्मा की संतान हैं और जो सच्चे मन से उसका भजन करता है वह उसी का हो जाता है, वहाँ जाति-पाँति के भेद नहीं रह जाते। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी लिखते हैं–'समन्वय से तात्पर्य दो या उससे अधिक बातों के बीच एक ऐसी समानता का प्रतिपादन करना होता है, जिसके कारण उनमें पारस्परिक विरोध का अभाव सूचित होने लगे और वास्तविक एकता भी सिद्ध की जा सके।[11]हिंदू और मुलसमान, ब्राह्मण और शूद्र सभी उसी परमात्मा द्वारा बनाए गए प्राणी हैं, फिर दोनों में भेद करना उचित नहीं है। किसी का जन्म उच्च कुल में होने मात्र से वह श्रेष्ठ नहीं बन जाता, बल्कि उसे महान या श्रेष्ठ बनाने के पीछे उसके कार्य और आचार-विचार है। किसी गरीब या पड़ोसी को सताना नहीं चाहिए, ऐसा करनेवालों को सुख की अपेक्षा हानि मिलती है। कबीर दास का यह दृढ़ विश्वास था कि जब हम अपने और दूसरों के बीच भेदभाव नहीं रखेंगे तब हमारा और दूसरों का संबंध अच्छा बनेगा। इस प्रकार संतों ने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच पड़ी हुई खाँई को पाटने का सराहनीय कार्य किया है। हिंदुओं में वर्ण-व्यवस्थ, जाति-पाँति, ऊँच-नीच, छूत-अछूत के आधार पर जो विषमता समाज में फैली हुई थी उसका विरोध और खंडन किया था। यदि आधुनिक भारत में सतों के संदेश का पालन किया जाय तो सामाजिक समन्वय स्थापित किया जा सकता है। चूँकि सतों ने विशृंखलित समाज को संगठित करने का प्रयास किया था और काफी हद तक उनको सफलता भी मिली थी, इसलिए समाज को संगठित करने और उसमें सामंजस्य बनाए रखने के लिए उनके उपदेश आज भी प्रासंगिक है।

कबीर दास ने स्पष्ट कहा है कि इस जगत में जन्म लेने और मरने का कोई महत्त्व नहीं है, जब तक मनुष्य सत्य मार्ग पर चलकर उस सत्य को जान नहीं लेता–

कबीर इस संसार में, घणै मनिश मति हींण।
राम नाम जाँणौ नहीं, आये टाणी दीन।
कहा कियौ हम आइ करि, कहां करेगे जाइ।

हत के भये नउत के, चले मूल गँवाई।[12]

गुरुनानक ने कहा कि 'आई पंथी सगल जमाति मनि जीते जगु जीत। आदि अनीतु अनादि अनाहति जुगु-जुगु एको बेसु।'[13] अर्थात् तुम सबको अपनी ही जमात का समझो, मानो सारे मनुष्य मेरे तेरे 'आई पंथ' के ही हैं और यह मान लो कि यदि मन को जीत लिया तो सारे संसार को जीत लिया। कबीरदास ने किसी एक धार्मिक सिद्धांत का अनुसरण नहीं किया है, उनके मतानुसार धर्म का मूल तत्त्व किसी एक की व्यक्तिगत चिन्ता और उसके विश्वास के अनुरूप स्वरूप ग्रहण करता है और इसी के बल पर अपने विशुद्ध हृदय से उसमें प्रेम और संतोष की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार हृदय के विशुद्ध होने पर सामंजस्य स्थापित करना आसान हो जाता है। कबीर ने इस आधार पर हिंदुओं के विभिन्न संप्रदायों और पंथों तथा हिंदुओं और मुलसमानों को लक्ष्य करके कहा कि परमात्मा एक है, और उसी को प्राप्त करने का मार्ग सभी धर्म प्रशस्त करते हैं, परंतु भ्रम के कारण मनुष्य उसमें भेद-भाव करके वैमनस्य स्थापित करता है। अत: सभी को वाह्याडंबर, अंधविश्वास, पत्थर पूजा, विभिन्न वेशभूषा त्याग कर सम्भाव से उस परमात्मा को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए–

पाँहण केरा पूतला, करि पूजै करतार।
इही भरोसै जे रहे, ते बूड़े काली धार।
हम भी पाहन पूजते, होते रन के रोझ।
सतगुरकी कश्पा भई, डार्या सिर थैं बोझ।
कबीर दुनियाँ देहुरै, सीस नवाँवण जाइ।
हिरदा भीतर हरि बसै, तूँ ताही सौंल्यौ लाइ।[14]

इस प्रकार कबीर ने हिंदुओं और मुसलमानों को समझाते हुए कहा है कि 'सत्तरि काबा घर ही भीतर जे करि जानै कोइ', 'हज्ज हमारी गोमती नीर, जहाँ बसहिं पीतंबर पीर', 'जो सब में एकु खुदा कहत हौ तौ क्यों मुरगी मारै, 'हिंदू तुरक दुइ महि एके कहै कबीर पुकारी', 'हिंदू तुरका साहिब एक, 'जप तप दीखै थोथरा। अर्थात् परमात्मा को प्राप्त करने के जितने भी उपक्रम तुम कर रहे हो सब बेकार है।

इस प्रकार संतों ने अपने उपदेशों के माध्यम से सभी धर्मों के लोगों में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया। 'आचार्य परशुराम चतुर्वेदी' ने इसी संदर्भ में लिखा है कि 'कबीर साहब ने यदि स्वातंत्र्य एवं निर्भीकता को अधिक प्रधानता दी, तो गुरुनानक ने समन्वय तथा एकता पर विशेष बल दिया और दादूदयाल ने उसी प्रकार सद्भाव और सेवा को श्रेष्ठ माना, परंतु इन बातों का यह अर्थ नहीं कि इनमें से किसी की मनोवृत्ति एकांगी थी। साधनाएँ सभी की पूर्णांक थीं, विशेषताओं का कारण केवल अवस्था भेद हो सकता है।'[15]

संतो के सदियों बाद आज भारत जहाँ पहुँचा है, वहाँ सामाजिक सद्भाव की चर्चा आवश्यक जान पड़ती है। इस वैज्ञानिक युग में जहाँ आशातीत प्रगति एवं परिवर्तन हुआ है, वहीं समाज में विभिन्न कुरीतियों ने जड़ जमा ली है। संतों द्वारा निर्देशित मार्ग से आज का मानव भटक गया है। इसलिए समाज में शांति और सुख का अभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है। धार्मिक अंधविश्वासों, वाह्याडंबरों, छल, भ्रष्टाचार चोरी-ठगी, आर्थिक घोटालों से समाज बुरी तरह पीड़ित है। वर्तमान समाज में नैतिक मूल्यों का क्षरण जिस तीव्रता से हो रहा है तथा मानवीय मूल्यों का जो विघटन

 ISSN 0975-735X

समाज में दिखाई दे रहा है उसके विषाक्त प्रभाव को कम करने के लिए कबीर की अमृतवाणी की आवश्यकता बराबर अनुभव की जा रही है। ऐसी स्थिति में संत साहित्य के प्रतिनिधि कवि कबीर की उक्तियाँ ही एक समन्वयकारी समाज की स्थापना का विश्वास दिलाती हैं।

संदर्भ

1. हिंदी काव्य में निर्गुण संप्रदाय, डॉ॰ बडथ्वाल, पृ॰ 28
2. कबीर ग्रंथावली- परचा कौ अंग, पृ॰ 24
3. भारतीय साहित्य की सांस्कशतिक रेखाएँ- परशुराम चतुर्वेदी, पृ॰ 34
4. कबीर ग्रंथावली, मन कौ अंग, पृ॰ 24
5. वही, कामी नर कौ अंग, 2,4
6. कल्याण, मानवता अंक, श्री अरविंद प्रतिपादित मानव धर्म, श्री वेंकट रमण, पृ॰ 347
7. संत कबीर, सं॰ रामकुमार वर्मा, राम गउड़ी, 11
8. कबीर ग्रंथावली, पद 219
9. कबीर साहित्य की परख-परशुराम चतुर्वेदी, पृ॰ 103
10. वही, चाँण काकौ अंग, 12
11. कबीर साहत्यि की परख-परशुराम चतुर्वेदी, पृ॰ 34
12. वही, चितावणी कौ अंग, 24-25
13. श्री गुरु ग्रंथ साहिब, महला 2, पृ॰ 469
14. कबीर ग्रंथावली, भ्रम विधौंसण कौ अंग, 1, 4, 11
15. उत्तरी भारत की संत परंपरा, परशुराम चतुर्वेदी, पृ॰ 450

स्त्री का युगीन परिदृश्य व उसका बदलता दृष्टिकोण

सुरेंद्र सिंह, पीएच॰डी॰ शोधार्थी
हिंदी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

वैदिक काल में स्त्री को बहुत ही सम्मानीय स्थान प्राप्त था। उसकी यशोगाथा धर्मशास्त्रों में वर्णित है 'गृहिणी से घर है' तथा संसार में भार्या के समान कोई बंधु आश्रय या सहायक नहीं है, ऐसा कहा गया है। वैदिक काल में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता।' जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता रमण करते हैं।

'वैदिक काल में स्वतंत्रता नर-नारी संबंध अत्यंत मधुर थे तथा नारियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी, इस काल में विवाह प्रथा प्रचलित हो चुकी थी। समाज पितृसत्तात्मक होते हुए भी नारी के प्रति उदार था। मातृपद अत्यंत गौरवमय समझा जाता था। पत्नि के रूप में नारी पति की अधीश्वरी मानी गई है। इस काल में नारियाँ पूरुषों के साथ रणभूमि में भी जाती थी। दांपत्य संबधों का स्वर्णिम रूप इस काल में देखने को मिलता है जिससे स्पष्ट होता है कि नारी की सामाजिक स्थिति अत्यंत उच्च थी। वह सम्मानीय एंव पूजा योग्य मानी जाती थी।'[1]

वैदिक काल में स्त्री का स्थान उच्च व सर्वोत्तम माना जाता था। विभिन्न प्रकार की समस्याएँ जैसे पितृसत्ता होते हुए भी समाज में नारी को बराबर का दर्जा प्राप्त था। लेकिन उतर वैदिक काल में नारी की स्थिति में परिवर्तन परिलक्षित होने लगे।

'उसका समाज में आदर कम होने लगा। स्वतंत्रता एंव शिक्षा के क्षेत्र में कमी आई। इतना ही नहीं, कन्या का जन्म होते ही उसे भार स्वरूप समझा जाने लगा। इस काल में कन्या जन्म शूद्र से भी नीचा तथा कृपण माना जाता था।'[2]

'इस काल में बहु विवाह की प्रथा का प्रचलन आंरभ हुआ जिसमें दास प्रथा ने स्थान लिया। युद्धों में स्त्रियों का हरणकर उसे दासी बनाया जाता था। इस युग के परिदृश्य को देखा जाए तो पुरुष विलासी और निहायत ही स्वार्थी प्रवृति का हो गया था, जिससे स्त्री-पुरुष के नैतिक नियम निम्नतर गिरते चले गए, उनको निभा पाना भिन्न हो गया।'[3]

इस काल को स्त्रियों के पतन का काल कहा गया है, क्योंकि स्त्रियों के ह्रास की प्रथम कड़ी की शुरुआत यहीं से शुरू होती है। वही रामायण काल में स्त्रियों की यदि सर्वस्तरीय महत्ता थी, तो कहीं पर समाज का पितृसत्तात्मक रवैया भी दर्शाया गया है।

वाल्मीकि रामायण में स्त्री की सर्वस्तरीय महत्ता थी। 'उत्तर रामचरित' में महाकवि भवभूति ने अपनी वाणी से जनक के द्वारा ब्रहाविद् कर्मयोगी से वनवासिनी स्वदूहिता सीता के प्रति ये वाक्य कहलाए हैं-'तुम मेरी कन्या हो या शिष्य, यह ध्यान देने की बात नहीं, तुम्हारा आचरण अपनी पूर्ण परिणति को पहुचाँ हुआ है, जिससे मुझमें तुम्हारे प्रति विशेष श्रद्धा है। स्त्री रूपिणी

 ISSN 0975-735X

अथवा अवस्था में कम होने पर भी तू जगद्बंध है, क्योंकि गुणियों का आदर उनके गुणों से होता है न कि जाति (लिंग) या अवस्था भेद से।'[4] समाज में स्त्रियों के यथार्थ रूप को दर्शाया गया है। रामायण युग में कन्याएँ जो विवाह योग्य हो जाती थी माता-पिता के लिए चिंता का विषय बन जाती थी-'कन्या पितृत्व दुख हि सर्वेषा मानकाक्षिणाभ।'[5]

इसमें पुत्री के विवाह पर धन देने की प्रथा मिलती है। कन्यदान पिता के लिए पूज्य का काम था, जिसमें पिता कन्यदान को अपना सौभाग्य समझता था। इस काल में सीता, कौशल्या, तारा ये शिक्षित स्त्रियाँ थीं, जो कर्मकांड और शास्त्रज्ञान को प्राप्त करने में सक्षम थीं। गृहस्थी की व्यवस्था पर पत्नियों का अधिकार था।

इसी के समान महाभारत में भी पुत्रियों को अनेक प्रकार की शिक्षा-दीक्षा प्राप्त थी। इसमें स्त्री का प्रधान गुण उसका चरित्र और व्यवहार माना जाता था। ये पुरूषों की वास्तविक सगिंनी थी। मत्स्यगंधा (सत्यवति) कुंती आदि स्त्रियों को विवाह से पूर्व संतान उत्पन्न करने का उल्लेख मिलता है, तो दूसरी और अहल्या, सावित्री जैसी पतिव्रता स्त्रियों का भी उल्लेख मिलता है।

'इस प्रकार रामायण, महाभारत में स्त्रियों का वर्णन विदूषियों के रूप मे कर्म, तप, त्याग, नम्रता, पतिसेवापरायण आदि वशीभूत गृहस्वामिनी के रूप में अधिक दिखाया गया है। इस युग में पतिसेवा और आज्ञापालन ही स्त्रियों का प्रमुख गुण हो गया। महाभारत में पांडवों द्वारा द्रौपदी को जुए के दाँव पर लगा देना और राम का सीता को वनवास देना व एक धोबी द्वारा संदेह व्यक्त करने पर अग्निपरीक्षा करवाना, पत्नी पर पति के मनमाने अधिकारों की पुष्टि करता है।'[6]

'महाभारत में स्त्रियों के सम्मान में और गिरावट दिखाई पड़ती है। इस काल में स्त्रीविषयक हीन दुर्विचारों का प्रादुर्भाव होने लगा था। संस्कृत साहित्य से ज्ञात होता है कि उस काल में स्त्री केवल विलासिता का साधन-मात्र बन गई थी, उसकी स्थिति अत्यंत शोचनीय हो गई थी।'[7]

मध्यकाल में स्त्री की स्थिति अधिक निकृष्ट होती गई। भारत पर मुसलमानों के आक्रमण के साथ ही नारी की रक्षा के दृष्टिकोण से उसके उपर कई प्रतिबंध लगाए गए। पर्दा पद्धति, बाल-विवाह, सती-प्रथा जैसी गलत परंपराएँ इसी युग में विकसित हुईं। नारी शिक्षा से पूरी तरह से वंचित हो गई। 'मध्यकाल के साहित्य को भी यदि देखा जाए तो यह दिखाई देता है कि कबीर, तुलसी जैसे कवियों ने नारी को मोहमाया तथा साधना में बाधक समझकर उसकी उपेक्षा की है।'[8] वहीं भक्तिकाल में भी नारी की दशा अच्छी नहीं थी। संतसाहित्य के महान संत कबीर भी नारी को माया के रूप में मानते थे और उसे साधना में बाधा डालने वाली कहते थे-

नारी की झाई परत, अंधा होत भुजंग।
कबीर तिन की कौन गति, नित नारी के संग।'[9]

इसी प्रकार भक्तिकाल के सगुण काव्यधारा के अन्य प्रखर कवि तुलसीदास जी व सूरदास जी भी नारी को नागिन, माया व साधना में रुकावट डालने वाली कहते थे-

ढोल, गवार, शुद्र, पशु, नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।[10]

-तुलसीदास

नारी नागिन एक सुभाई, नागिन के कारे विष होई।
नारी चिंतन नर रहे सोइ, नारी सो नर प्रीति लगावै।
वै नारी तिहि भनाहि न लावै।

नारी संग प्रीति जो करै, नारी ताहि तुरत परि हरै।[11]

–सूरदास

मध्ययुगीन नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय थी व उसे साधना में बाधा डालनेवाली, मायारूपी व नागिन इत्यादि नामों से जाना जाता रहा है।

ब्रिटिश शासन के दौरान भारत की संस्कृति एवं धर्म का अँग्रेजी के साथ निरंतर संपर्क रहा है। कभी-कभी इन दो भिन्न धर्म एवं संस्कृति में संघर्ष की स्थितियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। अँग्रेजों ने अपने धर्म एवं संस्कृति का प्रचार यहाँ आरंभ कर दिया था। उनके इसी प्रयास के कारण यहाँ के धर्म एवं संस्कृति पर कई आघात हुए, लेकिन भारतीय जनजीवन में कुछ सुधार भी हुए, जिससे स्त्रियों के जीवन में कई दृश्य-अदृश्य सुधार हुए। शिक्षा रोजगार सामाजिक अधिकार आदि को लेकर स्त्री पुरुषों के बीच असमानताओं में कमी आई। 'महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है, औद्योगिकरण की प्रकिया, जिसके परिणामस्वरूप देश की आर्थिक स्थिति में भी परिवर्तन आया। जिस कारण स्त्री और पुरुष के लिए रोजगार के नए मार्ग खुले। स्त्री अब घर छोड़कर बाहर काम करने के लिए जाने लगी तो बाहर के व्यापक विश्व के साथ उसके निरंतर संबंध बनने लगे। काम की जगह उसे विभिन्न अनुभव आने लगे। जिस कारण स्त्री स्वतंत्रता रूप से विचरण करने लगी और विभिन्न क्षेत्रों जैसे शैक्षिक क्षेत्र व सामाजिक आदोंलनों में भाग लेने लगी और इसी काल में सती-प्रथा, बाल-विवाह-प्रथा को सामाजिक आंदोलनों के अथक प्रयासों से समाप्त किया गया।'[12]

ब्रिटिश शासन के तुरंत पश्चात भारतीय सविधान का निर्माण हुआ और जो विशषाधिकार स्त्रियों को प्राप्त थे, उन सभी पर संविधान बनने पर प्रश्नचिह्न लगा दिए। जिस कारण 'स्वतंत्रता प्राप्ति के वाद नारी-मुक्ति से जुड़े कई तरह के सवाल उठने लगे। पितृसत्तात्मक परिवार में नारी के उत्तराधिकार का प्रश्न भी उठाया गया। परिवार की संरचना में नारी की भूमिका का महत्त्व, विवाह संस्था से संबंधित रूढ़ियों के खिलाफ स्वर और पुराने संस्कारों की जकड़न से बाहर आने की बेचैनी साफ-साफ महसूस की जाने लगी। विभिन्न प्रकार के अंधविश्वासों और नैतिकता के अलग-अलग मानदंडों का विरोध भी स्त्रियों ने शुरू किया।'[13]

संविधान बनने के पश्चात् भारतीय सरकार ने स्त्रियों को समाज में समानता व उनकी वैध भूमिका निश्चित करने के लिए अनेक कार्यक्रम, पंचवर्षीय योजनाएँ व अनेक प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध करवाईं। 'पंचवर्षीय योजनाओं में महिलाओं के हितों (1952-75) पर यदि हम गौर करें तो मोटे तौर पर तीन क्षेत्रों की बात की शिक्षा, स्वारथय और महिला कल्याण। योजनाओं में महिलाओं के लिए तय किए गए विभिन्न स्वास्थय कार्यक्रमों और गतिविधियों का केंद्र मुख्यत: कल्याणकारी सेवाएँ और शिक्षा, स्वास्थ्य, मातृत्व तथा बाल-कल्याण, परिवार-नियोजन, पोषण व हस्तकला प्रशिक्षण के अवसर रहे हैं।'[14]

समकालीन दौर में यदि हम स्त्रियों का दृष्टिकोण देखें तो उत्तर आधुनिकता का स्पष्ट प्रभाव स्त्रियों पर दिखलाई पड़ता है। उत्तर आधुनिकता के सहायक तत्त्व उदारीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण ने समाज के साथ स्त्रियों पर भी बहुत प्रभाव डाला। भूमंडलीकरण (1991) के आगमन से देश की आर्थिक नीतियों में बदलाव हुए जिससे कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों का उदय, बाजार का निर्माण हुआ। जिस कारण उत्पादन में वृद्धि करने के लिए मजदूरों की आवश्यकता

 ISSN 0975-735X

महसूस होने लगी और जिसमें पुरुषों के साथ स्त्रियों ने भी भाग लिया। मजदूरी पेशे में आने के उपरांत स्त्रियों ने स्वयं को आर्थिक तौर पर सशक्त किया व समाज में अपनी अलग पहचान बनाई। भूमंडलीकरण और इसके नित नए उपकरण, जैसे मीडिया इलैक्ट्रानिक, मुद्रण एवं इंटरनेट व टेली-कम्युनिकेशन के जाल ने स्त्रियों को नई छवि दिलाने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया और सुदूर गाँवों की महिलाओं एवं बालाओं को नई दृष्टि एवं समझ दी। इन परिवर्तनों ने भारतीय नारी की पूर्व स्थापित तस्वीरों को इस प्रकार बदला है–

1. आज भारतीय महिलाएँ अपने जीवन साथी के चयन में अपनी राय ही नहीं देती बल्कि स्वयं उनका चयन भी कर रही है।

2. परिवार के आकार का निर्धारण एवं स्थिति का निर्णय स्वयं करने में संकोच नहीं करती।

3. समाजिक जिम्मेवारियों का चयन एवं दवाबों से इनकार कर रही है।

4. पूर्व-स्थापित मूल्यों के निर्वहन के संदर्भ में चयन तथा त्याग का निर्णय साहस से ले रही है।

5. परंपरागत धार्मिक एवं रूढ़िवादी मूल्यों के स्वीकार्य एवं त्याग में साहस और उदारता बरत रही हैं।

6. वैयक्तिकता एवं निजत्व के प्रभाव में स्वीकार। त्याग निर्णय में शीघ्रता करना इनकी विशेषता हो रही है।'[15]

हम यदि उत्तर आधुनिकता के सकारात्मक परिवर्तनों पर नजर रखे तो नारी की उन्नति एवं तरक्की दिखाई पड़ती इसके साथ-साथ कुछ नकारात्मक प्रभाव भी भूमंडलीकरण ने भारतीय महिलाओं पर डाला है, उससे पहला पक्षघात लगा है। 'सयुंक्त परिवार की अवधारणा को, संयुक्त परिवार तेजी से टूटने लगे है। विवाहेतर संबंधों की नई लहर के मध्य एवं उच्चवर्ग की महिलाओं के स्थापित भारतीय मर्यादाओं से डिगा दिया है। शीघ्र ही अपनी मर्जी से विवाह तथा उतनी ही शीघ्रता से तलाक हो रहा है। भूमंडलीकरण ने जहाँ भारतीय महिलाओं को आत्मनिर्भरता और स्वतंत्र स्वायत्ता की खुशियों से लवरेज किया है। वहीं स्वच्छदंता के प्रदूषण ने इन्हें तनाव एवं एकाकीपन का अभिशाप भी दिया है। इसने दोहरे बोझ (घर एवं व्यवसाय के) से भारतीय महिलाओं को दबाया है। व्यक्तिगत फिजुलखर्ची और फैशनपरस्ती में दिगभ्रमित, दिवास्वपन में डूबी महिलाओं के संदर्भ में 'सच्चे विकास' का अर्थ कहीं खोता जा रहा है। बाजारवाद और उदारीकरण की नीतियों ने महिलाओं को असुरक्षा के दलदल में ढकेल दिया है। बलात्कार और हत्या जैसी समाजिक घटनाएँ तथा देहव्यपार की बेबसी इन्हीं नीतियों का परिणाम है।'[16]

इस प्रकार समाकालीन युग ने महिलाओं के समक्ष अवसर और चुनौती, दोनों प्रस्तुत किए है। इन अवसरों में ज्यादा चुनौतियाँ है। उनके लिए जरूरी हो गया है कि पूर्व के उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष तो करें ही, आधुनिकीकरण के नाम पर थोपी जाने वाली उच्छुखंलता, अराजकता और सेक्स व्यवपार की प्रवृति के खिलाफ भी संघर्ष करें। नारीमुक्ति का रास्ता न तो पितृसत्तात्मक व्यवस्था में है, और न ही उदारीकरण से उत्पन्न नीतियों से है। उदारीकरण की नीतियों ने भारतीय समाज को जिस नागपाश में जकड़ लिया है, उसको काटे बगैर न तो नारी को उचित प्रतिष्ठा मिल सकती है, और न ही समस्त समाज की मुक्ति संभव है। आशा है भारतीय नारियाँ आधुनिकीकरण की नवीन उर्जा से भारतीय संस्कृति की उर्वरा भूमि पर सच्चे अर्थ में नए एंव सुंदर जीवन का

संचार कर सकेगी।

संदर्भ

1. महिला साहित्यकारों का नारी-चित्रण : (हिंदी कहानियों के संदर्भ में), डॉ॰ रनतकुमारी वर्मा, अध्ययन पब्लिर्शस एंड डिस्ट्रीब्युटर्स, नई दिल्ली, पृ॰ 4
2. वही, पृ॰ 5
3. समकालीन हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श, डॉ॰ स्नेह लता, राज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ॰ 52
4. वही, पृ॰ 52
5. वही, पृ॰ 53
6. वही, पृ॰ 54
7. आधुनिक एंव हिंदी कथा साहित्य में नारी का बदलता स्वरूप, डॉ॰ मुदिता चंद्रा, डॉ॰ सुलक्षणा टोप्पो, भावना प्रकाशन, दिल्ली, पृ॰ 137, 138
8. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार डॉ॰ वैशाली देश पाड़े, विकास प्रकाशन, कानपुर, पृ॰ 32
9. नारी जीवन: वैदिक काल से आजतक, कमलेश कटारिया, युनिक ट्रेडर्स, जयपुर, पृ॰ 32
10. वही, पृ॰ 33
11. वही, पृ॰ 33
12. अप्रकाशित शोध प्रबंध स्त्रीवाद और हिंदी महिला उपन्यासकार (विशिष्ट महिला उपन्यासकार के संदर्भ में) कु॰ वैशाली वि॰ देशपांडे, डॉ॰ भीमराव आंबेडकर मराठवाड़ा वि॰वि॰, औरगाबाद, पृ॰ 42
13. आधुनिक एंव हिंदी कथा साहित्य मे नारी का बदलता स्वरूप, डॉ॰ मुदिता चंद्रा, डॉ॰ सुलक्षणा टोप्पो, भावना प्रकाशन, दिल्ली, पृ॰ 520
14. नारीवादी राजनीति संघर्ष एंव मुद्दे, (साधना आर्य, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता), हिंदी माध्यम कार्यन्वय निदेशालय, दिल्ली, पृ॰ 206
15. आधुनिक एंव हिंदी कथासाहित्य मे नारी का बदलता स्वरूप, डॉ॰ मुदिता चंद्रा, डॉ सुलक्षणा टोप्पो, भावना प्रकाशन, दिल्ली, पृ॰ 511, 512
16. वही, पृ॰ 512, 513, 514

साहित्य में चित्रित वृद्धों के प्रवासी जीवन की त्रासदी

डॉ. सीमा चंद्रन (शोध निर्देशिका)

सीमा दास (शोधार्थी)

व्यक्ति से परिवार और परिवार से समाज बनता है और इस परिवार को संरचनात्मक रूप प्रदान करने वाला व्यक्ति घर के बड़े बुजुर्ग ही हुआ करते हैं जिससे परिवार की उत्पत्ति हुई है. परिवार के बिना समाज की निरंतरता संभव नहीं है. वास्तव में परिवार का आधार सुनिश्चित यौन संबंध है जो कि संतान उत्पन्न करनें से लेकर उनके पालन-पोषण तक अवस्थित रहता है. डॉ. सुखविंदर बाढ के अनुसार- "व्यक्ति सदैव ही परिवार का सदस्य रहता है और अनेक परिवारों के समूह से समाज बनता है. परिवार के लिए सबसे अति आवश्यक मूल बात है- पति-पत्नी द्वारा संतान की उत्पत्ति."1 परन्तु वर्तमान समय में विद्याबना यह है कि जिस नींव की वजह से परिवार की संकल्पना की जाती है उसी से आज का युवा वर्ग हेय यानी नफरत करने लगा है. उनसे बात करने से कतराते हैं. यहाँ तक कि उन्हें अपना बोझ समझ कर या तो अपने से हमेसा के लिए अलग कर देते हैं या स्वयं ही बेगाना बनाकर अकेला छोड़कर निकल पड़ते हैं. जिसके परिणामस्वरूप इन वृद्ध माता-पिता को प्रवासी जीवन जीने को मजबूर हो जाते हैं. प्रवासी का अर्थ केवल देश के बाहर जाकर बस जाने वाले व्यक्ति को प्रवासी नहीं कहा जाता बल्कि देश में रख भी अपने मूल स्थान से हट कर या स्वयं जाकर निवास करने की प्रक्रिया को प्रवास कहा जा सकता है.

प्रवास शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- प्र+वास. 'प्र' का अर्थ- अलग होना या अलग हो जाना. जबकि 'वास' का अर्थ- बसना या बस जाना या निवास करना. इस प्रकार प्रवास का मूल अर्थ हुआ- अपने मूल निवास स्थान से दूर जाकर किसी प्रान्त या देश या विदेश में निवास करना. दूसरे शब्दों में कहा जाए तो 'प्रवास' शब्द में 'प्र' शब्द का अर्थ है- अलग या दूसरे जबकि 'वास' का अर्थ है- निवास करना. अर्थात् 'प्रवास' का शाब्दिक अर्थ हुआ- अपने मूल स्थान से जा किसी अन्य स्थान पर जाकर बस जाना. यहाँ वृद्धों के प्रवासी जीवन से तात्पर्य है- अपने परिवार से अलग होकर प्रवास में जीवन यापन करना. जैसे- वृद्ध आश्रम या अस्पताल में जाकर बस जाना या बसा दिया जाना. अपनों के होते हुए भी उनसे अलग होकर रहना अर्थात् अपनों से दूर हटकर प्रवास करना. वास्तव में देखा जाए तो अपनों के अमानवीय व्यवहार के कारण आज वृद्धों की यह स्थिति है कि वे प्रवास में जीवन यापन करने को विवश है.

वैश्वीकरण ने हमें इस कदर प्रभावित किया है कि पाश्चात्य जीवन प्रणाली और एकल परिवार को ही सब कुछ मान बैठे हैं. सच्चाई यह है कि जिन बुजुर्गों ने हमें अपनी उंगली पकड़ कर हमारी नन्ही सी हाथों को थामकर हमें चलाना सिखाया उन्ही को आज दुत्कार और नकार रहे हैं. यहाँ तक कि उनके बुढ़ापे में लाठी बनने की अपेक्षा हम उन्हें बोझ समझने लगे हैं. वृद्धों की स्थिति पर ध्यानाकर्षित करते हुए डॉ. मधुकर पांडवी ने 'कला का जोखिम' में सच्चाई प्रकट किया है कि "आज की जड़ित, पीड़ित, पराधीन होती हुई सभ्यता सम्पूर्ण रूप से स्वतंत्र रह सके

और स्वत्रंत रहकर ही अपने अलगाव का अतिक्रमण कर सके."2 यही कारण है कि यह सोच हमारी मानसिकता के साथ-साथ हमारे स्वार्थी जीवन प्रणाली को दर्शाने लगा है. जिसके चलते सयुंक्त परिवार विघटित होने लगा है. इसके साथ ही साथ गाँवों से शहर की ओर पलायन बढ़ा, खेत-खलियान के स्थान पर सीमेंट-बालू ने धारण कर लिया और रेत की फसले आज लहलहाने लगी. आज सबसे अधिक यह पाया जा रहा है कि खेत की कमी आ गई और खेत का स्थान आज कल-कारखानों ने ले लिया.

आज एक ओर जहाँ स्त्री, दलित, आदिवासी विमर्श आदि की गूंज चारों ओर सुनाई पड़ रही है. परन्तु बृद्ध की समस्याओं की गूंज उस रूप में उभरता हुआ नहीं दिखाई दे रहा है जिस रूप में होना चाहिए. जबकि एक माता-पिता अपने बच्चों से बस यही चाहत रखता है कि बुढ़ापे में उसका बच्चा उसके साथ रहे. प्राचीनकाल से ही यह माना जाता रहा है कि

"यद्दपि पोष मातरं पुत्रः प्रभुदितों ध्यान.

इतदगे अन्तणो भवाम्यहतौ पितरौ ममां.द्य"3

अर्थात् "जिन माता-पिता ने अपने अथक प्रयत्नों से पाल-पोस कर मुझे बड़ा किया है, अब मेरे बड़े होने पर जन वे अशक्त हो गए हैं तो वे 'जनक-जननी' किसी भी प्रकार से पीड़ित न हों, इस हेतु मैं सेवा, सत्कार से उन्हें संतुष्ट कर ऋण के भर से मुक्ति कर रहा हूँ." यजुर्वेद में यह दिया गया श्लोक, हमें अपने माता-पिता और अपने बुजुर्गों के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करने की शिक्षा देता है और बुजुर्गों का सम्मान करने का मार्ग प्रशस्त करता है.

आज हमारे समाज में वृद्ध लोगों को दोयम दर्जे के व्यवहार का सामना करना पड़ रहा हैद्य देश में तेजी से सामाजिक परिवर्तनों का यह दौर चालू है और इस कारण वृद्धों की समस्याएँ विकराल रूप धारण कर रही है. इसका मुख्य कारण देश में उत्पादन एवं मृत्यु दर में कमी आना या मृत्यु दर का घटना. जबकि राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जनसंख्या की गतिशीलता से हैं. विगत दशकों में स्वास्थ सुविधाओं में गंभीर बिमारियों के कारण मृत्यु दर में गिरावट आई है. साथ ही वृद्धों की जनसंख्या में वृद्धि पायी गई है. "विश्व स्तर पर 7.1 प्रतिशत वृद्धों की जनसंख्या में वृद्धि हो रही है जबकि 55 वर्ष आयु वाले वृद्धों की जनसंख्या में 2.2 प्रतिशत की दर से वृद्धि हो रही है."4 देश में बहुत ही जल्द यह विषमता आने वाली है कि वृद्धजन, जो कि जनसंख्या का अनुत्पादन वर्ग है, वह शीघ्र ही उत्पादन वर्ग से बड़ा होने वाला है.

विगत पाँच दशकों में यहाँ देखा गया है कि वृद्धों को बेगानापन, अकेलापन आदि की समस्याओं से होकर गुजरना पड़ रहा है. यहाँ तक कि बुजुर्गों को हाशिय पर धकेलने का काम परिलक्षित किया गया है. वर्त्तमान समय में युवा और वृद्धों के बीच संवेदनशीलता की खाई इतनी गहरी हो गई है कि वृद्धों को अनावश्यक तनाव का दंश सहना पड़ रहा है. "वृद्धावस्था प्रायः थकान, कार्यशीलता में कमी, रोगों की प्रतिरोधक क्षमता की कमी से सम्बंधित होता हैद्य"5 यही कारण है कि अक्षमताएँ दैनिक जीवन के कार्य-कलापों को दुर्बल बनाती है.

व्यक्ति का यह अकेलापन शारीरिक एवं मानसिक रूप से उसे कमजोर बना देती है. जिसके परिणामस्वरूप उसमें चिचिड़ापण उत्पन्न हो जाता है. जिसके कारण परिवार में अच्छे संबंध नहीं बने रह पाते. "वृद्धावस्था में मानसिक स्थिति को भावनात्मक ग्रंथि प्रभावित करने लगती है जिसके कारण हीनता की भावना एवं असहायता जैसे अलग-अलग लक्षण देखे जा सकते हैं,

जिसमें व्यक्ति को किसी न किसी मनोग्रंथि का शिकार हो सकने का खतरा रहता है. इस तरह से कई मनोवैज्ञानिक समस्याएँ हो सकती है- विचारधारा, पसंद, दृष्टिकोण इत्यादि में स्थिरता आ जाने से भी समस्याएँ उत्पन्न होती है."6 यह समस्याएँ एवं तनाव की स्थिति तब उभर कर सामने आती है जब नैतिकता, जीवन-मूल्य, आकांक्षाएँ, उपेक्षाएँ मेल नहीं खाती तभी यह अलगाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है.

सच्चाई यह है कि वृद्धावस्था जीवन की संध्या है यानी डूबता हुए सूर्य के समान है और यही जीवन का सबसे अनिवार्य क्रम है. क्योंकि धरती पर जिसने भी जन्म लिया है उसे एक न एक दिन वृद्ध होना ही है. निराला के अनुसार-

" मैं अकेला हूँ,
देखता हूँ आ रही मेरे दिवस की सांध्य बेला."7

मुख्य रूप से वृद्धों की तीन विशेषताएँ है, वह है- अनुभव, धैर्य, प्रदाय. इन सभी विशेषताओं में से सबसे उत्तम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता है- प्रदाय या प्रदायनी. बुजुर्ग अपनी संतान को अपना सब कुछ देना चाहते हैं परन्तु अब यह उस युवा पीढ़ी पर निर्भर करता है कि वह संतान के रूप में कितना ग्रहण करता है. इन सबके बीच ढलती उम्र चिंता का विषय बन गया है. अत: 60 के पार जीवन के बाद की यह ढलती उम्र चाहे आम मानव हो या लेखक सभी के लिए चिंता का विषय बन जाता है. इस संदर्भ में मैथिलीशरण गुप्त ने बहुत ही दु:ख के साथ लिखा है-

"अब वे वासर बीत गए,
मन तो भरा-भरा है लेकिन,
तन के सब रस रीत गए,
चमक छोड़ चौमासे बीत,
कंवल छोड़कर शीत गए,
लेकर मधु की ऊष्मा सारी,
मेरे मन के पीट गए,
अब तो कावल गूंज बची है,
जीवन के सब गीत गए,
इस राम जाने जीवन में,
हम हारे या जीत गए."8

समाज में वृद्धों के समक्ष उभर कर जो समस्याएँ आ रही है, वह है- शारीरिक एवं मानसिक तनाव, परिवार से अलगाव, बेगानापन का भाव, आर्थिक असमर्थता, दो पीढ़ियों के बीच मानसिक टकराहट इत्यादि. यद्दपि यह समस्या उतनी ही गंभीर है जितनी वृद्धों के समाज में समन्वय की समस्या है. वृद्धों के समाज में समन्वय न होने के मुख्य दो कारण है- पहला यह कि उम्र बढ़ने से व्यक्तिगत परिवर्तन एवं दूसरा यह कि वर्त्तमान औद्योगिक समाज का अपने वृद्धों से व्यवहार का तरीका. जैसे-जैसे व्यक्ति वृद्ध होता जाता है, समाज में उसका स्थान एवं रोल या यूँ कहे कि उसकी भूमिका बदलने लगता है.

इस प्रकार, यदि हम साहित्य की बात करे तो अनेक ऐसे लेखक, कहानीकार एवं उपन्यासकार

है जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से वृद्ध जीवन की विडम्बनाओं को पाठकों के समक्ष रख दिया है. साथ ही वृद्धों के प्रति दृष्टि एवं अपने परिवार में रहकर भी उनकी क्या स्थिति है आदि बातों से रू-ब-रू करवाया है. साथ ही परिवारिक एवं सामाजिक विषमताओं से भी अवगत करवाया है. अत: वृद्ध जीवन के यथार्थ से अवगत करवाने वाली अनेकों कहानियाँ है जैसे- 'बीच बहस में', (निर्मल वर्मा), 'कोई दूसरा नहीं', (जाया जादवानी), 'सोने की चिड़िया,' (हरी प्रकाश राठी), जबकि 'बूढी काकी', (प्रेमचंद), 'बुढ़वा मंगल', (रवीन्द्र कालिया), 'दादी अम्मा', (कृष्णा सोबती), 'वापसी', (उषा प्रियम्बदा) 'एक बूढ़े की मौत,' (शशि भूषण द्विवेदी) आदि कहानियों में वृद्धों की स्थिति को दर्शाया गया है. साथ ही साथ 'चीफ की दावत', (भीष्म साहनी), आदि के माध्यम से वृद्धों की समस्याओं को बड़ी ही गंभीरतापूर्वक दर्शाया गया है.

'बुढ़वा मंगल' कहानी में रवीन्द्र कालिया ने एकाकीपन और अलगावपन का ताना-बाना बुना है. इसमें अपने बेटे के बुलाने पे जब वृद्ध पिता ट्रेन के ए.सी. डब्बे से बैंगलोर जा रहा होता है तब उस वृद्ध को अपनी जीवन साथी की याद आती है- "उसे अब लगा कि अब वह कोल्हू के बैल की तरह जीवन बिता रहा है. इस आराम देह गाड़ी में उसे अपनी बुढ़िया की बड़ी तेज याद आई. वह साथ में होती तो कितना खुश होती."9 वृद्ध मन की यह अकुलाहट अकेलेपन में अपनी जीवन संगनी के साथ अपने मनोदशा को अभिव्यक्त करने के लिए खोजता फिरता है ताकि अपनी मन की बात बता सके. परन्तु अपने सुख-दु:ख आदि की भरपाई अपनी संगनी के साथ न कर पाने के कारण यह एकांत मन व्याकुल हो उठता है.

'एक बूढ़े की मौत' कहानी में शशि भूषण शर्मा ने वृद्ध व्यक्ति की अकुलाहट को अभिव्यक्ति प्रदान करने का प्रयास किया है. इस कहानी का मुख पात्र जानकी बाबू अपने आप को जब भी अकेला महसूस करते तब वे अपने इस सूनापन को मिटने के लिए बाहर घूमने चल जाया करते. कहानीकार उनके माध्यम से उनके विचारों को सहज ही ढंग से बताने का प्रयास किया है- "जानते हो जिंदगी में मृत्यु का आना कितना जरुरी है....उस फूल को देखों और मेरी बातों को ध्यान से सुनों.....द्य"10 दरअसल यह उनकी मन:स्थिति है जो कि एकांकीपन की अकुलाहट को उभार रहा है. अकेलापन का यह उग्र रूप ही उनके जीवन का कारण बन जाता है.

हिंदी उपन्यास साहित्य विधा भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं हैं. अनेकों उपन्यासकार ने अपनी लेखनी के माध्यम से वृद्धों की समस्याओं को केंद्र में रखकर रचना की है. 'अंतिम अरण्य'(निर्मल वर्मा), 'गिलीगड्डू'(चित्रा मुद्गल), 'दौड़'(ममता कालिया), 'रेहन पर रग्घू' (काशीनाथ सिंह), 'जीने की राह' (विजय शंकर राही), 'अपने अपने अजनवी' (अज्ञेय), 'समय-सरगम'(कृष्णा सोबती) आदि उपन्यास वृद्ध जीवन पर केन्द्रित उपन्यास है. इन सभी रचनाओं के सहारे वृद्ध जीवन और आज के पीढ़ी के बदलते संबंधों के सहारे सांस्कृतिक परिवर्तन को आसानी से दर्शाया गया है. साथ ही इसी अलगाववादी प्रवृति के कारण वृद्ध माता-पिता आज प्रवास में जीवन बिताने के लिए विवश है.

'अंतिम अरण्य' उपन्यास वृद्धों की स्थिति एवं उसकी नियति से सम्बंधित है. साथ ही साथ व्यक्ति की असीम कल्पनाओं एवं अपेक्षाओं से युक्त है. क्योंकि उम्र का यह पड़ाव अपनों से हद अपनी अगली पीढ़ी से अपेक्षाएँ कर बैठता है परन्तु जब उनकी अपेक्षाओं की कसौटी पर नई

पीढ़ी नहीं उतर पाती है तभी यह मानसिक टकराहट की स्थिति उत्पन्न होती है. इसमें ऐसे चरित्र भी है जो अँधेरे की यातना से घिरे इस धरती के अधूरे आत्मखंडित व्यक्तित्व है. जिसकी पूर्णता को कलाकृति अपने सत्य से निर्मित करती है. मेहरा साहब एक ऐसे ही पात्र है जो कि द्वन्द्वात्मक परिस्थितियों से घिरा हुआ है. वे औरों की तरह कमजोर, खासते हुए चरित्र वाले व्यक्ति नहीं है बल्कि उस सघन यात्री के सामान है जिनके जीवन में स्मृतियाँ उनका पिछा नहीं छोड़ती. इसके बावजूद भी अनकही यातनाओं उन्हें स्पर्श कर ही जाती. अत: मूल रूप से इसमें वृद्ध जीवन की स्मृति, इतिहास, प्रकृति, जीवन, प्रतिक, मिथक, आदि जैसे शांत भाव है.

'लालटीन की छत' उपन्यास की पात्रा काया अकेलेपन के कारण डरती भी है और अकेले बड़बड़ाती भी रहती है- "दिनभर का अकेलापन, गुस्सा, हताशा आपस में गूँथ कर एक धुंध का गोला सा बन जाते, जो न इतना कोमल होता कि आसुओं में पिघलकर बाहर आ सके, और न इतना सख्त कि वह उसकी पकड़ में आकर किसी सूझ, किसी समझदारी की सांत्वना में बदल सकें."11 इसके अतिरिक्त यह टकराहट ही अलगावपन एवं बेगानापन जैसी मन:स्थतियों का कारण बनती है जिसके चलते अंतर्द्वंद्व उत्पन्न होता है और एक समय के पश्चात यह वृद्धा अपने वृद्धावस्था से तंग आकर मृत्यु की राह जोहता-फिरता है.

'गिलीगड्डू' उपन्यास में वृद्ध जसवंत सिंह अपने पोते के जन्मदिन पे पार्टी देना चाहते हैं और भावनात्मक तौर से बच्चे से जुड़ने की कोशिश करते हैं. परन्तु मलय(पुत्र) द्वारा दिया गया अपने पिता को करारा जवाब उसके दिल को ठेस पहुँचाता है, "उसका यह कार्यक्रम उसके दोस्तों के साथ है. घर वाले इसमें शामिल नहीं होंगे. मम्मी को वैसे भी जन्मदिन मनाने में झंझट होता है.... न, न दादू. हम अपने से बड़े किसी को भी नहीं ले जायेंगे वरना पार्टी बोरिंग हो जाएगी."12 वृद्ध जीवन की एकमात्र यही आश होती है कि वृद्धावस्था में उसके अपने उसके साथ हो परन्तु वही अपने अपनी नई पीढ़ी के आगे उन्हें वृद्धा जान कर अपने किसी भी कार्य में शामिल करने से हिचकिचाते हैं जिसके चलते आज समस्त वृद्धजनों को प्रवास में रहकर अकेलापन का शिकार होना पड़ता है.

'रात का रिपोर्टर' उपन्यास में निर्मल वर्मा ने वृद्ध जीवन के आतंकित मन से वाकिब करवाया है. भय, आतंक के कारण ही 'रात का रिपोर्टर' के नायक रिशी स्वयं को असुरक्षित महसूस करने लगता है. जीवन का यह अकेलापन भय का कारण होता है. इसी मनोदशा को उजागर करते हुए भय का चित्रण किया है- "वह लाइब्रेरी की तरफ चलने लगा. कोई उसका पीछा नहीं कर रहा था, सिवाय उसके डर के, जो वह सज्जन व्यक्ति उसके पास छोड़ गये थे . सैतीस साल की उम्र में उसने तहर-तरह के डर भोगे थे , लेकिन वे उसके भीतर थे, उसे टोहने के लिए उसी नंगी सड़क पर पीछे मुड़-मुड़ कर देखना नहीं पड़ता था. किन्तु यह एक नए किस्म का डर था."13 वृद्धों के समक्ष सबसे बड़ी त्रासदी है- अकेले जीवन-यापन करना.

'दौड़' उपन्यास में ममता कालिया ने उपभोक्तावादी संस्कृति को दर्शाया गया है. जिसमें आज का युवा वर्ग पूरी तरह से ग्रसित होता चला जा रहा है जिसके चलते माँ-बाप को भी भूल बैठते हैं. यही कारण है कि आज मानवीय मूल्यों की क्षति होती जा रही है और व्यक्ति काल के गाल में धसता हुआ चला जा रहा है. ममता कालिया ने पवन, स्टेला और सघन के जरिये एक ओर जहाँ पारिवारिक संबंधों में आए विवशता को दर्शाया है तो वहीं दूसरी ओर एक ऐसे कटु सत्य के

भी दर्शन कराए है जिसका परिणाम प्राय वे सभी परिवार भुगत रहे हैं जिनके बच्चे प्रवासियों के तरह हो गए हैं. जिनके लिए पराया देश और वहाँ की सुख सुविधा तथा नौकरी के झमेलों में फंसे हुए है. मिस्टर और मिसेज सोनी ऐसे ही दो मजबूर माता-पिता है. उनका बेटा सिद्धार्थ विदेश में जाकर बसा है. मिस्टर सोनी को अचानक दिल का दौरा पड़ता है और वे गुजर जाते हैं. जब सिद्धार्थ को फर्ज की विधि के लिए बुलाया जाता है तो बहाने बनता है कि उसके घर तक आने में हफ्ते भर से अधिक समय लगेगा. अत: वह अपनी माँ को समझाते हुए कहता है- "हम सब तो आज लुट गए ममा. लोग बता रहें हैं मेरे आने तक डैडी को रखा नहीं जा सकता. आप ऐसा कीजिए. इस काम के लिए किसी को बेटा बनाकर दाह-सत्कार (क्रिया-कर्म) करवाइए. मेरे लिए तेरह दिन रुकना मुश्किल होगा."14 यह है आज के युवा वर्ग की सोच एवं अपने माता-पिता के प्रति कर्तव्य-बोध जिसे देख सोचने पर विवश होना स्वाभाविक है.

भूमंडलीकरण के जंजाल में पड़ने वाले आदमियों में अधिकांश हर प्रकार की सामाजिक संबंधों को अनावश्यक और अनर्थ समझने वाले रिश्तें हैं. जो कि पश्चिम देशों के व्यापार ने लोगों के मन मस्तिष्क से उपज कर आया है. भूमंडलीकरण के पीछे यहाँ के युवा आँखें मूंदकर, तन-मन-धन देकर एवं अपनी संस्कृतियों को भूलकर यहाँ तक कि अपने माता-पिता की भी परवाह किये बिना आज का युवा वर्ग 'दौड़' लगा रही है.

'हमारा शहर उस बरस' उपन्यास में गीतांजलि श्री नें युवा पीड़ी के खोखलेपन को बखूबी उभारा है. दद्दू धड़ल्ले से युवा वर्ग की कमजोरियों पर कटाक्ष करते हैं. जब श्रुति दद्दू से समाज और संस्कृति के नाम पर गोष्ठी की बात करती है तो दद्दू नि:संकोच युवा वर्ग के खोखलेपन का उपहास करते हैं- "बंडल होगा.....पैसा बहेगा, दारू बहेगी, कागज पर लिखा जायेगा, धड़ाधड़ लेख छपेंगे, नाम होगा."15 समकालीन युवा पीढ़ी आज पूरी तरह से बाजार में तब्दील होता प्रतीत हो रहा है.

'समय सरगम' उपन्यास में कृष्णा सोबती ने कामिनी और दयमंती जैसी स्त्रियों के माध्यम से यह दर्शाया है कि उसके पास सब होते हुए भी परिवार से दूर हो गयी है. दयमंती अकेली रहती है और अरण्या से अपने मनोभाव को व्यक्त करते हुए कहती है- "बच्चे साथ रह रहे हैं मेरा घर मेरा किचन चल रहा है. खर्चा मैं कर रही हूँ और मैं अकेली पड़ी हूँ. बिना इजाजत के मेरा सामान इधर से उधर करते रहते हैं. पीछे आश्रम गयी तो माधव को धमकाते रहते हैं. बताओं ममा लॉकर की चाभी कहाँ है.....कुछ कहो अरण्या. बच्चों की ऐसी हरकत से मेरा धीरज खत्म हो रह है."16 निश्चित ही अकेलापन तब बोझ बन जाता है जब व्यक्ति अपनों से दूर रहता है. तभी निरंतर अजीबों-गरीब ख्यालात मन-मस्तिष्क पर हाबी होने लगता है. ईशान और अरण्या के माध्यम से लेखिका ने कुछ और वृद्ध जीवन की समस्याओं से मुखरित कराया है. अरण्या का यह जीवन उनके वृद्ध जीवन का भोगा हुआ यथार्थ है. वह कहती भी है- "परिवार की सांझी श्रीसम्पदा और सम्पन्नता में निहित है. आप इस साझेपन के हिस्सेदार हैं तो स्नेह, ममता भी प्रचुर होंगीद्य"17

समकालीन दौर में बच्चे भी इस प्रवृति से बच नहीं पाए है. पहले एक समय ऐसा था जो आर्थिक तंगी के कारण लोग कमाने खाने के उद्देश्य से विदेश में जाकर बस जाते थे परन्तु आज का यह दौर कमाने-खाने के लिए अकेले ही जाते हैं और वृद्धों, पत्नी, और बच्चों को छोड़ जाते हैं. वृद्ध को दर-दर भटकने के लिए छोड़ देते हैं- "यूएनपीएफ के आकलन के मुताबित देश के

ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में कूल मिलकर 20 फीसदी बुजुर्ग अकेले या फिर अपने जीवन साथी के सहारे अपना जीवन काटने को विवश है. तमिलनाडु में यह स्थिति 50 फीसदी से अधिक आ चुकी है जबकि गोवा, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, केरल में यह दर काफी ज्यादा है."18

भारतीय कहावत है- पूत कपूत हो सकता है पर माता कभी कुमाता नहीं होती अर्थात् पुत्र भले ही कुपात्र हो जाए पर माँ-बाप कभी कुपात्र नहीं होते. मुख्य तौर से देखा गया है कि आज के समय में वृद्ध की समस्या एक सामाजिक समस्या बन गई है. इसके समाधान के लिए परिवार, समाज और सरकार को साझेदारी से काम करने की आवश्यकता है. अत: वृद्धों को वृद्धाश्रम में रख देने मात्र से इसका निपटारा नहीं हो सकता.

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 डॉ. सुखविंदर बाढ, पंजाबी लोक साहित्य, संस्कृत का आईना, पृष्ठ-82
2 डॉ. मधुकर पांडवी, कहानी निर्मल वर्मा और माधुरी का तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ-45
3 ीजजचः//ूपदकपे.उ.ल.बवउ
4 डेमोग्राफी इंडिया, अंक-23, पृष्ठ-108
5 चौधरी डी.पाल, ऐजिंग एंड द एजेण्ड, 1992, नई दिल्ली, पृष्ठ-10
6 प्रियदर्शन, संपादक, बड़े बुजुर्ग, पृष्ठ-30
7 ा.अपज.ावी.वतह/ाा/मैं;अकेला;;सूर्यकांत;त्रिपाठी; "निराला"
8 ा.अपज.ावी.वतह/ाा/अब;वे;वासर;बीत;गए;(कविता);"मैथिलीशरण गुप्त"
9 प्रियदर्शन, संपादक, बड़े बुजुर्ग, कहानी, पृष्ठ-34
10 शशि भूषण शर्मा, एक बूढ़े की मौत, कहानी, पृष्ठ-57-58
11 डॉ. निमल वर्मा, लालटीन की छत, उपन्यास, पृष्ठ-35
12 चित्रा मुद्गल, गिलिगडु, उपन्यास, पृष्ठ-33
13 डॉ. निर्मल वर्मा, रात का रिपोर्टर, उपन्यास, पृष्ठ-58
14 ममता कालिया, दौड़, उपन्यास, पृष्ठ-65
15 गीतांजलि श्री, हमारा शहर उस बरस, उपन्यास, पृष्ठ-145-146
16 कृष्णा सोबती, समय सरगम, उपन्यास, पृष्ठ-74
17 वहीं, पृष्ठ-74
18 हर्ष मंदर, बोझ नहीं जिम्मेदारी है बुजुर्ग, डॉ. कमलेश सिंह, दैनिक भास्कर, हिंदी समाचार पत्र, पृष्ठ-4

शोध निर्देशिका
डॉ. सीमा चंद्रन
सहायक आचार्य
हिन्दी व तुलनात्मक साहित्य विभाग
केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड
मोबाइल- 9447720229

ई- मेल-drseem-ch-ndr-ncukhindi@gm-il-com
DR-SEEMA CHANDRAN
PALAKKIL KALIYATH HOUSE
ODAYAMMADAM
CHERUKUNNU (P-O)
KANNUR(DISTRICT)
KERALA&670301
MOB&09447720229

शोधार्थी
सीमा दास
केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय
हिंदी व तुलनात्मक साहित्य विभाग
केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय,कासरगोड
केरल।

 ISSN 0975-735X

समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में निम्नवर्गीय नारी

डॉ. बळीराम संभाजी भुक्तरे

भारत की संवैधानिक स्वतंत्रता के बाद नारी को समान अधिकार दिये गये परिणाम स्वरुप नारी की सामाजिक] आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है। इतिहास साक्षी है भारत मे नारी को जो अधिकार मिले है। वे किसी विद्रोह फलस्वरूप नहीं]बल्कि डेढ सौ वर्षो की सामाजिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप मिले। देश के स्वाधीनता संग्राम में पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर जूझने के परिणाम स्वरुप मिले। केवल मात्र भावुकता या स्त्रियों के प्रति किसी प्रकार की संवेदना के फलस्वरुप ये अधिकार महिलाओं को नहीं दिये गए] बल्कि भारतीय नारी ने अपनी योग्यता एवं कार्य कुशलता की स्वीकृति के आधार पर ही प्राप्त किये है। नारी की वास्तविक परिवर्तन की एक लंबी भूमिका है। एक ओर समाज सुधार आंदोलनों की प्रक्रिया में नारी चेतना को बल मिला]वही दुसरी और राष्ट्रीय आंदोलनो में अपने आत्म विश्वास को पहचान कर उन्होंने अपने हक्कों की मांग की। समता] रोजगार] f"k[kk] सम्पति] परिवार के लिए उन्होने जमकर आवाज उठाई। राश्ट्रीय एवं आंतरराष्ट्रीय स्तर पर नारी चेतना और नारी के अधिकारों के लिए अनेक संगठन बने। उन सारी नारी विकास की गतिविधियों के कारण आज नारी विभिन्न क्षेत्रो मे अपनी निजी पहचान बना रही है। साहित्य] समाज] f"k[kk] विज्ञान]कला] राजनीति आदि क्षेत्रों में वह सक्रिय है। आज सारी दुनिया मे नारी प्रश्नों को लेकर ही गर्मा –गर्मी हो रही है। एक समय था कि साहित्य की परिधि में पुरुष ही था] वहाँ आज नारी है। आज का युग नारी का है। नारी के अलावा पुरुषों ने भी ।

नारी जीवन को स्वायतता प्रदान करने हेतु प्रयास– प्रारंभ किए है। 'बेटी बचाव' का नारा दिया जाने लगा। इन कार्यों का सीधा प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा हुआ दिखाई देता है। स्वयं नारी अपनी जाति की विडम्बनाओं] खामियो एवं खूबियों को अनूठी अभिव्यंजनात्मक एवं अधिकार की भाषा में पेश कर रही है। आज नारी सृजन नारी चेतना का नया इतिहास बन रहा है। ''समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में भी महिला उपन्यासकारों में नारी चेतना के विचार जोर पकड़े हुए है। निरुपमा सेवती] मृदुला गर्ग] मालती जोशी] मंजुल– भगत] कृष्णा सोबती] ममता कालिया] मैत्रेयी पुश्पा]चित्रा मृद्‌गल] प्रभा खेतान आदि के उपन्यास साहित्य में नारी चेतना का स्वर प्रखर हुआ है। समकालीन हिन्दी साहित्य में जिन महिला उपन्यासकारों ने नारी जीवन की गतिविधियों को अपने उपन्यासों मे स्थान दिया है उनमें मंजुल भगत का नाम शीर्षस्थ है। उन्होंने बदलते संदर्भ में नारी की बदली हुयी मानसिकता एवं समस्याओं को केन्द्र में रखकर अपने औपन्यासिक संसार का सृजन किया है।''1

मंजुल भगत समकालीन हिन्दी उपन्यास की प्रमुख लेखिका

है। सन 1970 से छुट पुटे लेखो द्वारा हिन्दी साहित्य लेखन में प्रवेश करने वाली मंजुल भगत ने छ उपन्यासों का सृजन किया है। इनके उपन्यासों के नारी पात्र विशिष्ट व्यक्तित्त्व को लिए हुए प्रकट होते है। यही इनके उपन्यासों को विविधता प्रदान करता है। इनके नारी पात्र वर्ग विशेष का प्रतिनिधित्व करते है। निम्नतम वर्ग से लेकर उच्चतम वर्ग के दु:ख एवं संवेदनाओ से ये पाठको का तादात्म्य कराने मे सिद्ध हस्त है। मंजुल भगत के उपन्यासों में 'अनारो' यह प्रतिनिधी उपन्यास माना जाता है। महानगरीय बोध का यथार्थ चित्र अनारों मे अंकित हुआ है। यह लेखिका की प्रौढतम रचना है। ''इसके माध्यम से लेखिका ने निम्नवर्ग की समस्त भयावह सच्चाईयों को उध ाडने का प्रयास किया है।''2 प्रस्तुत उपन्यास को यशपाल प्रतिष्ठान व उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत हुआ है। इस उपन्यास का रुसी] जर्मन] अंग्रेजी और कन्नड भाषा में भी अनुवाद हुआ है। ''सन 1977 में लिखे गए 'अनारो' इस उपन्यास में लेखिका मंजुल भगत ने देश की राजधानी दिल्ली में जो झुग्गी झोंपड़ियाँ है। उनमें रहनेवालो के ग्रहणीय जीवन का चित्रण किया है।''3

महानगरीय पृष्ठभूमि पर लिखे गए उपन्यासों में पहली बार अनारो मे ही नारी को व्यापक संवेदना प्राप्त हुई है। इसमें नारी की जिजीविषा को पहचाना गया है। इस परिवर्तित समाज मे नारी की समर्थता को चित्रित किया गया है। ''वस्तुत: 'अनारो' यह नारी विमर्श का एक नमूना है। अनारो यह एक संघर्षशील नारी की संघर्ष गाथा है। उसका संघर्ष जीवन के विरुद्ध है। वह निम्न वर्ग में रहकर मध्यवर्ग की तरह अपना जीवनयापन करना चाहती है। लड़की की सगाई में काफी कर्जा लेती है और चुकाते चुकाते एकदम टूट जाती है] बीमार हो जाती है। तब भी वह अपने सारे रिश्तेदारों तथा मुहल्ले के लोगों को बुलाकर दावत देती है। इससे उस पर अधिक कर्जा चढ़ जाता है और उसमें वह जिन्दगी भर पिसती रहती है। उसका मानना है कि अपनी बिरादरी में नाम न चला जाये। ''मध्यवर्गीयों के बंगलो में बर्तन मांजने का काम करते करते अनारो भी अपने आपको मध्यवर्गीय समझती है। अपने बेटी की शादी किसी विवाह संस्था में करना अनारो को बिलकूल स्वीकार नही है उसका अपनी श्रमशक्ति पर विश्वास है। वह कहती है गंजी अनारो की बेटी कोई अनाथ नही है कोई कानी लुली नही है चौबारे की ईट नहीं] तो नालो का पत्थर भी नही है अनारो की बेटी है। समाज बिरादरी में झुकना नहीं चाहती यह उसका जीवनसंघर्ष सराहनीय है।''4

अनारो प्रस्तुत उपन्यास की नायिका है जो एक इमानदार आत्मनिर्भर] स्वाभिमानी] रुढीप्रिय तथा समाज भीरु नारी है। ''महानगरीय झुग्गी कॉलोनी में रहकर मध्यवर्गियों की कोठियों में काम करनेवाली अनारो का पति नंदलाल एक आलसी] कामचोर] चरित्रिहीन तथा कर्तव्य से मुख मोड़नेवाला पुरुष है। घर गृहस्थी की पूरी जिम्मेदारी अनारो पर थोप थोपकर वह हर एक दो महीने पर भाग जाता है। जब भी वह लोटता है शराब में अपने को डुबो कर आता है और अनारो की पिटाई करता है। नंदलाल की एक प्रेमिका है जिसका नाम छबीली है।''5 उसे वह अनारो की सौत बनाकर लाना चाहता है। परंतु अनारो के तीव्र विरोध के कारण वह यह कार्य कर नहीं पाता। लेकिन छबीली से अपने संबध अवश्य कायम रखता है। कठोर जुबान वाली अनारो हृदय की अति कोमल व संवेदनशील है। वह नंदलाल से छबीली की संतान को अपने घर लाने के लिए कहती है क्योंकि उसके अनुसार अपनी चीज औरों के घर रखना पाप है। अनारो नंदलाल

 ISSN 0975-735X

को कहती है- ''जब वह तेरा है तो पराये घर की कमाई क्यों खायेगा ले आ उसे यहीं। खिला-पिलाकर बड़ा कर लेंगे। कमाके हमी को खिलायेंगे। फिर दो दो बेटोंवालों को काहे की कमी रह जायेगी।''6 कामचोर नंदलाल पर अनारो कभी रुष्ठ नहीं होती। उसके घर छोड़ भाग जाने पर अनारो उतनी ही तत्परता से उसकी बाट जोहती है।

अनारो उपन्यास व्दारा मंजुल भगत ने निम्न वर्ग की नारी के संघर्षपूर्ण जीवन का परिचय दिया है। महानगरीये झुग्गियों में रहकर कोठियों मे खटनेवाली नारियों का यथार्थ चित्र इस उपन्यास में देखने को मिलता है। निम्न वर्ग की इन नारियों को गरीबी] सौत तथा बच्चों के सिवा और कुछ प्राप्त नहीं है। अनारो भी निम्न वर्ग के इसी स्वाभाविक जीवन का प्रतिनिधित्व करती है। पति नंदलाल गृहस्थी तथा पारिवारिक दायित्त्व का भार अनारो पर सौपकर एक दो महीनों के अंतराल में घर से भाग जाता है।

इसी कारण अनारो आत्मनिर्भर तथा स्वाभिमानी बनती है। पति की लापरवाही पर नाराज न होते हुये जब भी वह लौट आता है तब अनारो आदर्श पत्नी बनकर उसका स्वागत करती है। नंदलाल शराब पीकर अनारों की पिटाई करता है। कर्ज व्यापार में वह पत्नी का साथ नहीं देता। अनारों समझती है कि पति की दृष्टि में उसका मान बना रहें] पुत्री के विवाह का खर्च अनारो अकेली संभाल लेती है। दिनभर कष्ट करने के कारण आहार का कुपोषण मानसिक तनाव आर्थिक अभाव और उपर से तीसरी बार गर्भवती रहने पर किये गर्भपात के कारण अनारो का स्वास्थ पूर्णत: बिगड़ जाता है।

संक्षेप में निम्नवर्ग में नारी का यह संघर्षपूर्ण जीवन मात्र अनारो का ही नहीं बल्कि इसमें हर उस नारी की त्रासदी छुपी है जो आर्थिक अभावों सामाजिक रूढ़ियों तथा पुरुष अत्याचार को सहते हुये भी सम्मानपूर्ण जीने का संघर्ष करती है। निम्नवर्ग की नारियाँ का संघर्ष परिक्षेत्र मानसिक तथा शारीरिक तनावों से युक्त है। सामाजिक रूढ़ियों से ग्रस्त होने के कारण ये नारियाँ विरादरी के रीति-रिवाज संभालते संभालते कर्ज में डूब जाती है। ऐसे त्रस्त जीवन से वह भले ही बाहर से कठोर दिखाई दे] किन्तु हृदय से वे उतनी ही कोमल तथा संवेदनशील है। पति द्वारा दुर्व्यवहार] निम्न वर्गगत सामाजिक] आर्थिक शोषण] संतान की भुख तथा निजी आवश्यकताओं की चीख पुकार कर भयानक तनाव का सामना ये नारियाँ करती है। प्रस्तुत उपन्यास का निम्नवर्गीय नारी पात्र अनारो अपने वर्ग की कामकाजी नारी की दयनीय स्थिति व समस्या का परिचय देती है। अनारो की यह अवस्था भारतीय समाज की नारी जाती पर हो रहे अन्यायों का प्रतिबिंब है।

संदर्भ ग्रंथ :

1- समकालीन हिन्दी उपन्यास डॉ. जालिंधर इंगले
2 हिन्दी उपन्यास साहित्य में स्त्री विमर्श डॉ. बी. के कलासवा
3 दलित चेतना और समकालीन हिन्दी उपन्यास डॉ. मुन्ना तिवारी
4 हिन्दी उपन्यास साहित्य के विकास में साठोत्तरी उपन्यास डॉ. पारुकांत देसाई
5 हिन्दी के समकालीन महिला उपन्यासकार डॉ. एम. वेंकटेश्वर
6 अनारो मंजुल भगत

डॉ- बळीराम संभाजी भुक्तरे

स्नातकोत्तर हिन्दी विभा॰ा/;[ा ,वं ''ाे/ानिदेक]
भा'ाा ,वं साहित; सं''ाे/ान केंद्र]
महारा'ट्र उद;॰िरी महाविद्याल;] उद॰ीर
जिल्हा- लातुर 413517 महारा'ट्र
भ्रम.ा/वनि - 09421909343
इंसपतंउ94/हउंपस.बवउ

आंतरराष्ट्रीय स्तर पर नारी चेतना और नारी के अधिकारों के लिए अनेक संगठन बने। उन सारी नारी विकास की गतिविधियों के कारण आज नारी विभिन्न क्षेत्रो मे अपनी निजी पहचान बना रही है। साहित्य] समाज] f''k[kk] विज्ञान]कला] राजनीति आदि क्षेत्रों में वह सक्रिय है। आज सारी दुनिया मे नारी प्रश्नों को लेकर ही गर्मा -गर्मी हो रही है। एक समय था कि साहित्य की परिधि में पुरुष ही था] वहाँ आज नारी है। आज का युग नारी का है। नारी के अलावा पुरुषों ने भी ।

नारी जीवन को स्वायतता प्रदान करने हेतु प्रयास- प्रारंभ किए है। 'बेटी बचाव' का नारा दिया जाने लगा। इन कार्यो का सीधा प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा हुआ दिखाई देता है। स्वयं नारी अपनी जाति की विडम्बनाओं] खामियो एवं खूबियों को अनूठी अभिव्यंजनात्मक एवं अधिकार की भाषा में पेश कर रही है। आज नारी सृजन नारी चेतना का नया इतिहास बन रहा है। ''समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में भी महिला उपन्यासकारों में नारी चेतना के विचार जोर पकड़े हुए है। निरुपमा सेवती] मृदुला गर्ग] मालती जोशी] मंजुल- भगत] कृष्णा सोबती] ममता कालिया] मैत्रेयी पुश्पा]चित्रा मृद्गल] प्रभा खेतान आदि के उपन्यास साहित्य में नारी चेतना का स्वर प्रखर हुआ है। समकालीन हिन्दी साहित्य में जिन महिला उपन्यासकारों ने नारी जीवन की गतिविधियों को अपने उपन्यासों मे स्थान दिया है उनमें मंजुल भगत का नाम शीर्षस्थ है। उन्होंने बदलते संदर्भ में नारी की बदली हुयी मानसिकता एवं समस्याओं को केन्द्र में रखकर अपने औपन्यासिक संसार का सृजन किया है।''1

मंजुल भगत समकालीन हिन्दी उपन्यास की प्रमुख लेखिका है। सन 1970 से छुट पुटे लेखो द्वारा हिन्दी साहित्य लेखन में प्रवेश करने वाली मंजुल भगत ने छ उपन्यासों का सृजन किया है। इनके उपन्यासों के नारी पात्र विशिष्ट व्यक्तित्त्व को लिए हुए प्रकट होते है। यही इनके उपन्यासों को विविधता प्रदान करता है। इनके नारी पात्र वर्ग विशेष का प्रतिनिधित्व करते है। निम्नतम वर्ग से लेकर उच्चतम वर्ग के दु:ख एवं संवेदनाओ से ये पाठको का तादात्म्य कराने मे सिद्ध हस्त है। मंजुल भगत के उपन्यासों में 'अनारो' यह प्रतिनिधी उपन्यास माना जाता है। महानगरीय बोध का यथार्थ चित्र अनारों मे अंकित हुआ है। यह लेखिका की प्रौढतम रचना है। ''इसके माध्यम से लेखिका ने निम्नवर्ग की समस्त भयावह सच्चाईयों को उध

 ISSN 0975-735X

ाडने का प्रयास किया है।''2 प्रस्तुत उपन्यास को यशपाल प्रतिष्ठान व उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत हुआ है। इस उपन्यास का रुसी] जर्मन] अंग्रेजी और कन्नड भाषा में भी अनुवाद हुआ है। ''सन 1977 में लिखे गए 'अनारो' इस उपन्यास में लेखिका मंजुल भगत ने देश की राजधानी दिल्ली में जो झुग्गी झोंपड़ियाँ है। उनमें रहनेवालो के ग्रहणीय जीवन का चित्रण किया है।''3

महानगरीय पृष्ठभूमि पर लिखे गए उपन्यासों में पहली बार अनारो मे ही नारी को व्यापक संवेदना प्राप्त हुई है। इसमें नारी की जिजीविषा को पहचाना गया है। इस परिवर्तित समाज मे नारी की समर्थता को चित्रित किया गया है। ''वस्तुतः 'अनारो' यह नारी विमर्श का एक नमूना है। अनारो यह एक संघर्षशील नारी की संघर्ष गाथा है। उसका संघर्ष जीवन के विरुद्ध है। वह निम्न वर्ग में रहकर मध्यवर्ग की तरह अपना जीवनयापन करना चाहती है। लड़की की सगाई में काफी कर्जा लेती है और चुकाते चुकाते एकदम टूट जाती है] बीमार हो जाती है। तब भी वह अपने सारे रिश्तेदारों तथा मुहल्ले के लोगों को बुलाकर दावत देती है। इससे उस पर अधिक कर्जा चढ़ जाता है और उसमें वह जिन्दगी भर पिसती रहती है। उसका मानना है कि अपनी बिरादरी में नाम न चला जाये। ''मध्यवर्गीयों के बंगलो में बर्तन मांजने का काम करते करते अनारो भी अपने आपको मध्यवर्गीय समझती है। अपने बेटी की शादी किसी विवाह संस्था में करना अनारो को बिलकूल स्वीकार नही है उसका अपनी श्रमशक्ति पर विश्वास है। वह कहती है गंजी अनारो की बेटी कोई अनाथ नही है कोई कानी लुली नही है चौबारे की ईट नहीं] तो नालो का पत्थर भी नही है अनारो की बेटी है। समाज बिरादरी में झुकना नहीं चाहती यह उसका जीवनसंघर्ष सराहनीय है।''4

अनारो प्रस्तुत उपन्यास की नायिका है जो एक इमानदार आत्मनिर्भर] स्वाभिमानी] रुढीप्रिय तथा समाज भीरु नारी है। ''महानगरीय झुग्गी कॉलोनी में रहकर मध्यवर्गियों की कोठियों में काम करनेवाली अनारो का पति नंदलाल एक आलसी] कामचोर] चरित्रिहीन तथा कर्तव्य से मुख मोड़नेवाला पुरुष है। घर गृहस्थी की पूरी जिम्मेदारी अनारो पर थोप थोपकर वह हर एक दो महीने पर भाग जाता है। जब भी वह लोटता है शराब में अपने को डुबो कर आता है और अनारो की पिटाई करता है। नंदलाल की एक प्रेमिका है जिसका नाम छबीली है।''5 उसे वह अनारो की सौत बनाकर लाना चाहता है। परंतु अनारो के तीव्र विरोध के कारण वह यह कार्य कर नहीं पाता। लेकिन छबीली से अपने संबध अवश्य कायम रखता है। कठोर जुबान वाली अनारो हृदय की अति कोमल व संवेदनशील है। वह नंदलाल से छबीली की संतान को अपने घर लाने के लिए कहती है क्योंकि उसके अनुसार अपनी चीज औरों के घर रखना पाप है। अनारो नंदलाल को कहती है- ''जब वह तेरा है तो पराये घर की कमाई क्यों खायेगा ले आ उसे यहीं। खिला-पिलाकर बड़ा कर लेंगे। कमाके हमी को खिलायेंगे। फिर दो दो बेटोंवालों को काहे की कमी रह जायेगी।''6 कामचोर नंदलाल पर अनारो कभी रुष्ठ नहीं होती। उसके घर छोड़ भाग जाने पर अनारो उतनी ही तत्परता से उसकी बाट जोहती है।

अनारो उपन्यास व्दारा मंजुल भगत ने निम्न वर्ग की नारी के संघर्षपूर्ण जीवन का परिचय दिया है। महानगरीये झुग्गियों में रहकर कोठियों मे खटनेवाली नारियों का यथार्थ चित्र इस उपन्यास में देखने को मिलता है। निम्न वर्ग की इन नारियों को गरीबी] सौत तथा

बच्चों के सिवा और कुछ प्राप्त नहीं है। अनारो भी निम्न वर्ग के इसी स्वाभाविक जीवन का प्रतिनिधित्व करती है। पति नंदलाल गृहस्थी तथा पारिवारिक दायित्त्व का भार अनारो पर सौपकर एक दो महीनों के अंतराल में घर से भाग जाता है।

इसी कारण अनारो आत्मनिर्भर तथा स्वाभिमानी बनती है। पति की लापरवाही पर नाराज न होते हुये जब भी वह लौट आता है तब अनारो आदर्श पत्नी बनकर उसका स्वागत करती है। नंदलाल शराब पीकर अनारों की पिटाई करता है। कर्ज व्यापार में वह पत्नी का साथ नहीं देता। अनारों समझती है कि पति की दृष्टि में उसका मान बना रहें] पुत्री के विवाह का खर्च अनारो अकेली संभाल लेती है। दिनभर कष्ट करने के कारण आहार का कुपोषण मानसिक तनाव आर्थिक अभाव और उपर से तीसरी बार गर्भवती रहने पर किये गर्भपात के कारण अनारो का स्वास्थ पूर्णत: बिगड़ जाता है।

संक्षेप में निम्नवर्ग में नारी का यह संघर्षपूर्ण जीवन मात्र अनारो का ही नहीं बल्कि इसमें हर उस नारी की त्रासदी छुपी है जो आर्थिक अभावों सामाजिक रूढ़ियों तथा पुरुष अत्याचार को सहते हुये भी सम्मानपूर्ण जीने का संघर्ष करती है। निम्नवर्ग की नारियाँ का संघर्ष परिक्षेत्र मानसिक तथा शारीरिक तनावों से युक्त है। सामाजिक रूढ़ियों से ग्रस्त होने के कारण ये नारियाँ विरादरी के रीति-रिवाज संभालते संभालते कर्ज में डूब जाती है। ऐसे त्रस्त जीवन से वह भले ही बाहर से कठोर दिखाई दे] किन्तु हृदय से वे उतनी ही कोमल तथा संवेदनशील है। पति द्वारा दुर्व्यवहार] निम्न वर्गगत सामाजिक] आर्थिक शोषण] संतान की भुख तथा निजी आवश्यकताओं की चीख पुकार कर भयानक तनाव का सामना ये नारियाँ करती है। प्रस्तुत उपन्यास का निम्नवर्गीय नारी पात्र अनारो अपने वर्ग की कामकाजी नारी की दयनीय स्थिति व समस्या का परिचय देती है। अनारो की यह अवस्था भारतीय समाज की नारी जाती पर हो रहे अन्यायों का प्रतिबिंब है।

संदर्भ ग्रंथ :

1- समकालीन हिन्दी उपन्यास डॉ. जालिंधर इंगले
2 हिन्दी उपन्यास साहित्य में स्त्री विमर्श डॉ. बी. के कलासवा
3 दलित चेतना और समकालीन हिन्दी उपन्यास डॉ. मुन्ना तिवारी
4 हिन्दी उपन्यास साहित्य के विकास में साठोत्तरी उपन्यास डॉ. पारुकांत देसाई
5 हिन्दी के समकालीन महिला उपन्यासकार डॉ. एम. वेंकटेश्वर
6 अनारो मंजुल भगत

डॉ-

बळीराम संभाजी भुक्तरे

स्नातकोत्तर हिन्दी विभा॰/;[ा ,वं ´"ाो/ानिदेक]

 ISSN 0975-735X

भा'ाा ,वं साहित; सं"ाो/ान केंद्र]
महारा'ट्र उद;ािरी महाविद्याल;] उदाीर
जिल्हा- लातुर 413517 महारा'ट्र
भ्रम.ा/वनि - 09421909343

इंसपतंउ94/हउंपस.

बवउ

क्षण की अनुभूति की गहनता है क्षणिका /रामेष्ठवर काम्बोज 'हिमांष्ठु'

रामेष्ठवर काम्बोज 'हिमांष्ठु'

कण से ब्रह्माण्ड तक, बिन्दु से सिन्धु तक क्षण से युगों तक चेतना का विस्तार है। स्वनिम से ष्टाब्द तक,ष्ठाब्द से अर्थ तक मानव का चिन्तन अभिव्यक्त हो रहा है । इन सभी का महत्त्व जीवन की सार्थकता में ही समाहित है । सही समय पर किसी कण का , किसी क्षण का , किसी स्वनिम का सही प्रयोग किया तो सार्थक रचना का निर्माण होता है, चाहे वह जीवन-जगत् हो या काव्य हो । जीवन भर कुछ न किया जाए तो जीवन निर्रथक, क्षण भर में जो सार्थक कर लिया जाए तो यष्ठा , जीवन भर अच्छा करते-करते अन्ततः कुछ बुरा कर दिया जाए तो सारे ष्ठुभकर्मों की परिणति अपयष्ठा में हो सकती है । यही सब काव्य के भी साथ है।

क्षण या काल के विस्तार की गहनता ,उसकी नब्ज पर पकड़ किसी रचना की प्राण ष्टाक्ति बनती है। रचना का महत्त्व उसके स्वरूप दोहा , चौपाई, छन्दोबद्ध, छन्दमुक्त, क्षणिका , हाइकु आदि से नहीं है , वरन् उसके कथ्य से है, कथ्य की प्रस्तुति से है, उसमें निहित भाव-संवेदना से है ।केवल छोटी रचना लिखना या बड़ी रचना लिखना किसी महत्त्व का आधार नहीं बन सकता । आकारगत लघुता के कारण फुलचुही महत्त्वहीन नहीं हो जाती और बड़े आकार के कारण चील का महत्त्व नहीं बढ़ जाता । कारण-रचना में कही बात पाठक की संवेदना को , चिन्तन को कितना प्रभावित करती है , वही उस रचना का जीवन है।क्षणिका के सन्दर्भ में भी मैं यही बात कहना चाहूँगा कि समय के किसी महत्त्वपूर्ण क्षण को आत्मसात् करके संष्ठिलज़्ट (संक्षिप्त नहीं) रूप में किया गया काव्य -सर्जन ही क्षणिका है ।क्षणिका किसी लम्बी कविता का सारांष्ठा नहीं है और न मन बहलाने के लिए गढ़ा गया कोई चुटकुला या चुहुलबाजी -भरा कोई कथन।भाव की अभिकेन्द्रिकता, भाज़ा का वाग्वैदग्ध्यपूर्ण प्रयोग एक दिन का काम नहीं , वरन् गहन चिन्तन -मनन ,अनुभूत क्षण की सार्थकता और सार्वजनीनता पर निर्भर है ।

जिस रचनाकार के चिन्तन और अनुभव का फलक जितना व्यापक होगा ,भाज़ा-व्यवहार जितना अर्थ-सम्पष्टक्त होगा ,क्षणिका उतनी ही प्रभावष्ठाली और मर्मस्पर्ष्ठी और मर्मभेदी होगी । आकारगत लघुता को खँगालने के लिए कहीं दूर जाने की आवष्ठयकता नहीं । भारतीय वाङ्मय ही इसके लिए पर्याप्त है ।निम्न उदाहरणों से क्षणिका की प्रगाढ़ता , व्यंजना और घनत्व को समझा जा सकता है-

एक आदमी /रोटी बेलता है /एक आदमी रोटी खाता है /एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है/ वह सिर्फ रोटी से खेलता है/मैं पूछता हूँ-
'यहतीसराआदमीकौनहै? मेरेदेष्ठाकीसंसदमौनहै। **(रोटी और संसद-धूमिल)**

इस तीसरे आदमी की तलाष्ठा कहीं बाहर नहीं करना है । संसद की चुप्पी ही उसकी उपस्थिति दर्ज करा रही है । क्षणिका-एक लक्ष्य (टारगेट)और एक ही गोली, यदि गोली लक्ष्य से भटकी तो उपलब्धि -ष्ठून्य अंक ।यह मेले का खेल नहीं कि दस में से नौ टारगेट पा गए तो अच्छे निष्ठानेबाज हो जाएँगे। ष्टात्रु सामने हो, तो कोई भी कुष्ठाल सैनिक जिसके पास एक ही गोली बची हो, अपना लक्ष्य नहीं खोना चाहेगा ।क्षणिका की इसी तरह की त्वरा धूमिल की पंक्तियों में नजर आती है । इसमें लम्बी कविता की तरह सँभलने का कोई अवसर नहीं । अज्ञेय की 'साँप'

 ISSN 0975-735X

कविता में सभ्यता की परिभाज़ा करते हुए वही तीक्ष्णता गहन लाक्षणिकता लिये नजर आती है–

साँप ! /तुम सभ्य तो हुए नहीं /नगर में बसना /भी तुम्हें नहीं आया।

एक बात पूछूँ–(उत्तर दोगे)/तब कैसे सीखा डँसना /विज़ कहाँ पाया?

क्षणिका में विविध भाज़िक प्रयोग का केवल सन्तुलित अवसर और अवकाष्ठा होता है । अगर वह सहजात नहीं हुआ ,तो दुर्बोध होने के साथ बेअसर भी हो सकता है ।बिम्ब और प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्ति के समय इसका विष्ठोज़ ध्यान रखने की आवष्ठयकता है। भाज़ा की सहजता ष्टाब्दों के सरल या कठिन होने से नहीं, वरन् भावबोध की स्पज़्टता पर आधारित होती है । यदि रचनाकार के भाव और विचार उलझे हुए हैं ,तो सरल ष्टाब्दों में भी अभिव्यक्ति जटिल हो सकती है । पानी–पत्थर,और स्टेच्यू के प्रतीकों का स्वाभाविक समावेष्ठा ,भाज़ा का सहज और सन्तुलित प्रयोग इन क्षणिकाओं में देखा जा सकता है ।दोनों रचनाएँ समय के ष्टाष्ठवत सच की व्याख्या करती हैं–

बहते हुए पानी ने /पत्थरों पर निष्ठान छोड़े हैं /अजीब बात है–

पत्थरों ने /पानी पर/कोई निष्ठान नहीं छोड़ा **(पानी–नरेष्ठा सक्सेना)**

–जी चाहता है /उन पलों को / तू स्टैच्यू बोल दे /जिन पलों में /ष्ठवोष्ठ साथ हो /और फिर भूल जाख़ **(स्टैच्यू बोल दे– डॉ जेन्नी ष्टाबनम)**

वष्टद्धावस्था की उपेक्षा और प्यार की खत्म होती गर्माहट को डॉ सुधा ओम ढींगरा और तुहिना रंजन ने पतझर के माध्यम से बहुत मार्मिक स्वरूप प्रदान किया है ।ष्टाब्दों का नपा –तुला प्रयोग अभिव्यक्ति को बहुत मार्मिक बना देता है–

–झड़े पत्तों से /टुण्ड– मुण्ड हुए /वष्टक्ष,/बच्चों के / घर छोड़कर /जाने के बाद /बुजुर्ग माँ–बाप से लगे। **(अकेलापनः डॉ सुधा ओम ढींगरा)**

–तेरे इंतजार में /जिन आँखों से /बरसे अनगिन सावन/कल देखा –/उन्ही आँखों में / पतझड़ उतर आया हैख़ **(तुहिना रंजन**)

रात–दिन घर–गिरस्ती में मरती –खटती अत्याचार सहती औरत की हूक –भरी व्यथा को **रचना श्रीवास्तव** ने बहुत मार्मिक अभिव्यक्ति दी है । दैनन्दिन जीवन का यह अभिष्ठाप सांकेतिक रूप से चित्रित हुआ है, जिसमें हल्दी –प्याज का लेप सारी व्यथा–कथा कह जाता है–

–उनके कुछ कहते ही / एक भारी रोबीली आवाज / और कुछ कटीले ष्टाब्द/यहाँ वहाँ उछलने लगे / रात मैंने देखा–/माँ /अपनी ख्वाहिष्ठों पर /हल्दी– प्याज का लेप लगा रही थी ।

सुदर्ष्ठान रत्नाकर – टूटे काँच के टुकड़े से आहत मन की और **डॉ.भावना कुँअर** पर्स की तहों में लिपटी निष्ठानियों से 'रिष्ठतों की घुटन' का तीव्रता से अहसास कराती हैं–

–टूटे काँच के टुकड़े तो / तुमने उठा लिये / उनका क्या जो/मेरे दिल के हुए ।

–तुम्हारे पर्स की तहों में/लिपटी रहती थी यादें बनी/मेरी नन्हीं निष्ठानियाँ/ आज वहाँ किसी की/तस्वीर नजर आती है ।

रिष्ठतों की गर्माहट का अस्तित्व बनाए रखने के लिए क्या किया जाए, इसका उपाय है निजता और सामीप्य , जिसे **मंजु मिश्रा** की इस क्षणिका में देखिए–

–बैठने दो / दो घड़ी अपने पास / बस इतना हक दो कि/ पूछ सकूँ–/ तुम क्यों उदास हो ?

कोई विधा अपने आकार –प्रकार से या किसी वरिज़्ठ की कलम से रची होने के कारण

नहीं वरन् प्रभावान्विति होने से ही महत्त्वपूर्ण होती है । क्षणिका का जनमानस से जुड़ना बहुत आवष्ठयक है। प्रेम की संवेदना को उँगली में चुभा काँटा और उसका चले जाना अधिक तीव्र कर देता है । अभिव्यक्ति-लाघव की सादगी और कौष्ठाल प्रसिद्ध हाइकुकार डॉ. सुधा गुप्ता जी के काव्य में अनुस्यूत रहे हैं। अन्तिम वाक्य के **ख्र.**भी अपनी अनकही उपस्थिति से बहुत कुछ कह जाते हैं-

-गुलाबकीनन्हींकंली/तोड़,तुम्हारेबालोंमें/सजादी/उँगलीमेंचुभाकाँटा/रहायाददिलाता/कितुमचली गई ख्र

प्यार का यही अटूट मिलन -माधुर्य , यही जीवन के प्रति चुम्बकीय आकर्ज़ण इन क्षणिकाओं को किसी भी प्रेम -कविता की टक्कर में खड़ा करता है-

-छुओ ,छलको /मिलो मुझसे गीत गाकर/ मिले जैसे नदी सागर/ पास आकर। **(मिलन-केदारनाथ अग्रवाल)**

-मुस्कुराने की /कोष्ठिष्ठों हजार करता है /सुना है वो/अब भी जिंदगी से /प्यार करता है ! (डॉ .ज्योत्स्ना ष्टार्मा)

-धूप आष्ठाओं की / जगमगा कर खिले /जब वो / आकर मिले । **(डॉ .ज्योत्स्ना ष्टार्मा)**

केदारनाथ सिंह प्यार की इसी गर्माहट को नपे -तुले ष्टाब्दों में अनायास कह जाते हैं । पाठक है कि प्यार की उस गर्माहट को परत -दर-परत महसूस करता है-

-उसका हाथ/अपने हाथ में लेते हुए / मैंने सोचा-दुनिया को / हाथ की तरह / गर्म और सुन्दर होना चाहिए ।

(केदारनाथ सिंह)

कवि के लिए कोई विज़य या क्षण छोटा-बड़ा नहीं है, बड़ा है वह भाव-बिम्ब जो आत्मीयता के रस से सम्पष्टक्त है। **अलका सिन्हा** ने 'जिन्दगी की चादर' क्षणिका में चढ़ती उम्र की लड़की के जीवन की विवष्ठाता, को उसकी चौकसी से जोड़कर जिस तीव्रता से अभिव्यक्त कर गई ,उसमें इनका भाज़िक-कौष्ठाल हर पंक्ति को तान देता है । नींद में होने पर भी सजगता में जैसे लाज के साथ एक अज्ञात भय भी समाहित है-

-जिन्दगी को जिया मैंने /इतना चौकस होकर /जैसे की नींद में भी रहती है सजग / चढ़ती उम्र की लड़की/ कि कहीं उसके पैरों से / चादर न उघड़ जाए ।

अनिता ललित हाथ उठाकर दुआ करने के परिणाम की जो कल्पना करती हैं,वह अपनी अभिव्यक्ति की अन्तरंग नवीनता से पाठक को बाँध लेती है-

-हाथ उठाकर दुआओं में/तेरी खुष्ठियाँ माँगी थी मैंने / नहीं जानती थी-/ मेरे हाथों की लक़ीरों से ही निकल जाएगा तूख्र! (**अनिता ललित)**

काव्य में लौकिक प्रतीकों और जन -जीवन से जुड़े बिम्बों की एक अलग खुष्ठाबू होती है । उमेष्ठा महादोज़ी ने धोबी और पटा (जिस पर पट पर वह कपड़े धोता/ पछाड़ता है) का निर्वाह बहुत सन्तुलित रूप में किया है। धोबी की दुर्दष्ठा भी अभिव्यक्त हो रही है , जिससे निकटवर्ती नाता रखने वाला यदि कोई है , तो सिर्फ वही पटा है। 'छुइयो राम, छुइयो राम' का लौकिक प्रयोग जन-संस्कृति का परिचायक ही नही , बल्कि उस पूरे परिवेष्ठा को भी वाणी देता है, जीवन-संघर्ज़ जारी है-

 ISSN 0975-735X

–छुइयो राम, छुइयो राम/ धोबी के पटा / पत्थर है , पत्थर तू /पर देख तो जरा/ धोबी तेरा आज–/ कितने टुकड़ों में बँटा ! **(उमेष्ठा महादोज़ी)**

लौकिक खेल में ' धप्पा' मीनाक्षी जिजीविज़ा की इस क्षणिका में परिचय के व्याज से सुधियों में समाए प्यार की एक भोली –सी अनुगूँज छोड़ जाता है–

–तुमसे परिचय/ जैसे बचपन के खेल–खेल में/ जिन्दगी अचानक पीछे से पीठ पर हाथ रखे / और धीरे से कान में कहे –/ धप्पा---!

चाँद के दाग के बहुत सारे मिथक हैं, लेकिन **डॉ जेन्नी ष्टाबनम** ने यहाँ एक नया प्रयोग किया है –ष्टौतान बच्चे के बहाने, भोलेपन के रस में पगा । वह ष्टौतान बच्चा कुछ भी कर सकता है–

–ऐ चाँद /तेरे माथे पर जो दाग है /क्या मैंने तुम्हें मारा था ? /अम्मा कहती है /मैं बहुत ष्टौतान थी /और कुछ भी कर सकती थी ।

सारा काव्य मानव –जीवन से जुड़ा है । यदि कवि केवल विचारों का घटाटोप प्रस्तुत करने की अनुभवहीनता का परिचय देता है तो क्षणिका के लघु कलेवर में जीवन –दर्ष्टान प्रस्तुत करना उबाऊ हो सकता है ।खुद लिखें और खुद ही समझें वाले रचनाकार खुष्ठा हो सकते हैं कि उन्होंने नाज़ुक पंखों की इस चिड़िया पर कई किलो बोझ लाद दिया है । इसके विपरीत इमरोज और सर्वेष्ठवर की क्षणिकाओं में जीवन –दर्ष्टान किसी बोझिल व्याख्या का नहीं वरन् घाटियों में कल–कल करती पतली निर्मल जलधारा का अहसास कराता है–

–जीने लगो/तो करना/फूल जिंदगी के हवाले/जाने लगो/तो करना/बीज धरती के हवाले**ख़ (जिंदगी–इमरोज)**

–घास की एक पत्ती के सम्मुख/मैं झुक गया/और मैने पाया कि/मैं आकाष्ठा छू रहा हूँ । (समर्पण–सर्वेष्ठवर दयाल सक्सेना)

दूसरों के प्रति नकारात्मक दष्टज़्टिकोण का प्रभाव बहुत व्यापक होता है। केवल अपने सुख की चिन्ता करने वाले स्वकेन्द्रित लोगों को बलराम अग्रवाल ने सचेत किया है–

ष्टाब्द को/ ष्टूल न बनाओ/ न सुई बनाकर / हवा में फेंको / फूट जाएँगी / सभी ओर हैं---मेरी आँखें !

जीवन आस्था और विष्ठवास का नाम है। **डॉ.उमेष्ठा महादोज़ी** ने सूरज की किरणों से ,माथा चूमने से इसे पुख़्ता किया है । कुल मिलाकर आनन्द के जिस गत्यात्मक बिम्ब की सष्टज़्टि की है , वह बहुत मनोहारी होने के साथ सकारात्मक सन्देष्ठा भी लिये है। कुष्ठाल चितेरा इन पंक्तियों को रंगों में समेट सकता है–

कल सुबह / जब मैं उठूँगा / सामने होंगी---मेरा माथा चूमती हुई / कुछ किरणें–सूरज की / मैं थोड़ी देर आँखें मूँदूँगा, मुस्कराऊँगा/ और फिर/ दिन भर के काम पर लग जाऊँगा ।

डॉ .मेष्ठा महादोज़ी ने बरसों से क्षणिका के लिए सार्थक कार्य किया है । दूसरी ओर **पूर्णिमा वर्मन** ने अनुभूति के माध्यम से विष्ठवभर की चुनी हुई क्षणिकाएँ प्रस्तुत की हैं ; जिससे इस ष्टौली का महत्त्व बढ़ा है । क्षणिका के क्षेत्र में उनका अपना एक अलग अन्दाज है, सूरज के आगमन से जीवन को निखारने वाली आस्था की संष्ठिलज्ट प्रस्तुति की है , 'उदासी' की सारी धूल झाड़कर जीवन –अनुराग का सन्देष्ठा दिया है–

–फिर उदासी की दरारों से / कोई झाँकेगा/ कहेगा–आँख धो लो /जल्द ही सूरज को आना है ।

त्रिभुवन पाण्डेय भी उसी आस्था और आष्ठवस्ति को 'घर' के माध्यम से अपनेपन की एक स्फुलिंग जगा जाते हैं–

–तूफान के गुजर जाने के बाद/ हर बार गाती रहती है / चिड़िया छत पर / घर।

–जहाँ कुछ भी नहीं / लेकिन सब कुछ होने का /आष्ठवस्ति –भरा स्वर / घर

कमला निखुर्पा इसी आस्था को 'दीप' क्षणिका के माध्यम से इस प्रकार प्रस्तुत करती हैं–

–दीप भावों के /महकती चाहों के / जलाना जरूर / सूना–सा कोना मन का / झिलमिलाएगा जरूर

प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य को इस नन्ही –सी क्षणिका में पिरोना , बिम्बों को साधना भाज़ा की कुष्ठालता के बिना सम्भव नहीं । अज्ञेय की ये क्षणिकाएँ बहुत मुखर हो उठी हैं–

–सूप–सूप भर/धूप–कनक / यह सूने नभ में गयी बिखर:/चौंधाया/ बीन रहा है /उसे अकेला एक कुरर।**(अज्ञेय)**

नन्दा देवी पर केन्द्रित अज्ञेय की 14 क्षणिकाओं में से एक यह,जिसका समापन केवल के साथ नहीं बल्कि बाद में आए डॉटख़ के साथ हुआ है–

– निचले /हर ष्ठाखर पर/देवल : / ऊपर/निराकार/ तुम / केवलख़

रंजना भाटिया गुलमोहर के फूल के चित्रण में दष्ठष्ठय और स्पर्ष्ठा बिम्ब को अनायास अहसास करा जाती हैं–

गुलमोहर के फूल/जैसे हाथ पर कोई / अंगार है जलता ।

डॉ.अनीता कपूर ने रात्रि के सौन्दर्य का बहुत सुन्दर और प्रभावी दष्ठष्ठय बिम्ब प्रस्तुत किया है । 'चाँद का गोटा' एक नया ही भाव–बोध उजागर करता है–

–चाँद का गोटा लगा/किरणों वाली साड़ी पहने/ सजी सँवरी रात ने / बन्द कर दिया / दरवाजा आसमान का।

उपर्युक्त बातों से मेरा मन्तव्य इतना भर है कि काव्य का कोई भी रूप हो वह यदि भाव–विचार–कल्पना से संवलित नहीं होगा, तो वह कुछ भी हो ,पर काव्य नहीं होगा । आदमी का सुख –दुख , हर्ज़–विज़ाद जो ष्टाब्द न बाँध सकें ,वे माला का हिस्सा नहीं बन सकते । विज़यवस्तु और प्रस्तुति दोनों का सार्थक संयोजन, संगुम्फन महत्त्वपूर्ण है , तभी रचना निखर सकती है। **डॉ.सुरेन्द्र वर्मा** की क्षणिका 'आस्तीन तुम्हारी' इसका खूबसूरत उदाहरण हो सकती है–

–यों तो तुम्हारी आँखों में / झिलमिलाती चमक थी/ लेकिन मैंने अपना सिर / जब तुम्हारे / कन्धे पर टिकाया / आस्तीन तुम्हारी गीली थी।

और ये आँसू यूँ ही नहीं मिल जाते , इनको पाने के लिए भी सौदा करना पड़ता है । जितेन्द्र जौहर ने यह सौदा मिठास चुकाकर इस प्रकार किया है–

मैंने / मिठास चुकाई है, /तब जाकर मिला है मुझे/तुम्हारा खारापनख़!/ऐ आँसुओ ! / तुम्हेंख़ यूँ न जाने दूँगा /आँखों की दहलीज छोडकरख़!

हरकीरत 'हीर' गहन संवेदना की कवयित्री हैं। इनकी क्षणिकाओं में प्रेम की अनुभूति, अपरिचय का मुखर प्रतिरोध ,दोनों ही अपनी पूरी तीव्रता के साथ उपस्थित हैं। प्रतीकों का भी

 ISSN 0975-735X

समुचित निर्वाह किया गया है–

1–आज की रात/तुम अक्षर हो जाना/मैं सफहा हो जाऊँगी/ जी चाहता है आज/ जन्म दूँ इक नज़्म ख़्व

2–तुमने नहीं पढ़ा /जब किसी गैर ने उसे पढ़ा/वह बाजारू हो गई ख़्वख़्व!!

डॉ.कविता भट्ट के अनुभव और संवेदना का फलक बहुत व्यापक है। जीवन के छोटे–छोटे क्षण उनकी रचनाओं में पाठक की संवेदना को झकझोर कर रख देते हैं। अर्थ की सूक्ष्म पकड़ में आपको महारत हासिल है। इन क्षणिकाओं 'प्रेम' और 'प्रेम को प्राप्त करने की आतुरता की अभिव्यक्ति की प्रस्तुति , किसान और आकाष्ठा जैसे लोक –प्रचलित सहज प्रतीकों के प्रयोग भी देखिए–

–जिंदगी–जिस ष्ठिद्दत से देखते हो /तुम मेरा चेहरा / काष्ठा ! जिंदगी भी / उतनी ही कष्ठिष्ठा–भरी होती ।

–प्रणय–निवेदन–जिस उम्मीद से / किसान देखता है /आकाष्ठा की ओर /उसी उम्मीद–सा है, प्रिय! / तुम्हारा प्रणय–निवेदन।

–मिलन में भी–प्रेम की पराकाज्ठा /तुमसे लिपटी हुई /तुम्हारे पास ही होती हूँ / तब भी तुम्हारी ही याद में रोती हूँ।

कुछ क्षणिकाएँ **रामेष्ठवर काम्बोज 'हिमांष्ठु'** की भी, इनमें कुछ है या नहीं, पाठकों तय करें–

पतझर /ऊपर से आँधी/ पकड़ो न पात /बचा ठूँठ/ बाहों में भर लो,तो फूटेंगी कोंपल।

वनखण्डों के पार/ पिंजरे में बंद/ प्रतीक्षारत / व्याकुल सुग्गा /कहीं वह तुम तो नहीं ?

न ष्ठूल –सी चुभे न कील–सी खुभे ,बस आस्तीन बनकर आँसू पोंछ दे ,तो क्षणिका सार्थक हो जाएगी । आस्तीन बनकर आँसू पोंछने का मेरा अपना आष्ठाय है –वह जनमानस के सुख–दु:ख की प्रतिनिधि बने।किसी दोहे ,चौपाई, मुक्तक को तोड़कर क्षणिका बनाने या तुकबन्दी का अनावष्ठयक ष्ठिारस्त्राण पहनाने की आवष्ठयकता नहीं है । सारगर्भित रचनात्मकता के लिए यह क्षेत्र खुला है, इसे रातों–रात प्रसिद्धि पाने का ष्टॉर्टकट मानना भूल होगी । अच्छी रचना , रचनाकार के लिए खुद पथ का निर्माण और ऊँचाई का निर्धारण करती है।

–0–सम्पर्क:सी–1702,जे एम अरोमा , सेक्टर–75, नोएडा–201301 ,उत्तरप्रदेष्ठा,
मोबा–09313727493

साहित्यकारों की नजर में बालश्रम

साधाना यादव

श्रम से जीवन को अर्थ मिलता है और मानव जीवन की उन्नति का द्वार श्रम के द्वारा ही खुलता है। श्रम का अर्थ है-ाारीरिक व मानसिक रूप से किसी कार्य के लिए तत्पर होना। मनुष्टय के लिए श्रम बहुत ही जरूरी है। लेकिन वही श्रम जब उचित व्यक्ति द्वारा व उचित स्थान पर न हो तो ठीक नही रहता है ऐसा ही श्रम है बालश्रम।

बाल श्रम का अर्थ ऐसे कार्य से है जिसमें कार्य करने वाला व्यक्ति कानून द्वारा निर्धारित आयु सीमा से छोटा होता है। बालश्रमाोष्ठाण करने वाली प्रथा है। इसमें भारत में 17 वर्ष्ठा से कम आयु का बालक स्कूल की पढ़ाई छोड़ कर काम करता है वह अनुचित है। ऐसे बच्चों के काम करने के घण्टों का निर्धारण होना चाहिए। अन्तराष्ठ्रीय संगठन द्धआई.एल.ओ.ऋ के अनुसार दुनिया भर में 21 करोड़ से अधिाक बच्चों से मजदूरी करवायी जाती है भारत में सबसे ज्यादा बाल मजदूर हैं । बाल मजदूरी एक बड़ी समस्या है जिसकी तरु सभी का धयान है। सरकार के भी धयान में हैं लेकिन इसके लिए उचित दिज़ा में काम नहीं हो पा रहा हैं। कहीं न कहीं इसकी वजह ज्यादा आबादी है। भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देज़ है और इसमें सबसे ज्यादा बाल श्रम पाया जाता है बाल श्रम एक ऐसा सामाजिक अभिज़ाप है जोाहरों,गाँवों में एवं चारों ओर मकड़जाल की तरह बचपन को अपने आगोज़ मे लिए हुऐ हैं। हमारे समाज की इससे बड़ी विडम्बना भला और क्या हो सकती है। जब कोई बच्चा खेलने कूदने की उम्र में श्रम करने पर मजबूर हो जाये। बालकों को स्नेह,खेल,स्कूल,आत्मीयता,देखभाल व उचित पालन व संस्कारों की आवज़्कता होती है। परन्तु ऐसा न हो पाये इससे ज्यादा दुखद और क्या होगा।

सीधाी सी बात है जो काम बच्चों केाारीरिक व मानिसिक विकास के लिए नुकसान दायक है वह बाल मजदूरी है। आज दुनिया में हर दस में से एक बच्चा बाल मजदूर है। हमारी सरकार ने, देज़ के बु)जीवियों ने समाज के प्रबु) वर्ग ने अपनी-अपनी तरह से बाल श्रम की स्थिति को समझा है व व्याख्यायित किया है। हमारे समाज का सबसे मजबूत स्तम्भ माने जाने वाले हिन्दी साहित्यकारों की लेखनी ने भी बाल श्रम की समस्या को बखूबी इंगित किया है -

नोबेल पुस्कार विजेता श्री कैलाज़ सत्यार्थी केाब्दों में ''इससे बड़ी त्रसदी और भला क्या होगी देज़ में आज भी 17 करोड़ बाल श्रमिक और 20 करोड़ वयस्क बेरोजगार हैं। ये वयस्क कोई और नहीं बल्कि बाल श्रमिकों के माता पिता ही हैं। वास्तव में यह विरोधााभास बाल श्रम के खत्म होने से ही समाप्त हो पायेगा। ''

विलियम वड्सवर्थ ने कहा था ''जेम बेपसक पे जीम थ्ंजीमत वि जीम डंद '' मतलब बच्चा ही व्यक्ति का पिता है।

 ISSN 0975-735X

– बाल श्रम का प्रारम्भ औद्योगिक क्रान्ति की शुरूआत से ही माना जाता है। कालमार्क्स ने कम्युनिस्ट घोष्ठाणा पत्र में कारखानों में मौजूदा स्वरूप में बाल श्रम के त्याग की बात कही है।

बाल्यकाल में श्रम या मजदूरी करने या करवाने के खिलफ पूरे विज्व मे 12 जून को विज्व बाल श्रम निष्ठोधा दिवस मनाया जाता है।

– एक प्रभावज़ाली समाचार पत्र में '' बाल श्रम के अर्थज़ास्त्र '' पर अमेरिकी आर्थिक समीक्षा द्ध1998ऋ में कौज़िक वसु और हुआंग वान का तर्क है कि बाल श्रम का मूल कारण माता पिता की गरीबी है और इसके लिए उन्होंने बाल श्रम के वैधाानिक प्रतिबन्धिा के लिए आगाह किया है।

आज का इन्सान महत्वाकांक्षी हो रहा है और यह नहीं समझ पा रहा है बालक देज़ का भविष्ठय है और कल के भारत की बागडोर इन्हीं के हाथों में है। आज हम बालकों को जैसा – बनायेंगे जैसा उनका शारीरिक – मानसिक,नैतिक ,सामाजिक विकास होगा,जैसी उनकी सोचने समझने की निपुणता होगी, जैसी कार्यशैली में हम उन्हें ढालेंगे,जैसा वातावरण उन्हें उपलब्धा होगा, जैसी संगति उन्हें मिलेगी, जैसा भोजन उन्हें खाने को मिलेगा, जितने स्नेह,मानवीयता,आदर्ज़,आत्ममीयता से उनका पानल पोष्ठाण होगा। वैसा ही वे आगे चलकर देज़ को बनायेगे। उसकी दिज़ा निर्धारित करेंगे।

लेकिन जब वही भारत का भाविष्ठय मजदूरी करे, अच्छे काम न करे,पढ़ाई लिखाई न करे,उसे खेलने, कूदने,हसने मुस्कराने के अवसर न मिलें तो देज़ का भाविष्ठय स्वत: ही अन्धाकारमय हो जायेगा।

आज हमारे साहित्यकार इस स्थिति का देखकर छटपटाते रहे हैं और बार बार सरकार,समाज,माता पिता,परिवार को अपने साहित्य द्वारा आईना दिखाने का प्रयास करते रहे हैं ऐसी ही 'बाल श्रम' कविता '' दीपावली'' पत्रिका में प्रकाज़ित हुई है '' कर्णिका पाठक'' ने लिखा है –

बाल मजदूर मजबूर है
कंधाों पर किताबों का बोझ
किताबों की जगह रद्दी का बोझ
जिस मैदान पर खेलना था
उसको साफ करना की जीवन बना
जिस जीवन में हंसना था
वो आंसू पीकर मजबूत बना
बचपन कहाँ खो गया
वो मासूम क्या बतायेगा
जीवन सड़क पर गुजर जायेगा
वो यादें क्या सुनाएगा
कभी तरस भरी आंखों से
वो दो वक्त की रोटी खाता है
कभी धिाक्कार के धाक्के से

वो भूखा सो जाता है
अगर देज़ का भविज्य बनाना है
तो इस मजदूरी को हटाना है। - 1

क्या कोई नियम या कानून वास्तव में इनकी वह सहायता कर पायेंगे,जिसकी उनहीं जरूरत है। जब तक हम आगे नहीं आयेंगे तब तक कुछ नहीं हो पायेगा। मन्दिरों की दान पेटियाँ भरने की बजाय सबको बाल मजदूरों की सहायता करनी चाहिए क्योंकि ईज़्वर का सच्चा रूप तो बालक ही होते हैं उनकी निज़्छलता,ईमादारी,भोलापन,अवोधापन की रक्षा कर कीमत पर होनी चाहिए। बच्चे को बच्चा बनाये रखना है सच्चा बनाये रखना है। इसके लिए साहित्य से बेहतर कोई माध यम नहीं है क्योंकि इसकी सीख सरस होती है। '' पढ़ने की उम्र थी'' कविता बाल मजदूरी की मजबूरी पर प्रकाज़ डालती है -

पढ़ने की जब उम्र थी उसकी पढ़ नहीं पाया
माता पिता निज स्वार्थ ने उसको काम लगाया
रह गया अंगूठा छाप आज करता मजदूरी
नहीं पढ़ाया उसको क्यों थी क्या मजबूरी -2

बच्चे ूल की तरह नाजुक,खूबसूरत व कोमल होते हैं वे ईज़्वर की अनुपम कष्टति हैं जिनके देखने मा> से ही मन का कलेज़ चिन्ता सब सुख में बदल जाते हैं मनुष्ठय पलभर के लिए सही लेकिन उन्हें देखकर स्वर्ग में पहुंच जाता है। हम अभागे भारतवासी इस बात को क्यों नही समझना चाहते कि बच्चों को श्रमिक बनाने से मानवता का हनन होता है। इन बाल श्रमिकों के प्रति अपना दर्द,सहानभूति व अपनी भावनाओं को प्रकट किया है कवियत्री कर्णिका पाठक ने इस कविता में कौन बाल श्रमिक होते हैं।

किस गुमनाम अन्धोरे में
ऐ भारत तूं पनप रहा
जहाँ युवा बल हीाक्ति
जहाँ कैसा अन्धोरा कहरा रहा
- जिन नन्हों के जीवन में
कोई अक्षर ज्ञान भी न छाये
जिनके कोमल बचपन पर
बस मजबूरी ही लहराये
ऐसे अभागे बचपन ही
बाल श्रमिक कहलाये। - 3

बल श्रम का एक दबाह पूर्ण व्यवहार है जो अभिभावकों व मालिकों का द्वारा करवाया जाता है। ये गैर-कानूनी कष्टत्य बच्चों को बड़ों की तरह जीने को मजबूर करता है इसके कारण बच्चों के जीवन में कई सारी जरूरी चीजों की कमी हो जाती है जैसे उचिताारीरिक वष्टृ),दिमाग का विकास अनुपयुक्त विकास,सामाजिक व वौ)क रूप से अस्वास्थ्य कर आदि

बच्चा जीवन के उन यादगार लम्हो से दूर हो जाते हैं जो हर एक के जीवन का यादगार व

 ISSN 0975-735X

खुज़नुमा पल होते हैं। 'सायरा कुरैज़ी' की कविता ' बालश्रमिक' का जिक्र यहाँ बहुत जरूरी है जो बताती है कि किस तरह बालश्रम जैसे दुखद कष्टत्य से बच्चों के मीठे सपनो व सुखद कल्पनाओं पर कुठाराघात होता है

वो कष्टष्ठणा
थक जाता होगा सारादिन
सर पे बोझ उठाता होगा,मेरा घर कब आयेगा?
ऐसा ख्वाव सजाता है
चन्दू
चाय की दुकान से घर जाता होगा
यकीनन खुद को सबसे बड़ा पाता होगा
जब दो जून की रोटी कमा के लाता होगा।
बेला
का बचपन जलजाता होगा
जब कोई खिलौना छीन लिया जाता होगा।
वर्तन क्यों सफ नहीं हैं
कह के कोई मालिक जब चिल्लाता होगा। - 4

बालश्रम का मुख्य कारण गरीबी है जो विकासशील देज़ों में अधिाक है

माता पिता जब खुद बेरोजगार हैं तो और उनके पास रोजगार का कोई निज़्चित साधान नहीं है तो ऐसे में माता पिता कम उम्र में ही बच्चों से काम करवाने लगते हैं तो ऐसे में बालश्रम को बढ़ावा मिलता है और एक उन्नत एवं जागरूक समाज के निर्माण में बच्चों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । बाल साहित्यकारों ने अपने साहित्य द्वारा समय-समय पर बच्चो से सम्बन्धित समस्याओं को उठाया है और लोगों का धयान आकर्ष्ठित किया है।

12 जून का विज़्व बाल श्रम रोको दिवस होता है। इसी उपलक्ष्य में यह 'बाल कविता' कहती है चलो हम भी ऐसे नन्हे मुन्ने प्यारे-प्यारे बचपन को सवारने में अपनी आवाज उठायें और बाल श्रम जैसी भयानक सामाजिक बीमारी को जड़ से मिटाने में अपना सहयोग दें-

बच्चे जग की बड़ी नियामत
ऐसी भी क्या कयामत
इनके नन्हें-नन्हें हाथ
करते रहें काम दिन रात
जूठन मांझे जूठन खायें
खेलकूद मस्ती को भुलाऐं
कभी करें जूते सफ
ये कैसा इन संग इंसफ? - 5

दुनिया में बाल श्रम की 12: हिस्सेदारी भारत की है। भारत सरकार ने एक अच्छा कदम उठाते हुये एक अच्छी कोज़िज़ की है ।

1986 का जो पुराना 'बालश्रम कानून' था उसमें संज़ोधान करके और एक तरु से बाल

श्रम को पूरी तरह से संज़ोधित करने की बात कही है । इसमें 14 साल से कम के बच्चे मजदूरी करेंगे तो उसे अपराधा माना जायेगा। पुराने कानून में 83 उद्योग प्रक्रियाऐं है। जो बच्चे के स्वाास्थ्य व उसके लिए खतरनाक हैं लेकिन नये कानून मे बताया गया की 14 साल के बच्चे ेमिली इन्टरप्राइजेज में काम कर सकते हैं वज़र्ते उनका धयान रखा जाये एक विकसित समाज के हर एक नागरिक को और सभी नागरिकों को एक अच्छी ज़िक्षा प्राप्त करने का अधिाकार होता है। उसको अच्छी स्वास्थ्य सेवाऐं और अपने स्वास्थ्य पर देखभाल करने का अधिाकार होता है। सरकार को इन्ही बातों को धयान में रखना है

सरकारी ऑकड़ो के अनुसार भारत में 2 करोड बाल श्रमिक हैं जो कालीन बुनना,हीरा उद्योग,कोयलों की खानों में पत्थर की खदानों में,काँच उद्योग,पीतल उद्योग में काम करना,सीमेन्ट उद्योग,दवा उद्योग में लगे हैं। कई बार बच्चों को काम करते -करते यौनज्ञोषण तक ज़िकार होना पढ़ता है उन्हे कई खतरनाक बीमारियों जैसे - टी.वी.,कैंसर आदि का भी सामना करना पढ़ता है। इन्ही सब परिस्थियों को वर्तमान कवि अज़ोक ने अपनी कविता 'अज़्कों में खोता बचपन' में वर्णित किया है।

भूखे पेट तरसती आँखे िर भी मुस्कराती जिन्दगी चमकती आँखें
कभी किताबों कभी ूलों को बेचने की जुगत में खोता बचपन
तो कभी लाचारी और अपंगता में खोता बचपन
क्यों रोती विलखती जिन्दगी,क्यों सड़कों पर खोता बचपन
धाुऐं औरज्ञोर के बीच क्यों अज़्कों में खोता बचपन - 6

इसी तरह बाल श्रम पर अपने विचार सबसे साझा करती उनक दर्द को महसूस करती उनकी मजबूरी को बयाँ करती ये दिल छू लेने वाली व वास्तविकता प्रकट करने वाली 'बाल मजदूर' कविता जिसे कवियत्री स्मिता कांबले ने लिखा है -

होटलों पर काम करते
सड़कों पर गाड़ी धाोते
भीख मांगते,बोझ ढ़ोते
कचरा बीनते,कपड़ा बुनते
गन्दे मटमेले चीथड़ों में
कभी घष्टणा से कभी करूणा से
देखा होगा तुमने मुझे अनजाने में
पिता की मद्द कैसे करूं ?
माँ की पीड़ा कैसे दूर करू ?
बहन को कैस विदा करू ?
भाई को कैसे सक्षम करू ?
है यही जीवन का लक्ष्य
बनू परिवार का आधाार
करने अपने सपनों का साकार
बनना ही होगा मुझे बाल मजदूर - 7

बाल मजदूरी या बाल श्रम वह घातक रोग है जिसके पहले अच्छे से समझना होगा, फिर सरकार व समाज का धयान ईधार खींचना होगा। उनके अनमोल जीवन के अनमोल सपनों को तोड़ने का अधिाकार तो स्वयं उनके माता-पिता के पास भी नहीं है। जब तक बालकों के ाारीरिक, मानसिक, नैतिक,सामाजिक व ौक्षिक विकास की जिम्मेदारी माता-पिता व उसका परिवार,हमारी सरकार नहीं उठायेगी तब तक कुछ नहीं हो सकता। कानून या नियम भी ऐसे बनने चाहिए जो ठीक प्रकार से क्रियान्वित हो सकें और उससे उन्हे लाभ हो सके । इसके लिए सर्वप्रथम ज़िक्षा पर जोर होना चाहिए । उचित ौक्षित वातावरण की उपलब्धा कराना पड़ेगा केवल स्कूल में दाखिला दिलाने से भी काम नहीं चलेगा बच्चे को नियमित स्कूल भेजने की जिम्मेदारी अभिभावको को निभानी पड़ेगी। देज़ से बेरोजगारी को खत्म करने के लिए उचित प्रयास भी बालश्रम पर रोक लगा पायेंगे।

बाल मजदूरी को रोकने के लिए सबसे अहम व महत्वपूर्ण उपाय है बालश्रम के खिलाफ जागरूकता ैलाना। प्रत्येक व्यक्ति को इस बात कि लिए दृष्टढ़ निज़्चयी होना पड़ेगा कि बच्चा चाहे स्वयं का हो दूसरे का उसे समान भाव से देखना होगा। बच्चे नाजुक ूल हैं ,ईज़्वर का रूप हैं। सच्चाई और ईमानदारी का सर्वश्रेष्ठठ उदाहरण हैं। मन के उज्ज्वल बच्चों को निर्मल रखना सभी का दायित्व है। उनकी जिन्दगी में अनचीन्हा संघर्ष्ठा जन्म न ले सके इसके लिए उनकी उचित देखभाल बहुत जरूरी है कभी-कभी माता पिता अपनी लापरवाही के कारण भी उनके लिए जटिल मार्ग का चयन अनजाने में कर बैठते हैं। उनके लिए उन्हे स्वयं की ज़िक्षित व जागरूक होना पड़ेगा ।

सन्दर्भ

1.श्रम का महत्व ऐसे हिन्दी डाट कॉम
2.कविता संख्या 1 कार्णिका पाठक : दीपावली हिन्दी वेबसाइट
3.कविता संख्या 1 हिन्द पत्रिका डाट कॉम
4.कविता संख्या 3 कर्णिका पाठक हिन्दी वेबसाइट
5.कविता संख्या 4 सायरा कुरैज़ी : 4 जव 40 किड्स पोर्टल ोर पैरेन्ट्स
6.कविता संख्या 5 अज़ोक कुमार हिन्दी वन इण्डिया डाट कॉम
7.कविता संख्या 6 स्मिता काम्बले : कन्टेन्ट राइटर डाट इन

पत्नी श्री अनुराग सिंह
द्वारा श्री डी॰पी॰ त्रिपाठी
तालग्राम तिराहा के निकट
(जयप्रकाश त्रिपाठी हॉस्पिटल)
छिबरामऊ , कन्नौज 209721 (उ॰प्र॰)
7007165591

 ISSN 0975-735X

Shashi Deshpande's Views on Feminism

Dr.
M.S.Vimal

Asstt.Professor
of English

Govt.P.G.College, Niwari, Distt.
Tikamgarh M.P.

Shashi Deshpande (born- 1938) is basically a Kannada writer. As being a novelist, she has achieved, *'Sahitya Akademi Award'* in 1980 for her novel, *'The Dark Holds No Terror'* and *'Padam Shri Award'* in 2009. As a versatile genius, her contribution as a novelist, short-story writer, children literature-writer and as an essayist is really praiseworthy. In the galaxy of Indian writers in English, she has stamped her name in the chain of renowned writers of world repute. So far her nine novels have been published through which, she has boldly favoured women life. As a feminist, she has played the great role in the revolution of 'feminism'. Although she in beginning did not consider herself as a feminist but in the later part of her literary life, she boldly admitted that she is a feminist. As a writer, she did not start her work as a feminist yet her depiction of women-plight has automatically brought and established her as a feminist. In her novels, she has minutely portrayed women's sorrows revealing the picture of male dominated Indian urban society. Her focus is laid mostly on urban life of India. It is generally believed that in towns and cities, the educated people live and they are superior in thought in comparison to rural areas' people. Deshpande has bluntly broken this notion exposing the fact that even the well-educated people residing

 ISSN 0975-735X

in towns and cities are equally discriminative as the lay-men living in rural areas are. They are not free from mean mentality and traditional negative thinking towards women.

As much as deeper, we go through her novels, we find that the so-called well-civilized society is also inclined with women's exploitation. The well-educated people too are victim of superiority complex. They are even today not ready to consider women equal to them in status. In her novels, the major themes are-negligence, frustration, fear, divorce, rapes and other types of women's torturing. The main motif behind writing this article is to expose Deshpande's views on 'feminism', so it is needful to know first what the 'feminism is. The term 'feminism' has been originated from the Latin word 'femina' which means 'woman' (through French 'feminism). It refers to the emancipation of women; equal in status in comparison to men. Generally we find that women are supposed to be inferior in comparison to men in society. This is the major problem of women-life and this problem is not confined up to any particular country but almost it is spread in the entire world. So in present scenario of literature, 'feminism' has become a vital part of debate. As it is clear that the roots of feminism lie in Latin and French literatures so it is also believed that the concept of 'feminism' is the product of 'French Revolution', the revolution that has widely affected the human-society based on male domination. It is also believed that the building of 'feminism' is standing on the pillars of' Marxism'. Karl Marx is supposed to be the producer of revolutions for human rights. Marxist ideology is the landmark against exploitation whether it is exploitation of man by man or of woman by man or vice- versa. The political scope of 'feminism' has been broadened by the impact of 'Marxist Ideology' that has made feminists challenge sexism along with capitalism for both encouraged the patriarchal social set-up in which women are kept under subordination.

Through her novels, Shashi Deshpande has openly come to confront with the women-challenges. The selection of characters for novels, she has

chosen the urban background of India. The views of Shasideshpande pertaining 'feminism' come out in limelight through her narratives. All the nine novels are replete with the exploration of woman-plight. As a writer, she started her work not thinking that she was working in the stream of 'feminism'. Initiatively, she has written everything on the basis of her own experiences and keen observation of society in which women are kept under the extreme exploitation. Nature has provided everything to women but male dominated society mechanically reduced the rights of women for which they are still fighting. They have been fighting for centuries for the same but so far the desirable success could not be achieved. The tireless efforts have been made and are being made in this concern. In fact, feminism is a serious attempt to analyze, comprehend and clarify how and why feminity or the feminine sensibility is different from masculinity or the masculine experience. It is said, *"Feminism brings in to perspective the points of difference that characterize the 'feminine identity' or 'feminine psyche' or 'felinity' of woman. It can be studied by taking in to account the psychosomatic, social and cultural construction of feminity vis-à-vis masculinity"1*

As being a feminist, she has clearly exposed the gross gender discrimination and its fall-out in a male dominated society in her first novel, *'Roots and Shadows.* Through this novel, she has depicted the agony and suffocation experienced by the protagonist Indu in a male-dominated and tradition-bound society. Indu being an educated and self- respected woman does not agree to follow the imposed commands by her husband. She stands against her husband's brutality to get rid of mental exploitation. For the sake of liberation, she has to face numerous challenges. Not only Indu but all the women characters of all the novels have been shown under the clutches of exploitation. The portrayal of woman-predicament itself is an evidence to prove the fact that the views of Shashi Deshpande regarding the 'feminism' are that women should not tolerate males' exploitation silently. As much as they remain in silent mode so much the men would keep on torturing them. According to her focused views, women should

courageously enhance their will-power and stand against their exploitation in the same way as her most of women characters do in the novels.

If we talk of her second novel, *'The Dark Holds No Terror'*, we can say that its protagonist Saru comes ahead to protest her husband who wanted to keep her under his clutches. Deshpande not only focuses on the brutality of husbands or other people from in-laws' side but also she focuses on the brutality of parental homes where daughters are treated mercilessly. Here, Deshpande has exposed gender-based discrimination prevailed in urban society of India. In *'That Long Silence'*, her third novel, Jaya, the female protagonist has been shown feeling self-guilt since she is unable to make justice with herself. As being an intelligent lady, she wants to establish herself as a writer but her husband does not let her to do so. It is but natural that the person intended to make his or her literary career, needs meeting with other intellectuals too. Jaya is not allowed to meet such persons so she feels herself incapable to make wanted career in literary field.

So is the case with other novels and other women characters. Some are frustrated because of their mental torturing; some are victim of physical exploitation. Some are suppressed in parental homes and some are insulted and humiliated in in-laws homes. Ultimately, women are still living under the rudeness of men and facing different type of exploitations. It is mentioned, *"It is not difficult to agree with the view that in Shashi Deshpande's novels, we observe a change corresponding to the change in the contemporary society. We notice that the plot in her novels begins with an unconventional marriage and later on deals with the problems of adjustment and conflicts in the minds of the female protagonists and ultimately portrays their endeavour to submit to the traditional roles."2*

Hence, it is to be told again that Shashi Deshpande is one of the great feminists among the contemporary writers of Indian writings in English. She is an activist in the stream of feminism. Her literary revolt for the sake of women's emancipation is eternal. It has brought a drastic change not

only in Indian society but also in all the other societies of other countries. As a writer, her views on feminism are apparently come in our sight that are completely concerned with women's exploitation; social, political, economic and moral. Her message via novels is universal. It is meant for healthy social atmosphere's establishment. She has raised the problems of educated and working women that have generally been ignored by the other novelists. As we know that most of the Indian novelists have used their pens to write about exploitation of uneducated and helpless rural women. Shashi Deshpande has come forward to behold beyond this all and found that the well-educated and working classes' women too are compelled to face troubles under the male dominated society. In the towns and cities too women are not free to breathe in peace and prosperity even though they are well educated and are earning money by doing different type of professions. They are still in want of existence. They either could not make their respected identity or they have to face numerous gender-based challenges in doing so. Most of the men reluctantly come ahead to respect women's feelings and to give proper place to women in society. Due to this reason, women are still wandering and confronting for their entity.

Undoubtedly, Deshpande's novels are the mile-stone in the revolt by women against their exploitation. We can agree with Sarla Palkar who writes:

"*the writer has tried to convey to the society that the need of time, in this traditional phase, is not a total revolt but a gradual change in the society for which everyone has to put some efforts to bridge the gap between the old and the new generation."3*

References:

1-Kanwar Dinesh Singh: Feminism and Post Feminism(New Delhi: Swarup and Sons,) 2004-P-3

2-Shanta Krishnaswami: The Woman in Indian Fiction in English(New Delhi:Ashish)1984,PP6-10.

 ISSN 0975-735X

3-Sarla Palkar:Breaking the Silence:Shashi Deshpande's That Long Silence, Indian Women Novelists, ed. R.K.Dhawan Set. !, Vol.5 (New Delhi:Prestige Books, 1991,PP-169-175.

Feministic Approach of Shashi Deshpande

Haricharan
Ahirwar

Asstt.Professor
of English

Govt. Degree College, Lavkushnagar, Distt.
Chhatarpur M.P.

As being a novelist of modern era, particularly, the novelist of twentieth century, the name of Shashi deshpande is considered as a great feminist. Although she did not regard herself as a feminist but it is sure that she is a feminist of superb class. Her all the novels are replete with the profundity of woman-predicaments. Her characters; major as well as minors are representatives of woman-plight. As a dignified feminist, Shashi Deshpande has created a jerk in the male dominated society. As a woman writer she has keenly understood the sufferings of women under the clutches of men whether they are father, brother, husband or any other relatives. The revelation of the stories of woman-plight is not only informative but also an instrument of improving the social machinery. Through her novels, she has tried to focus upon a fact that woman has always been kept under the subordination of males. In childhood, as a daughter, she has been kept under the care of

 ISSN 0975-735X

her father and in the same state, as soon as she grew up her brothers came forward to shower their commands. After marriage, she comes in the new home, totally the home of a stranger where she makes different type of compromises to adjust herself as a wife, daughter in-law and sister in-law. Madam Deshpande like the other feminists has beheld this miserable condition in urban Indian society and minutely portrayed it in her writings, particularly in her novels.

The women have been traditionally characterized as ideally warm, gentle and submissive who are to be kept in subordination to the male members of the family. Manu declares, "*Day and night, women must be kept in subordination to the males of the family, in childhood to the father, in youth to her husband, in old age to her sons."1*

As far as the feministic approach of Shashi Deshpande is concerned, her all the six novels are depiction of quest of women for their existence. Even in the age of science and technology women are suppressed and treated improperly, many a times, they are kept under exploitation. Through her characters, Shashi Deshpande has boldly focused on social discrimination. In the literary world, male writers have shown women inferior in comparison to men. They have shown men as, 'superior sex' and woman as, 'inferior sex'. But it is wrong to say that all the male writers do like this. Some male writers too have worked for woman-emancipation. In 'feminist-stream', there are so many male writers who are focusing on women-virtues. They

have advocated women's liberation from all kinds of exploitations.

Shashi Deshpande's women characters are the representation of urban Indian women's plight. They show how the themes are related to women's sufferings. She has exposed the gross gender discrimination and its fall-out in a male dominated society. Her first novel, *'Roots and Shadows'*, clearly shows this aspect of women-life. Its female protagonist is Indu, who feels different type of problems in male dominated society. As a wife, she is not ready to accept the old traditions in which, women are kept in suffocation of four walls. She openly comes in front of her husband and confronts with social challenges. Same is the case with her second novel, *'The Dark Holds No Terror'*, in which, Saru, the female protagonist has been shown in suffering right from her childhood. In the parents' home, she was not provided parental treatment and after marriage too, she was not lucky enough to have deserving love and affection. Rather, she was tortured and humiliated in several ways. Saru's parents were in the want of male child so they fully neglected her.

After marriage, she managed herself in a balanced manner and increased her status in society. But her husband Manohar's sense of humiliation did not let Saru feel happy life. Inferiority complex of her husband came to be an obstacle in her life. Deshpande has revealed this social exploitation of women very sharply appealing for women-liberation. The third novel of Shashi Deshpande is *'That Long Silence'*, in which Jaya is the main female

 ISSN 0975-735X

character. Jaya is an intelligent girl. She wants to establish herself as a writer but due to her husband's restrictions, her dream could not come to be true. She did not feel free atmosphere for literary works. She could not make friendship with other intellectuals. In this way, these three novels of Shashi Deshpande's first phase of literary career raised the problems of gender discriminations.

The second phase of her literary career starts with her fourth novel, *'The Binding Vine',* through which the novelist has presented Urmi as female protagonist. Urmi narrates the tale of Mira, her mother in-law who is victim of marital rape. Mira was not happy with her married life. In her solitude, she passed her time by composing poems. Her poems have been published by Urmi after her (Mira) death. Urmi narrates the second tale of Shakuntai, another woman who was deserted by her husband for another woman. The worst part of this tale is that Shakuntai's elder daughter Kalpana is raped by Prabhakar, her sister Salu's husband. '*In a Matter of Time'*, her fifth novel, Deshpande has focused on the story of three women generations of the same family. Through this novel, the novelist has told us how the women in a particular family are kept under the clutches of exploitation. Sumi is deserted by her husband Gopal, and she faces different type of predicaments and humiliations. She has been shown confronting with all type of sorrows and sufferings. Her courage has been focused that seems to be novelist's goal to highlight women's spirit.

Sumi's mother Kalyani was married off to her maternal uncle Shripati. When their four year old son gets lost at a railway station, Shripati sends Kalyani back to her parents' house with two daughters. Kalyani's mother Manorma feels fear lest her husband should take another wife because she could not give birth to any male child who could be successor of the family. Thus, in this novel too, we find the focus on fear, frustration, negligence, exploitation, and moral humiliation of women.

Let us see in brief about Deshpande's latest novel, *'Small Remedies'* in which she has presented another story of woman-exploitation. The protagonist of this novel is Savitribai who is a well determined and talented musician. For the sake of her interest in music, she decides to remain spinster throughout her life but this male dominated society creates numerous hindrances in her path so she has to face various types of troubles.

After going through the entire works of Shashideshpande, we come to conclude that she is a feminist of superb kind. Her focus on women's predicaments proves that her interest in feminism is natural. In an interview with Laxmi Holemstorm, she says:

"It is difficult to apply Kate Miller or Simone de Beauvoir or whoever to reality of our lives in India. And then there are such terrible misconceptions about feminism by people here. They often think it is about burning bras and walking out your husband, children, or about not being married not having children etc. I always try to make the point now about what

 ISSN 0975-735X

*feminism is not, and to say that we have to discover what it is in our own lives, or experiences."*2

Hence, Deshpande's above interview shows that she is a genius feminist. Let us see another interview of her in which she admits frankly that she is a feminist. It is as follows:

"I now have no doubts at all in saying that I am a feminist. In my own life, I mean. But not consciously, as a novelist, I must also say that my feminism has come to me very slowly, very gradually and mainly out of my own thinking and experiences and feelings. I started writing first and only then discovered my feminism. And it was much later that I actually read books about it."3

As a feminist, Deshpande has rendered her great contribution in the development of woman-awareness. In this respect, she is regarded as one of the pioneer-feminists in the post modern era of Indian writings in English. In a research paper entitled, 'The Dilemma of the Woman Writer', she writes, *"It is a curious fact that serious writing by women is invariably regarded as 'feminist writing'. A woman who writes of women's experiences often brings in some aspects of those experiences that have angered her, caused her strong feeling. I do not see why this has to be labeled feminist fiction. "4*

The above statement of Shashideshpande has proved that even the term 'feminism' is in itself is humiliating for women. Why the writings by women are supposed to be women-

literature?, Why women have been separately placed in the literary stream?, and Why literature by men is not taken as Man's literature? Several other questions also rise in this respect. Literary discrimination is also prevalent here; it has also been focused by Deshpande in her novels and other writings. She has clearly observed women life; plight, pain, predicaments, negligence, fear and frustration and over all, she has keenly observed the mood of Indian people that is mostly discriminative, negative and humiliating towards women.

References:

1-WWW.Google.Com

2-Shashi Deshpande, Interviw:Shashi Deshpande Talks to Laxmi Holemstorm' Wasafiri, No.17 Spring 1993, P-26.

3-ibid P-26.

4-Feminism and Recent Fiction in English ed. Sushila Singh (New Delhi:Prestige Books, 1991, P-50.

 ISSN 0975-735X

Moral Strategy to Check Declining Child Sex Ratio
(With Special Reference to Uttarakhand)

Dr. Kavita Bhatt
R.A., FDC
PMMMNMTT
Administrative Block-II
HNB Garhwal University
Srinagar (Garhwal)
Uttarakhand-**246174**

mrs.kavitabhatt@gmail.com

Abstract of the Research Paper

With advancement of science, we have a strong feeling of civilization in our mind, but we can't claim to be civilized with the practice of discrimination against half of the population called women. Particularly, in this situation, when the modern science is being used as tool fordiscriminatory, cruel, violentactivities to destroy female feticide. It resulted in declining child sex ratio in many countries of the world. India with pre-dominantly patriarchal society is also in alarming crisis. The situation is distressing in various states as well as Uttarakhand too. Generally, higher literacy rate, socio-political awareness and woman empowerment are considered the optimistic assumptionsto determine solutions for this problem. It is Strange,but bitterly true thatthese presuppositions have failed in case of Uttarakhand. In spite of; appreciating records about these three measures, the child sex ratio is declining day by day. There are several hidden reasons as moral degradation and lose implementation of rules respectively on socio-individual and political levels. Thus, moral awareness, policy reformation and strong punishment majors are supposed to bea moral strategy for the solution of above problem. The problem is rooted in the socio-individual mindset for so called second sex; having peculiar capacity of creation and reproduction. So, we focus efforts to present a clear picture of burning problem in this paper dividing three parts. In first part: **we shall try to draw the clear picture of current problem with special reference to Uttarakhanddefining sex (natural) and gender (imposed) with the differentiation of these both.** In second part:**we shall try to inquire the reasons**

rooted in gender discrimination; resulted as present problem. In concluding third part: **we shall focus on moral strategy to prepare a solution as socio-individual moral awareness and policy reformation at political level**. Now we shall move to the first part of paper.

Part I

First of all,we shall explain the meaning of sex ratio and child sex ratio. Sex ratio is the number of women against 1000 men, while child sex ratio is the number of girls against 1000 boys in the age group of 0-6. As per fresh data; this ratio has shown an alarming decline in 27 states as well as Uttarakhand too.

It is necessary to understand the present problem of declining child sex ratio rooted in gender bias. The balanced ratio of females and males is necessary for equilibrium worldwide; but the socio-cultural conditions of India and several other countries are not favorable for it. The child sex ratio in India has dropped to 914 females against 1,000 males, one of the lowest since Independence according to Census 2011. As per the provisional data of Census 2011, while the overall sex ratio had gone up by seven points to touch 940, against 933 in census 2001, the child sex ratio plummeted to 914 from 927. Before highlighting the situation; let us make a short observation of the conditions responsible for the current situation.

The tradition, cultures and religious trends of Indian society knitted with predominantly patriarchal fibers. It is the basic reason to prepare an extensive secondary status for women. The society is suffering from a lot of social diseases in case of women like dowry, dowry harassment, various kinds of violence including domestic, rape, sexual abuse, sex racketing, prostitution and trafficking etc. Such kinds of immoral acts create an unhealthy society. Basically, these are the reasons responsible for making subordinate place to women in the process of birth, grooming, marriage and property etc. and to such an extent that even the birth of a girl child in a family is not a hoppy moment. A destructive trend of violence against women was running and still following in some places of India. These trends are responsible for the death of girl-children during 0-6 beginning years of their lives. An examination of the causes to eliminate the girl child indicates that the reasons are similar and different depending upon the geographical location.

We may see the table for recent details[1]based on the answer given by the Minister of Women & Child Development in the Lok Sabha in response to question number 1132 dated 28 November,2014:

Child Sex Ratio from 1991Census to 2011 Census

S.No.	State Name	Census 1991	Census 2001	Census 2011	No. of Gender Critical Districts

 ISSN 0975-735X

1	Haryana	879	819	834
12				
2	Rajasthan	916	909	888
10				
3	Uttar Pradesh	927	916	902
10				
4	Maharashtra	946	913	894
10				
5	Punjab	875	798	846
11				
6	Jammu & Kashmir	Not Available	941	862
5				
7	Delhi	915	868	871
5				
8	Gujarat	928	883	890
5				
9	Madhya Pradesh	941	932	918
4				
10	Uttarakhand	949	908	890
2				

Child sex ratio as above table[2] is enough to be shocked anybody. The situation of Uttarakhand is also very upsetting and it is near to Rajasthan in this context. Although, the numbers of critical districts are 2 in counting; but we may see that the overall ratio decreasing census by census in comparison of 1991and 2001. Now we should make an observation of literacy rate of above 10 states according census 2011 for the actual situation; as we have already said that higher literacy rate makes a balance between child sex ratio; but it is contradictory in case of Uttarakhand. The details of literacy rate[3] in above 10 states is being presented in the table as below-

Literacy Rate accordingCensus 2011

S. No.	State Name	Overall Literacy Rate in %	Male Literacy Ratein %	Female Literacy Ratein %
1	Haryana	76.6	85.4	66.8
2	Rajasthan	67.1	80.5	52.7
3	Uttar Pradesh	69.7	79.2	59.3

4	Maharashtra	82.9	89.9	75.5
5	Punjab	76.7	81.5	71.3
6	Jammu & Kashmir	68.7	78.3	58.0
7	Delhi	86.3	91	80.9
8	Gujarat	79.3	87.2	70.7
9	Madhya Pradesh	70.6	80.5	60
10	Uttarakhand	79.6	80.3	70.7
	India	74.04	82.14	65.46

Haryana, Rajasthan and Uttar Pradesh have declining in child sex ratio; and the literacy rates are also very low in these states; according to the above table. Uttarakhand has better literacy rate than above three states; but it has a distressing situation to decline child sex ratio year by year. So, this is the time to be aware on the governmental and individual levels. The prime minister recently launched the "BetiBachao- BetiPadhao" (protect girl child- educate girl child); it means there is need to reform the policy on government level; but it can't reach to the desired goals; unless and until the individual moral awareness will not support it. Everyonemust to be aware of the concerned real meaning of sex and gender with differentiation of these both. Thus, now we shall try to focus on it.

Really, these facts are very shocking, the problem is not limited to mere number of particular sex but, it is more than that. It may be resulted as the disturbance for equilibrium of nature and day by day degraded moral level of human being. Obviously, nature didn't prepare gender; it prepared only two different sexes giving responsibility of creation and reproduction. Gender is an imposition of society. While it is a social problem requiring changing the mindset of people, yet all possible efforts need to be made at every level. Thus**,** it is required to understand the root of problem started from the definition of "Sex" and "Gender" with the particular differences between the both. Generally, women are viewed as merely sex symbols and their creative power limited to bringing up babies. The biological differences dominate over other qualitative differences and achievements. Thus, biological characteristics determine gender and women's status in society. This has been called as "Biological Determinism"

Gender and Sex: Meaning and Interpretations with distinctions

While nature has created two sexes "Women and Men"; the essential differences between them is merely in the sphere of biological functions of reproduction. In rest of the matters, the differences by way of values, modes of behavior, life patterns and the supposed vulnerability of women, their need for protection and their inferiority by way of physical strength and potentialities are made out by the needs of the family, society and state. These are denoted by gender, gender roles and gender differences, and brought about by socialization, historical traditions, customary norms and state. Gender thus is an artifact, a social act and a political tool rather than a natural institution like "Sex" .This "Gender" can be altered, socially engineered and politically reconstructed while "Sex"cannot be (at least as of now)."Gender" also implies that the relationship between women and men can be changed from a patriarchal to a just and equal relationship, and it will be make impact on lives, patterns of behaviors and stereotyped roles of men and women too.[4]

THE DIFFERENCES BETWEEN SEX AND GENDER

Things determine Sex "Female-Male"	**Things determine Gender "Feminine-Masculine"**
1.	Biological Constructsv
Chromosomesv	Internal and external
genitaliav	Hormonal states v
Other sex characteristics2.	Given 3.
Natural 4.	Immutable
1.	Society constructs v
Environmental shaping on sex v	Socially and
psychologically determined v	Scripted and learnt by
society2.	Changeable v
Culture- specific v	Cultures vary in
gender roles	

After the understanding the meaning and differences between sex and gender; let us move to frame of the reasons behind child sex declining ratio rooted in gender discriminations in the upcoming second part of the paper.

Part II

Reasons for child sex declining ratio rooted in gender discriminations

The truths and facts according to the data of Health and Family Welfare Ministry of India, "Things have come to such a pass that in some villages of MP, no marriages have taken place for years because there are no girls and the boys are married by buying girls from far away villages of Bihar for paltry sums. In one

district of West Rajasthan, 1997, the first, "Baraat" was received after 110 years and in another clan, there are only two female surviving children compared to 400 male children. In some **cases**,parents are prepared to accept the daughter if she happens to be the first child but thereafter they want only sons. Strong male preference and the consequent elimination of the female child continued to increase rather than decline with the spread of education. With the progress of science and technology it has been more scientific and easy. The moral guilt attached to elimination of the girl child after she is born is not felt equally if the child is eliminated while still in the womb. The increase in female foeticide has seen the proportionate decrease in female sex ratio which has hit an all-time low especially in the 0-6 age group and if this decline is not checked the very delicate equilibrium of nature can be permanently destroyed." [4]

The question is that; such situation; why took place; answer is very simple: due to discriminatory activities against women; widely treated as gender not as an equal sex. It invites a curiosity to know the meaning of gender discrimination. **Firstly,**we should understand the word "discrimination" after that we shall focus its use in the reference of gender.

It has two meaning with various perspectives; the first meaning of word "discrimination" is "a simple process of differentiation or recognition of the differences between any person or the thing to another person or the thing. Apart from its usual and primary meaning, the word "discrimination" also means, making an unjust distinction of the people on grounds of caste, color, creed, race, and sex and treating them differently." [5]We have already elaborated the meaning of word "gender", now we can understand the combined meaning of word "gender-discrimination". According Dr.Indoo Pandey Khanduri,"Putting together the two words together "Gender Discrimination" in its originality is a phenomenon, by which the role of individuals is determined within a particular society. "Gender-Discrimination" allows the distribution of the social responsibilities among the members of the society in such an effective manner that one can fulfill his/her responsibilities by using his/her physical and mental capabilities as optimum. The conflict of gender discrimination arises when only physical part of one's strengths, is considered and the mental part is neglected. As a result of such half-considered phenomenon, individuals are categorized as 'strong' and 'weak', 'emotionally strong' and 'emotionally sensitive', 'competent' and 'incompetent', 'leaders' and 'followers' etc. In this case the gender discrimination doesn't remain in its totality or originality and is considered as a factor deteriorating the process of development of human skills."[6]

We have already written that dowry, dowry harassment, various kinds of violence including domestic, rape, sexual abuse, sex racketing, prostitution and trafficking etc. are the social reflections of "gender-discrimination". These are the

discrimination during the life of woman after birth but the other unbearable discrimination which resulted as declined child sex ratio is the cruel killing before birth. Sex selection: female foetues identification and abort it with cruelty.[7] Another hidden reasons are also responsible for it, let us draw these.

- v Negligence for girl child resulting in their higher mortality below 6 years.
- v High maternal mortality.
- v Sex- selective abortions.
- v Female infanticide.
- v Change in sex ratio at birth.

Mainly, we can divide the reasons of declining child sex ratio in two categories "traditional and technical". Firstly, traditional reasons should be focused;

1- Traditional reasons- Patriarchal Society,son-orientedcomplex,social prestige, religious-cultural prejudices, family planning, poverty, and complications with daughters: "dowry, violence, rape, sexual abusing and harassment, psycho-physical exploitation, cultural prejudices about property and others" etc. arethe main traditional reasons for the preference to a male child. It resulted as the selection and caring for a male child by hook and crook. The scientific inventions have taken place for the cruel selection in place of well-being of humanity; while these have been invented for ultimate health. Consequently, the mass opt the illegal uses of scientific tools to choose male childand ruin a female child before her birth.

2- Scientific and Technical tools as Reasons- Pre -Natal Sex Determination Test is the main reason of low sex ratio resulted by abortion of female fetuses**,** following in India as well as Uttarakhand too. Such tests provide a choice for a male or female child. Couples prefer Male child to get rid of female child having individual and social problems. According a recent study 'Uttarakhand has never had any history of female infanticide. The contribution of firs to housework and farming was valued and they even fetched a bride price; but of late, Uttarakhand is undergoing a shift and new values seeping in from outside are slowly replacing the age-old traditional ones. Today, there seems to be drastic change in the thinking patterns of the hill community. This evident from the fact that majority of the hill women accept pre-natal-sex-determination tests and female foeticide, as the most effective way of limiting their family.[8]

Many studies have shown that these kinds of tests are the main reason of low child sex ratio in India followed by abortion of female foetus. Sex determination tests are seen as providing a "reproductive choice" a choice to decide to have a boy or a girl. Soon after the sex determining techniques, in 1983 Indian parliament banned the practice of sex determination in all public institutions; but the prime legislation Pre-Natal-Diagnostic Techniques Act, passed on 20th **September 1994**, after a long campaign by the civil society and women organizations. Act provides the regulation of:

v The use of PNDT for the purpose of detecting genetic or metabolic disorders or chromosomal abnormalities or certain congenital mal-formations or sex related disorders.

v For the prevention of the misuse of such techniques for the purpose of PNDT leading to female foeticide.

v For matters connected there with or incidental thereto.

This Act came into force in 1996. By itself it is a comprehensive piece of legislation which defines the terms used therein, lays down when the use of pre-natal diagnostic techniques is prohibited and where it is regulated It has provisions for bodies which are responsible for policy making under the Act and those which are responsible for the implementation of the Act. The penalties for various offences and how and by whom cognizance of complaints is to be taken, are also elaborated. PNDT Act is a comprehensive piece of legislation[9];which prohibits of sex selection before or after conception and misuse of PNDT techniques for determination of sex of foetus, leading to female foeticide, as also advertisements in relation to such techniques for detection or determination of sex. The Act also specifies the punishment for violation of its provisions. Accordingly, the Act impose the following : 1- No person including a relative or husband of a woman shall seek or encourage the conduct of any sex-selection technique or her or him or both, 2- No person shall conduct or cause to be conducted any PN Diagnostic Technique including ultrasonography for purpose of sex determination[10]In fact a good doctor should counsel the patient that sex-determination is illegal andshould also positively propagate about the girl child. A doctor is highly regarded in thesociety and any counseling by him/her will have great impact in the implementation ofthe Act.

We have seen that the sex determination is totally restricted in the Act; while except some conditions, which are very clear in the Act; but, yet the proper implementation and strong punishment measures are required to stop such determination as a conspiracy against women. Here the prescriptions and regulations are also the part of PNDT Act, which is necessary to understand here, so let us move to understand these.

PRESCRIPTIONS AND REGULATIONS

The PNDT law is a prohibitory and regulatory statute; it seeks to put in place amechanism which prohibits sex selection while preventing the misuse and over-use of thepre-natal diagnostic techniques. At the same time, the Act permits and regulates the useof such techniques for the purpose of detection of specific genetic abnormalities ordisorders and for the larger benefit of mankind. The Act further permits the use of suchtechniques only under certain conditions by the registered bodies. The PNDT Actprohibits the conduct of PND Techniques for determination of the sex ofthe foetus,but allows the conduct of PND Techniques for purposes

thathave also been specified under the Act. as chromosomal abnormalities, genetic metabolic diseases, haemoglobinopathies, sex-linked genetic diseases, congenital anomalies, other abnormalities or diseases as specified by the Central Supervisory Board.

Now, it is very clear that we can't blame on PNDT with an abrupt manner, because the Act in this reference is regulatory; but it may be said the punishment majors should be more harsh and strong. Noticeable, that it is the mass, which use the scientific and technical methods for their foolish desires and immoral activities. Definitely, a person as a unit of mass or society is responsible for every negativity in this context.

After an elaboration of the situation of child sex declining ratio with its reasons; now we are in position to make an elaboration of moral strategy in this reference. It will be the theme of third i.e. concluding part of our paper.

Part III

Moral Strategy as the Solution:

While dealing with the moral strategy in this reference, the first need is to identify the root of problem. As, we have already said in the second part of the paper that "gender discrimination" is the root cause of this problem; and for the solution we should draw a stepwise moral strategy. Morality is the self-implementation of moral conduct; and of course; no governmental rule and regulation may be success without it. We can't say that government is doing nothing; but we can say that more is needed. In fact, the government has twofold responsibilities: first, to provide the facilities; second, preparation and implementation of strict rules and regulations with strong punishment measures for the accused. Government has been working on both levels; but the question is that which kind of moral responsibilities a person has on her/his individual level. It is obvious that a person is unit of a society, and she/he is quite responsible for the trend, so the moral responsibility of a person should be fixed.

Moral Awareness on Individual Level

Moral awareness on individual level depends upon some philosophical concepts like equality, right to be born and care, humanity and sensitivity etc. These could be the supporting concepts as humanitarian requirements of balanced sex-ratio which presupposed and pre-assumed the balanced child sex ratio.

1. Equality-Firstly, it is required to change the mindset, and every person need to initiate form her/him. The major barrier in the way towards the balanced gender structure is gender inequality based on the socio-cultural issues. The systematic discrimination of the females needs to be tackled from our society at

the multifarious level. The declining of child sex ratio is rooted in gender discrimination, and the reasons of discrimination are many fold as personal, social, religious and cultural. Family planning, nomination of property, old age security, earning means for money etc. are the personal reasons. Prestige, dowry, crime-violence against women etc. are the social reasons. Attaining of moksha on the cremation and pinda-danby son etc. are the religious reasons. The validating reasons are manyfold to choose a male child; social prestige and succession through males: sons carry forward not only lineage but property rights too, the condition precedent for attainment of moksha and cremation by son according to Hinduism, third the son's marriage as the golden chance to get the dowry. Any way reasons are rooted in the mind of an individual. And, basically, it is a great need to set a deep feeling of equality on individual level. Thus, it should be started from every individual as the unit of society. Woman should also be socialized from early childhood to consider themselves as equal to men. This would be positive influence on the coming generations as today's girl child would be tomorrow's mother as well as mother in law. The next point of individual awareness is right to be born and care.

2. Right to be born and care-It is wrong and poor interpretation of the problem that medical technology and week policies of government are the basic reasons for sex declining. The strict laws only can control the female infanticide and foeticide, it will not eliminate the problem completely. Philosophically, the right to be born and care are the humanitarian grounds to aware the person.

3. Humanity and sensitivity-The concern regarding declining female population in India is to rise above the social domain issue to become a political, economic and reformist issue and the entire society must be sensitized. We are living through a 'civilization crises'. Sensitization on humanitarian ground should be promoted. There are two equal sexes called female and male. They have physical distinctions,but having same levels of rationality. And, physically, females should be respected equal even more for their productive peculiarities, because they have more responsibility for human existence. The pain and suffering during the pregnancy and delivery are panic but women take all these without any respect and sensitization.

Except, individual awareness, the need of present issue is socio-cultural awareness. Thus, we shall try to elaborate all these.

Moral Awareness on Socio-cultural Level

1- Children should be taught to uphold moral and refrain from practices of dowry, female foeticide, and gender bias. Thevulnerable minds of the children should be so influenced that they grow up as adults who consider practicing dowry and female foeticide as immoral.

2- On the one hand, a woman is generally considered financially unproductive as her contribution is largely in the form of unremunerated family labour and, on the

 ISSN 0975-735X

other, she alienates her parents' property on marriage. Even in the present scenario, working women are financially productive, social perception does not change because apart from a few initial years, for the whole of her life she earns not for her parental but marital home. Consequently, it becomes extremely difficult to break through this nexus of sheer economic, traditional, and cultural practices tangle with the status of females in our society.

3- Everybody should be aware as unit of society that, tt is punishable to encourage dowry by giving or receiving, and it is punishable according the Dowry Prohibition Act, 1961, but, yet, it is a matter of prestige in the society. So, there is a need to be awake from such kind of dangerous prejudicial slumber.

4- Now, the women have been declared as a coparcener of parental property according Hindu Succession Amendment Act, 2005; but the daughters have been proved selfish and greedy by society on demanding, it is the harsh reality of current society.

Suggestions for Policy Reformation

1. Moral Education should be imparted as must in the schooling as well as higher education for every discipline; while sciences, arts, commerce and every professional course. It will enhance the rational level of person. Consequently, it will be resulted as refined thought process and morality. It is possible to uproot immoral activitieslike dowry, domestic violence, sexual abusing, sexual harassment, crime against women, rapes etc. After creating a safe and secure environment for women, it is possible to uproot gender discrimination; which resulted in balanced child sex ratio.

2. Strict implementation of laws banning female foeticide and dowry providing old age pension for parents who had no son, free and compulsory education for girls, job reservation for women in specific occupations and giving them an equal share in property, in the true sense of the word.

3. Strict punishment should be fixed for the defaulters in case of sex determination, dowry, domestic violence, sexual harassment, rape, sexual abusing, sex racketing, prostitution and trafficking etc.

4. The announcement of National Girl Day in 2009 on every 24 January; BetiBachao-BetiPadhao, Stop Killing Girls, incentive schemes like Dhanlakshmi, Ladli, Betihai Anmol, Kanyadan and so on conducted by state and central governmental level. The personal awareness in this regard is necessary to encourage the female child.

5. Every political party wants to create and cash a vote bank through women, but no one advocate women reservation in parliament; it is a bitter reality.

6. Actually, we discuss ever; but, a single step put forward as an initiative, never. And it is the real problem, we have to decide a well-beginning from ourselves, being an unit of society.

7. The rationale or framed within an inverted demand supply paradigm is that stopping supply of the technology will reduce the demand for determining the sex of the foetus and aborting if it is female.

8. Media also has a moral responsibility to publicize the concerned matters for the awareness of people.

9. While national attention on this issue is welcome, this is complex terrain. On the one hand, it is the right of females to be born, and of society to protect and preserve a gender balance. On the other hand lies a woman's right under the Medical Termination of Pregnancy Act (1971 revised in 1975) to have a safe and legal abortion as part of a whole gamut of reproductive rights. It is our duty to create an environment against one type of abortion (of a foetus only because it is female), we end up stigmatizing all abortions. Access to safe and legal abortion for Indian women is already severely limited, andis environment will not improve the things. Indeed, the word 'foeticide' i.e. 'killing of the foetus (used often without the qualifying 'female foeticide') dents abortion rights.

10. In order to marshal support of various groups and channelizing the efforts in a focused manner, government must take a lead in establishing a mission for balancing the sex ratio by the next census operation through a coordinated mix of reinforcement programmes and support mechanism.

Conclusion- Gender discrimination is the root cause of child sex declining ratio in India as well as Uttarakhand. Moral awareness on individual, socio-cultural and political levels should be needed. Moral strategy including equality, right to be born and care, humanity and sensitivity etc. is the core need to uproot the problem of child sex declining ratio in India as well as Uttarakhand.

References-

1- (https://factly.in/the-beti-isssue-declining-child-sex-ratio/)

2- source:http://www.indiaonlinepages.com/population/literacy-rate-in-india.html

3- Kaushik, Prof. Susheela, Capacity Building of Women Managers in Higher Education : Women's Studies Perspectives, Manual I, University Grants Commission, New Delhi, 2008, pg. 22

4- Handbook on Pre-Conception & Pre-Natal Diagnostic Techniques Act., 1994, and Rules with Amendments, Published by Ministry of Health & Family Welfare, Government of India, 2006

5- Khanduri, Dr. Indoo Pandey, chapter "Gender Discrimination- Moral Implication and Responses" in book "Indian Women : Problems and Concerns" edited by Poonam choudhary&Damodar Singh, Janaki Prakashan, Bihar, India, 2013, pg. 55

6- Khanduri, Dr. Indoo Pandey, chapter "Gender Discrimination- Moral Implication and Responses" in book "Indian Women : Problems and Concerns" edited by Poonam choudhary&Damodar Singh, Janaki Prakashan, Bihar, India, 2013, pg. 55

7- Archana Shah & Mani Kant Shah, chapter Female Foeticide and Status of Girl Child, in book 'Woman Empowerment in Garhwal Himalayas' edited by Annapurna Nautiyal and Himanshu Baurai, Kalpaz Publications, Delhi, pg. 105

8- Archana Shah & Mani Kant Shah, chapter Female Foeticide and Status of Girl Child, in book 'Woman Empowerment in Garhwal Himalayas' edited by Annapurna Nautiyal and Himanshu Baurai, Kalpaz Publications, Delhi, pg. 105

9- Handbook on Pre-Conception & Pre-Natal Diagnostic Techniques Act., Section 4. 5 of the Act. 1994, and Rules with Amendments, Published by Ministry of Health & Family Welfare, Government of India, 2006

10- Ibid, Rule 3 (1) under the PNDT Rules

पत्राचार का पता:डॉ. कविता भट्ट द्वारा श्री सुभाषचन्द्र भट्ट

सैण्ट्रल लाइब्रेरी, बिरला कैम्पसएचएनबहुगुणा , गढ़वाल यूनिवर्सिटी श्रीनगर, गढ़वाल , उत्तराखण्ड–246174

 ISSN 0975-735X

डॉ॰ राजेन्द्र मिश्र की रचनावली का प्रकाशन

संपादक : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

प्रकाशक : हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰)

सभी ग्यारह खंडों का मूल्य 11,000 रुपए, पृष्ठ संख्या 6000

सुविख्यात साहित्यकार और हिंदी साहित्य में आजकालीन साहित्य की अवधारणा को स्थापित करने वाले डॉ॰ राजेन्द्र मिश्र की रचनावली ग्यारह खंडों में प्रकाशित हो चुकी है। राजेन्द्र मिश्र मूलत: कवि हैं और उनकी रचनावली के 1 से 4 खंड में उनकी कविताओं का प्रकाशन किया गया है। खंड 5 में निबंध, खंड 6-7-8 में उपन्यास, खंड 9 में उपन्यास और नाटक, खंड 10 में कहानियाँ और एक कविता संकलन, खंड 11 में निबंध और डायरी प्रकाशित हैं।

राजेन्द्र मिश्र ने कविता में समय की अवधारणा को केंद्र में रखा है। खंड 1 में उनके कविता-संकलन, 'अपने समय में', 'अपने समय में नहीं', 'अपने समय का वर्तमान' एक अँगरेजी कविता-संकलन 'टाइम फ्लोज़', 'अपने समय के सामने', 'युद्ध अपने ही शिविर में', 'अधूरी यात्राएँ' और 'तुम अपने' संकलित हैं। 'तुम अपने में' सारी कविताएँ प्रेमकेंद्रित हैं। 'अपने समय में नहीं' में सारी कविताएँ आपातकाल के विरोध में हैं।

रचनावली का दूसरा खंड एक नए मोड़ पर लाता है। 'समय की जंग' में कवि ने आतंकवाद के विरोध में कविताओं की रचना की है। 'समय पिघल रहा है' में आत्मसंवेदना के व्यापक परिवेश को स्वर मिला है। 'अपने भूगोल में' वह समय को भूगोल तक ले गया है। अनेक साइबर कविताएँ इसमें रची गई हैं। 'तुम्हारे लिए' में प्रेम-कविताएँ हैं। 'तुम अपने' में जहाँ प्रेम का स्त्रीपुरुष फलक पर सृजन है, वहीं 'तुम्हारे लिए' में यह संबोधन बन गया है। 'युयुत्सु' लंबी कविता है, जिसमें महाभारत के पात्र का मिथक समसामयिक भारतीय परिदृश्य को अंकित करता है। इस खंड के अंत में 'आज कविताएँ' हैं, जो उसकी आज कविता की अवधारणा का सृजन करती हैं।

रचनावली के तीसरे खंड 'समय के भूगोल में' अपने अतीत के परिदृश्य को वह वर्तमान से जोड़ता है। 'असाबिया' में अरब क्रांति की कविताएँ हैं। राजेन्द्र मिश्र हिंदी के अकेले कवि हैं, जिन्होंने इस संकलन को रचकर अपने आपको वैश्विक परिदृश्य से जोड़ा है। हिंदी में अरब क्रांति पर यह अकेला संकलन है। 'आठवाँ राग' भी उनकी लंबी कविता है और उसमें मनुष्य-संवेदना के साथ भविष्य की कविता का संसार रचा गया है। इस खंड के अंत में 'सदियाँ गुजर रही हैं' में कवि जीवन-यात्रा के अंतिम पड़ाव को जीवन के परिदृश्य के साथ जोड़कर अत्यंत मार्मिक अभिव्यक्ति देता है।

रचनावली के चौथे खंड में उनके गीत हैं। कवि 'शब्दराग' से आरंभ करता है, फिर वह 'गीतराग' पर आता है। उसके बाद 'मीतराग' है। इस तरह यह गीतसृजन की विकास-यात्रा है और यही आजगीत की भूमिका है। इसके बाद 'यादों का सफर' है। फिर 'खत्म हुआ सफर' है। जिंदगी, गीत से जुड़ जाती है। अंत में 'हवाएँ खामोश हैं', जहाँ कविता और गीत में कोई अंतर नहीं रहता।

रचनावली के पाँचवें खंड में 'आज कविता' है। इसमें आज कविता की अवधारणा दी गई है। नई

कविता के बाद विस्तार से कविता के नए संदर्भ को पहली बार इसमें अंकित किया गया है। यही 21वीं सदी का सृजन है। इसके बाद 'साहित्य का भविष्य' में उत्तर-आधुनिक मनुष्य के विविध संदर्भ हैं। 'संपर्क भाषा और लिपि' में हिंदी और नागरी को केंद्र में रखा गया है। 'कविता का गद्य' में नए विश्व के ललित निबंध हैं। रचनाकार भारत की सबसे प्राचीन हिंदी मासिक पत्रिका 'वीणा' का संपादक भी रहा है। 'मेरे संपादकीय' में उनके सभी संपादकीय संकलित हैं, जिनमें समसामयिक संदर्भ के विषय लिए गए हैं।

रचनावली के खंड छह में उनके दो उपन्यास 'ठहरा हुआ पल' और 'अपनी परिधि में' संकलित हैं। 'ठहरा हुआ पल' अगर आत्मकथात्मक है तो 'अपनी परिधि में' स्त्री-पुरुष का संघर्ष इस सच का सामना करता है कि उनकी अपनी-अपनी परिधि होती है। वे विश्व-परिदृश्य के संदर्भ में अपने कथानकों की रचना करते हैं, जिसमें अंतर्विरोध के साथ ही अंतर्दृष्टि की चुनौतियाँ होती हैं। इस अर्थ में उनके उपन्यास अत्यंत रोचक और उत्तेजक भी होते हैं। खंड सात में भी उनके दो उपन्यास हैं, 'पिंजरे के पंछी' और 'ल्हासा का चाँद'। 'पिंजरे के पंछी' में उनके केंद्र में आज का मनुष्य है, जो विश्व के पिंजरे में बंद है। वह स्वतंत्र होकर भी स्वतंत्र नहीं है। 'ल्हासा का चाँद' तिब्बत पर लिखा उनका उपन्यास है। यह हिंदी में पहला ही उपन्यास है, जो रचनाकार को विश्व-परिदृश्य में रख देता है। तिब्बत का दमन और स्वतंत्राता के लिए संघर्ष इसके केंद्र में है। खंड आठ में भी उनके दो उपन्यास हैं, 'इतिहास की आवाज' और 'पाँचवाँ स्तंभ'। इतिहास की आवाज में आतंकवाद के साथ ही मुस्लिम महिलाओं की समस्याओं को उभारा गया है, जो तीन तलाक और बहुविवाह की वजह से सारी जिंदगी आतंक में जीती हैं। आज जिस तरह वे जागरूक होकर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही हैं, वह इस उपन्यास में भी है। साथ ही कश्मीर-समस्या और धारा 370 के संदर्भ को भी उपन्यास में रखा गया है। 'पाँचवाँ स्तंभ' उपन्यास में जनता ही 'पाँचवाँ स्तंभ' है। इसमें 5 वर्ष में एकसाथ संसद और विधानसभा के चुनाव की बात की गई है। पुलिस को राजनीति से अलग करना आवश्यक है। इन उपायों से ही भ्रष्टाचार, कालाधन और अपराधों पर अंकुश लग सकता है।

रचनावली के खंड नौ में एक उपन्यास 'जिंदगी की सरहद' में पुरुष के समान ही स्त्री की स्वतंत्र सत्ता को स्वीकार किया गया है। इसमें तीन नाटक भी हैं। 'अधूरा नाटक' में आतंकवाद की पीड़ा अंकित है, जो जीवन को अधूरा करती है। 'औरत की जंग' में विवाहपूर्व अनुबंध को लिया गया है। इससे स्त्री-पुरुष की समानता ही अंकित नहीं है, बल्कि इस बात का भी समाधान है कि आज के युग में अलगाव के बाद होनेवाली त्रासदी से भी बचा जा सकता है। 'प्रजापथ' में नागरिक सुरक्षा और नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष की बात की गई है।

रचनावली के खंड दस में तीन कहानी-संकलन हैं। 'खत्म नहीं होती कहानी', 'विस्थापन का दर्द' और 'लड़की हँस रही है।' इनमें रचनाकार आज कहानी की अवधारणा और सृजन को स्वर देता है। वह रंगमंच के नए प्रयोग भी करता है। साथ ही कहानी का रंगमंच भी इसमें निर्मित हो गया है। इस खंड के अंत में उसका लघु प्रबंधकाव्य 'रत्नावली प्रसंग' भी है, जिसमें उस स्त्री के मिथक को रचा गया है, जो हिंदी के महाकवि तुलसी और उनकी पत्नी रत्ना पर आधारित है। इस ग्रंथ की रचना कवि ने अपने जीवन में सबसे पहले की थी और इसके लिए उन्हें राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का वह पत्र भी मिला था, जिसे इस पुस्तक में उसी रूप में रखा गया है।

रचनावली के ग्यारहवें और अंतिम खंड में 'सृजन और साहित्य' में उनके नए आलोचना-परिदृश्य के दर्शन होते हैं, जो सृजनात्मक निबंधों के रूप में है। 'जनभाषा हिंदी' के सभी निबंधों में हिंदीभाषा से जुड़े सारे आधुनिक आयाम मिल जाते हैं। इसके बाद 'लेखक की डायरी' है। इस डायरी में उनके सृजनात्मक

 ISSN 0975-735X

विकास के आंतरिक रचनात्मक दृश्य हैं। इस खंड के अंत में रचनाकार ने एक नया प्रयोग किया है। 'रचनावली से संवाद' में रचनाकार से रचनावली बातचीत करती है, जो एक संवाद के रूप में है। साक्षात्कार की इस प्रणाली का किसी रचनाकार ने पहली बार ही प्रयोग किया है। इसमें कोई अन्य व्यक्ति संवाद नहीं करता, रचनावली ही रचना के संबंध में अपने रचनाकार के सामने खड़ी हो जाती है।

राजेन्द्र मिश्र की अब तक 86 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। सृजनात्मक पुस्तकों के साथ ही आलोचना, मीडिया और शिक्षा पर भी उनकी अनेक पुस्तकें हैं। उनकी आलोचना सृजनात्मक होती है। इस रचनावली में उनकी विविध विधाओं में लिखी 48 सृजनात्मक कृतियों का समावेश किया गया है। रचनावली से संवाद के अलावा जो केवल रचनावली के लिए ही लिखा गया है, उनकी अन्य सारी पुस्तकें, जिनका इस रचनावली में समावेश है, पुस्तक के रूप में पहले ही प्रकाशन हो चुका है। राजेन्द्र मिश्र ने हिंदी साहित्य के आधुनिककाल के बाद के समय को उत्तर आधुनिककाल कहा है। इस तरह यह रचनाकार समकालीनता से आगे आजकालीनता की संवेदनात्मक विचारयात्रा से जुड़ा है। उसकी एक राष्ट्रीय पहचान है। यह रचनावली इस अर्थ में रचनाकार को जानने का सबसे सशक्त माध्यम है। राजेन्द्र मिश्र 20वीं सदी के उत्तरार्ध से 21वीं में अब तक के समय का रचनाकार हैं, जिनके साहित्य में वर्तमान अतीत से जुड़ते हुए भविष्य की संभावना की तलाश करता है।

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल की रचनावली का प्रकाशन

संपादक

डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका

डॉ॰ मीना अग्रवाल

प्रकाशक : हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰)

सभी ग्यारह खंडों का मूल्य 10,000 रुपए, पृष्ठ संख्या 6000

सभी खंड एक साथ मँगाने पर डाक-व्यय सहित मूल्य 6000 रुपए

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल की रचनावली का संपादन और प्रकाशन हर्ष का विषय है। गीत और कविताओं से आरंभ करके साहित्य की विविध विधाओं में साहित्य-सृजन उनकी लेखन-क्षमता का पुष्ट प्रमाण है। इसी आधर पर उनकी रचनावली को ग्यारह भागों में प्रकाशित किया गया है—1. ग़जल समग्र; 2. काव्य समग्र दो (कविताएँ, गीत, मुक्तक, दोहा); 3. कहानी समग्र; 4. गद्य समग्र (निबंध, साहित्यिक अनुभव, शोध, समीक्षा आदि); 5. जीवनी समग्र; 6. नाटक समग्र एक (बाल-नाटक); 7. नाटक समग्र दो (हास्य-नाटक, सामाजिक नाटक, नुक्कड़ नाटक); 8. व्यंग्य समग्र एक; 9. व्यंग्य समग्र दो; 10. भूमिका समग्र; 11. बालसाहित्य समग्र।

गिरिराजशरण की सबसे प्रिय विधा ग़जल है। गजल के उनके छह संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिनमें 500 से अधिक ग़जलें संकलित हैं। ग़जल के विषय में डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल ने स्वयं लिखा है—'गजल हृदय की अनुभूति की सूक्तिमय शैली है।' उनकी ग़जलों की सबसे बड़ी विशेषता है—आशावाद।

गिरिराजशरण अग्रवाल समग्र के द्वितीय खंड में डॉ॰ अग्रवाल की कविताएँ (अक्षर हूँ मैं), हास्य कविताएँ (मेरी हास्य-व्यंग्य कविताएँ), मुक्तक (बूँद के अंदर समंदर) रूबाइयाँ, दोहे (जिनमें मुहावरा दोहे तथा पर्यायवाची दोहे भी सम्मिलित हैं) संगृहीत किए गए हैं। इसी खंड में अप्रकाशित रूबाइयाँ, दोहे (इनमें पर्यायवाची दोहे तथा मुहावरा दोहे प्रमुख हैं) तथा गीत (जो समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं) तथा हास्य-व्यंग्य शैली की ग़जलें भी संगृहीत हैं।

इस रचनावली का तीसरा खंड कहानियों का है। इस खंड में डॉ॰ अग्रवाल द्वारा लिखी गई 82 कहानियाँ संकलित हैं। इनमें से कुछ कहानियाँ उनके पूर्व प्रकाशित कहानी-संग्रहों—जिज्ञासा एवं अन्य कहानियाँ, छोटे-छोटे सुख, आदमी और कुत्ते की नाक में भी प्रकाशित हो चुकी हैं। इनके अतिरिक्त उनकी अप्रकाशित कहानियाँ भी इस खंड में सम्मिलित हैं। डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका के अनुसार 'डॉ॰ अग्रवाल कहानी लिखने की कला में तथा कहानी को जीवन के उच्च सरोकारों से जोड़ने में पूर्णत: पारंगत हैं। इस खंड में उनकी व्यापक जीवन-दृष्टि से परिपूर्ण कहानियाँ संगृहीत हैं।'

चौथा खंड गद्य समग्र का है। इस खंड में गिरिराजशरण अग्रवाल के 'सवाल साहित्य के' (साहित्य में लेखक के अनुभव) के साथ उनके समय-समय पर प्रकाशित लेख संगृहीत हैं। डॉ॰ अग्रवाल सन् 2001-2002 में रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के मंडल 3100 के मंडलाध्यक्ष थे। मंडलाध्यक्ष के रूप में दिए गए उनके उद्‌बोधन और प्रकाशित आलेख भी इसी खंड में रखे गए हैं। इनके अतिरिक्त अनेक महत्त्वपूर्ण आलेखों का संग्रह भी इस खंड में किया गया है, जिसमें डॉ॰ अग्रवाल के चिंतन, मनन, विवेचन तथा उनकी शोधवृत्ति के दर्शन होते हैं। निबंधें की भाषा सहज, सरल, संप्रेषणक्षम है।

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल समग्र के पाँचवें खंड में भारतीय साधकों, संतों, महापुरुषों, राजनेताओं

 ISSN 0975-735X

और स्वतंत्रता-सेनानियों, साहित्यकारों की जीवनियाँ, क्रांतिकारी सुभाष के जीवन पर आधरित जीवनीपरक उपन्यास 'क्रांतिकारी सुभाष', लेखक का आत्मचरित (आत्मकथ्य) संयोजित किया गया है। 'क्रांतिकारी सुभाष' जीवनीपरक उपन्यास है, जो महान देशभक्त और स्वतंत्राता-सेनानी सुभाषचंद्र बोस के जीवन को आधर बनाकर लिखा गया है। आत्मकथ्य में डॉ॰ गिरिराजशरण ने अपने जीवन की उन घटनाओं का उल्लेख किया है, जो सामान्यत: पाठकों के सामने बाहरी व्यक्ति द्वारा नहीं आ सकतीं।

खंड छह और सात में डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा लिखित बाल-नाटकों, हास्य-व्यंग्य एकांकियों, समाज तथा राजनीति से जुड़े एकांकियों तथा नुक्कड़ नाटकों को संगृहीत किया गया है। डॉ॰ अग्रवाल ने प्रभात प्रकाशन, दिल्ली के लिए एकांकी नाटकों की एक बड़ी शृंखला का संपादन किया था। इस शृंखला में विषय-क्रम से एकांकियों का संकलन किया गया था। तब भी उन्होंने प्रत्येक खंड के लिए एकांकियों की रचना की थी। उसके बाद तो उनके एकांकियों के अनेक संकलन प्रकाशित हुए। इनमें प्रमुख हैं—नीली आँखें (जो बाद में 'मंचीय सामाजिक नाटक' नाम से प्रकाशित हुआ), ग्यारह नुक्कड़ नाटक, मंचीय व्यंग्य एकांकी, बच्चों के शिक्षाप्रद नाटक, बच्चों के हास्य नाटक, बच्चों के रोचक नाटक। इन सभी पुस्तकों में प्रकाशित एकांकी नाटकों को इन दोनों खंडों में संयोजित किया गया है।

खंड आठ तथा नौ में डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल के 202 व्यंग्य संकलित हैं। हास्य और व्यंग्य के क्षेत्राा में डॉ॰ अग्रवाल का कार्य इतना व्यापक है, ऐसा कम लोगों को ही ज्ञात है। उनके व्यंग्य के पाँच संकलन प्रकाशित हुए हैं—बाबू झोलानाथ, राजनीति में गिरगिटवाद, मेरे इक्यावन व्यंग्य, आदमी और कुत्ते की नाक तथा आओ भ्रष्टाचार करें। हास्य-व्यंग्य-लेखन की एक विशिष्ट शैली को विकसित करने में डॉ॰ अग्रवाल का योगदान विशेष सराहनीय है। उन्होंने स्वयं कहा है—'विसंगतियों और विडंबना-विकारों के रहते हुए व्यंग्य हास्यशून्य नहीं हो सकता और हास्य भी व्यंग्य के बिना अपना अस्तित्व बनाकर नहीं रख सकता।'

खंड दस भूमिका खंड है। डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल ने सन् 1986 से 2004 तक प्रत्येक वर्ष की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाओं का संपादन किया। इनके अतिरिक्त विषय-आधारित कहानियों के ग्यारह खंडों, एकांकियों के दस खंडों, व्यंग्य के दस खंडों का संपादन किया। इन सभी खंडों में विषयानुसार भूमिकाएँ लिखीं। पिछले दशक के श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य एकांकी, पिछले दशक की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ, पिछले दशक की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कहानियाँ संपादित कीं। इन सभी भूमिकाओं को दसवें खंड में सम्मिलित किया गया है। 'शोध दिशा' त्रैमासिक के जुलाई 2006 और उसके बाद लिखे गए महत्त्वपूर्ण संपादकीय भी दसवें खंड में सम्मिलित हैं।

गिरिराजशरण अग्रवाल की रचनावली के खंड ग्यारह में उनके द्वारा रचित बालसाहित्य को सम्मिलित किया गया है। उन्होंने बच्चों के लिए एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक लिखी 'मानव-विकास की कहानी', जो पहले 'आओ अतीत में चलें' नाम से प्रकाशित हुई थी और जिस पर उत्तर प्रदेश हिंदी संस्था के 'सूर पुरस्कार' सहित अनेक संस्थाओं ने पुरस्कार देकर प्रतिष्ठा की मुहर लगाई थी। इस पुस्तक में डॉ॰ अग्रवाल ने मानव-सभ्यता का इतिहास रोचक कहानी के रूप में प्रस्तुत किया है। इसी खंड में डॉ॰ अग्रवाल द्वारा लिखी हुई 29 बालकहानियाँ भी सम्मिलित हैं। इनमें कई कहानियाँ वैज्ञानिक और बालमनोविज्ञान के दृष्टिकोण से लिखी गई हैं।

यह डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली के ग्यारह खंडों का संक्षिप्त विवरण है। इन सभी खंडों में आप उनके व्यक्तित्व से उनके साहित्य की और साहित्य से उनके व्यक्तित्व की पहचान कर सकते हैं। डॉ॰ अग्रवाल एक तपस्वी साहित्यकार हैं, मौन साधक हैं, ज्ञान के जिज्ञासु और प्रसारक हैं। उनका काम बड़ा और विस्तृत है। यह रचनावली उनके जीवन की सार्थकता का प्रमाण है और इसका भी कि संभल या बिजनौर जैसे एक छोटे नगर से कोई कैसे राष्ट्रीय बनता है और अपनी पहचान को स्थायी बनाता है।

हिंदी साहित्य निकेतन

महत्त्वपूर्ण कोश एवं संदर्भ ग्रंथ

• **निश्तर ख़ानक़ाही एवं डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	
ग़ज़ल और उसका व्याकरण	250.00
• **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल एवं डॉ॰ मीना अग्रवाल**	
बृहत् हिंदी साहित्यकार संदर्भ कोश	1500.00
हिंदी तुलनात्मक शोधसंदर्भ	995.00
हिंदी शोध : नई दृष्टि	800.00
हिंदी शोध के नए प्रतिमान	800.00
शोधसंदर्भ-भाग-1	500.00
शोधसंदर्भ-भाग-2	550.00
शोधसंदर्भ-भाग-3	525.00
शोधसंदर्भ-भाग-4	595.00
शोधसंदर्भ-भाग-5	895.00
शोधसंदर्भ-भाग-6	1500.00
हिंदी तुकांत कोश	300.00

रचनावली

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल (संपादक)	
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-1 (कविता खंड एक)	1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-2 (कविता खंड दो)	1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-3 (कविता खंड तीन)	1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-4 (कविता खंड चार)	1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-5 (निबंध खंड)	1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-6 (उपन्यास खंड एक)	1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-7 (उपन्यास खंड दो)	1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-8 (उपन्यास खंड तीन)	1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-9 (उपन्यास-नाटक खंड)	1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-10 (कहानी खंड)	1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-11 (निबंध-डायरी खंड)	1000.00
डॉ॰ आदित्य प्रचण्डिया (संपादक)	
डॉ॰ महेंद्र सागर प्रचण्डिया समग्र (एक)	700.00
डॉ॰ महेंद्र सागर प्रचण्डिया समग्र (दो)	700.00
डॉ॰ महेंद्र सागर प्रचण्डिया समग्र (तीन)	700.00
डॉ॰ महेंद्र सागर प्रचण्डिया समग्र (चार)	700.00
डॉ॰ महेंद्र सागर प्रचण्डिया समग्र (पाँच)	700.00

 ISSN 0975-735X

डॉ॰ महेंद्र सागर प्रचण्डिया समग्र (छह) 700.00
डॉ॰ महेंद्र सागर प्रचण्डिया समग्र (सात) 700.00

डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका एवं डॉ॰ मीना अग्रवाल (संपादक)

गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (एक) 950.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (दो) 950.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (तीन) 950.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (चार) 950.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (पाँच) 950.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (छह) 950.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (सात) 950.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (आठ) 950.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (नौ) 950.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (दस) 950.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (ग्यारह) 500.00

समीक्षा एवं समालोचना

सवाल साहित्य के • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल** 200.00
हिंदी सिनेमा और दांपत्य संबंध • **डॉ॰ चंद्रकांत मिसाल** 500.00
सिनेमा और साहित्य का अंत:संबंध • **डॉ॰ चंद्रकांत मिसाल** 200.00
सिनेमा, साहित्य और संस्कृति • **नवलकिशोर शर्मा** 150.00
आमिर खान : हिंदी सिनेमा के सेवक • **धर्मेंद्र उपाध्याय** 300.00
डॉ॰ कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतीक विधान • **डॉ॰ अंजु भटनागर** 500.00
अमरकांत का कथासाहित्य • **डॉ॰ योगेश गोकुल पाटिल** 400.00
नारी-समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन • **डॉ॰ अनुभूति** 450.00
राजस्थानी चित्रशैली में आखेट दृश्य • **डॉ॰ सुषमा सिंह** 250.00
भोपाल के संग्रहालयों की चित्रकला • **डॉ॰ सुषमा सिंह** 250.00
मृदुला गर्ग कृत अनित्य : इतिहास और आख्यान का संबंध • **डॉ॰ ज्योति सिंह** 150.00
मृदुला गर्ग और नारी-अस्मिता का प्रश्न • **डॉ॰ ज्योति सिंह** 300.00
काका हाथरसी : एक समीक्षा-यात्रा • **डॉ॰ मिथिलेश माहेश्वरी** 300.00
सांप्रदायिकता और हिंदी कथासाहित्य • **डॉ॰ मनोजकुमार** 250.00
अपनी कविताओं में अशोक चक्रधर • **डॉ॰ दीपा के॰** 250.00
आधुनिक हिंदी गीतिकाव्य में संगीत (पुरस्कृत)• **डॉ॰ मीना अग्रवाल** 450.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल : व्यक्ति और साहित्य • **डॉ॰ हरीशकुमार सिंह** 350.00
साठोत्तरी हिंदी-ग़ज़ल : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल का योगदान
• **डॉ॰ अनिलकुमार शर्मा** 350.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल का व्यंग्य-साहित्य : कथ्य एवं भाषा •
डॉ॰ वी॰ जयलक्ष्मी 450.00

हिंदी ग़शल और डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल ● **डॉ॰ पूनम अग्रवाल** 595.00
ग़शल संस्कृति और भीतर शोर बहुत है ● **भागीनाथ वाकले** 400.00
हिंदी कथासाहित्य में नारी-विमर्श ● **प्रा॰ अमृता भरत पाटिल** 540.00
लोकरंगमंच के विविध आयाम ● **डॉ॰ पूर्णचंद शर्मा** 200.00
लोकनाट्य सांग : कल और आज ● **डॉ॰ पूर्णचंद शर्मा** 700.00
हरियाणा के लोकगायक ● **डॉ॰ पूर्णचंद शर्मा** 400.00
हरियाणा के लोककवि ● **डॉ॰ पूर्णचंद शर्मा** 300.00
देवबंद की स्वांग-परंपरा ● **डॉ॰ सुरेंद्र शर्मा** 200.00
एक साक्षात्कार : पं॰ अमृतलाल नागर के साथ ● **डॉ॰ शंकर क्षेम** 150.00
ग़ज़ल : सौंदर्य और यथार्थ ● **अनिरुद्ध सिन्हा** 150.00
समय के हस्ताक्षर (हिंदी के आधुनिक कवि) ● **डॉ॰ ज्योति व्यास** 150.00
कालिदास के साहित्य में भौगोलिक तत्त्व ● **डॉ॰ लालबहादुर रावल** 300.00
जनपद बिजनौर के आधुनिककालीन साहित्यकार ● **डॉ॰ अशोककुमार** 350.00
बिजनौर क्षेत्र की ग्रामोद्योग-संबंधी शब्दावली का अध्ययन ● **डॉ॰ ओमदत्त आर्य** 500.00
आस्थावाद एवं अन्य निबंध ● **डॉ॰ मिथिलेश दीक्षित** 300.00
साहित्य और संस्कृति ● **डॉ॰ मिथिलेश दीक्षित** 300.00
हिंदी व्यंग्य-निबंध : स्वतंत्रता के बाद ● **डॉ॰ आशा रावत** 350.00
आज़ादी के बाद का हिंदी गद्य व्यंग्य ● **डॉ॰ प्रेम जनमेजय** 500.00
हिंदी बालकाव्य के विविध पक्ष ● **विनोदचंद्र पांडेय** 300.00
हिंदी बालसाहित्य : डॉ॰ सुरेंद्र विक्रम का योगदान ● **डॉ॰ स्वाति शर्मा** 450.00
भीष्म साहनी का कथासाहित्य : सांप्रदायिक सद्भाव ● **डॉ॰ पी॰आर॰ वासुदेवन** 300.00
हिंदी ब्लॉगिंग : अभिव्यक्ति की नई क्रांति ● **अविनाश वाचस्पति, रवींद्र प्रभात** 495.00
हिंदी ब्लॉगिंग का इतिहास ● **रवींद्र प्रभात** 300.00
सूरदास का सौंदर्य-चित्रण ● **डॉ॰ विजय इंदु** 250.00
हरिऔध का सौंदर्य-चित्रण ● **डॉ॰ विजय इंदु** 500.00
साठोत्तरी हिंदी रेखाचित्र : शैलीवैज्ञानिक अध्ययन ● **डॉ॰ मीनल रश्मि** 250.00
समकालीन हिंदी कविता में सामाजिक चेतना ● **डॉ॰ शीला गहलौत** 500.00
संत रविदास ● **डॉ॰ सुदेश कुमारी** 300.00
हरिवंशराय बच्चन के काव्य में स्वच्छंदतावादी प्रवृत्तियाँ ● **डॉ॰ राजकुमार जमदग्नि** 500.00
साहित्य और संस्कृति का अंत:संबंध ● **डॉ॰ आदित्य प्रचण्डिया** 400.00
मोक्षशास्त्र का माहात्म्य ● **डॉ॰ आदित्य प्रचण्डिया** 400.00
वादविवाद प्रतियोगिता : पक्ष और विपक्ष ● **डॉ॰ गिरिराजशरण, डॉ॰ मीना अग्रवाल** 200.00
फिजी में प्रवासी भारतीय ● **डॉ॰ शुचि गुप्ता** 300.00
मुक्तिबोध का रचना-संसार ● **डॉ॰ शिवांकर लधवे** 200.00
नाटककार पंडित राधेश्याम कथावाचक ● **डॉ॰ अशोक उपाध्याय** 200.00
यशपाल के उपन्यासों में सामाजिक चेतना ● **डॉ॰ अनीता रानी** 400.00

सृजन और साहित्य • **डॉ॰ राजेंद्र मिश्र**	400.00
समालोचना के फलक • डॉ॰ बागेश्री चक्रधर	300.00
शिक्षा की समस्याएँ और हिंदी कथासाहित्य • **डॉ॰ शशिप्रभा**	450.00
ललित निबंध : परंपरा और चिंतन • **डॉ॰ शिवाजी एन॰ देवरे**	300.00
ललित निबंध्कार डॉ॰ श्यामसुंदर दुबे • **डॉ॰ शिवाजी एन॰ देवरे**	300.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल की ग़ाशल दृष्टि • **डॉ॰ शिवाजी एन॰ देवरे**	300.00
रुहेलखंड के परंपरागत लोकगीत • **श्रीमती नीरजा द्विवेदी**	200.00
हिंदी कहानी के नए प्रतिमान • **डॉ॰ अभयकुमार खैरनार**	500.00
हिंदी नाटक के नए प्रतिमान • **डॉ॰ मनोजकुमार**	400.00
हिंदी उपन्यास के नए प्रतिमान • **प्रा॰ जसपालसिंह वळवी**	550.00
जनसंख्या अवधारणा एवं लैंगिक संरचना • **डॉ॰ विश्वनाथ पांडेय**	500.00
भारत में सांप्रदायिक सद्भाव • **डॉ॰ गीता यादव**	500.00
एक इंद्रधनुषी व्यक्तित्व • **सं॰ डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	600.00
साठोत्तर व्यंग्य और श्रीलाल शुक्ल • **डॉ॰ रमेश तिवारी**	400.00
स्वातंत्रायोत्तर हिंदी कविता में व्यंग्य • **डॉ॰ शेरजंग गर्ग**	700.00
कुछ व्यंग्य की कुछ व्यंग्यकारों की • **डॉ॰ हरीश नवल**	300.00
राष्ट्रीयता, संस्कृति और साहित्य • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	700.00
साहित्यिक निबंध : मूल्य और मूल्यांकन • **डॉ॰ निशा तिवारी**	400.00
जनमानस के पक्षधर हिंदी नुक्कड़ नाटक • **डॉ॰ पी॰वी॰ कोटमे**	400.00

हास्य-व्यंग्य

मेरी हास्य-व्यंग्य कविताएँ • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	150.00
मेरे इक्यावन व्यंग्य • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	300.00
चुनी हुई हास्य कविताएँ • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	250.00
बाबू झोलानाथ • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	60.00
राजनीति में गिरगिटवाद • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	100.00
आदमी और कुत्ते की नाक • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	150.00
आओ भ्रष्टाचार करें • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	200.00
दूध का धुला लोकतंत्र • **गोपाल चतुर्वेदी**	150.00
आधुनिक बेताल कथाएँ • **गिरीश पंकज**	200.00
भज्जी का जूता • **महेशचंद्र द्विवेदी**	150.00
क्लियर फंडा • **महेशचंद्र द्विवेदी**	120.00
प्रिय-अप्रिय प्रशासकीय प्रसंग • **महेशचंद्र द्विवेदी**	170.00
वीरप्पन की मूँछें • **महेशचंद्र द्विवेदी**	200.00
वसीयतनामा • **पं॰ सूर्यनारायण व्यास, सं॰ राजशेखर व्यास**	150.00
नो टेंशन • **डॉ॰ सुरेश अवस्थी**	200.00

काका की विशिष्ट रचनाएँ • **काका हाथरसी** 300.00
काका के व्यंग्य-बाण • **काका हाथरसी** 200.00
कक्के के छक्के • **काका हाथरसी** 200.00
लूटनीति मंथन करी • **काका हाथरसी** 200.00
खिलखिलाहट • **काका हाथरसी** 200.00
पैसे कहाँ से दें • **डॉ॰ आशा रावत** 200.00
चाहिए एक और भगतसिंह • **डॉ॰ आशा रावत** 100.00
नमस्कार प्रजातंत्रा • **महेश राजा** 150.00
ए जी सुनिए • **अशोक चक्रधर** 100.00
इसलिए बौड़म जी इसलिए • **अशोक चक्रधर** 100.00
नमस्ते जी • **डॉ॰ बलजीत सिंह** 150.00
अब हँसने की बारी है • **डॉ॰ बलजीत सिंह** 200.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
पिछले दशक की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कहानियाँ 300.00
पिछले दशक की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ 300.00
पिछले दशक के श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य एकांकी 300.00
शिवशर्मा के चुने हुए व्यंग्य • **डॉ॰ शिव शर्मा** 200.00
बजरंगा (व्यंग्य-उपन्यास) • **डॉ॰ शिव शर्मा** 300.00
अपने-अपने भस्मासुर • **डॉ॰ शिव शर्मा** 250.00
प्रतिनिधि व्यंग्य • **दामोदरदत्त दीक्षित** 200.00
हँसते-हँसते कट जाएँ रस्ते • **मधुप पांडेय** 200.00
धमकीबाशी के युग में • **निश्तर ख़ानक़ाही** 200.00
ला ख़र्चा निकाल • **गजेंद्र तिवारी** 200.00
जलनेवाले जला करें • **गजेंद्र तिवारी** 200.00
पेट में दाढ़ियाँ हैं • **सूर्यकुमार पांडेय** 100.00
ये है इंडिया • **डॉ॰ हरीशकुमार सिंह** 220.00
आँखों देखा हाल • **डॉ॰ हरीशकुमार सिंह** 250.00
सच का सामना • **हरीशकुमार सिंह** 150.00
लिफ़्ट करा दे • **डॉ॰ हरीशकुमार सिंह** 200.00
देवेंद्र के कार्टून • **देवेंद्र शर्मा** 200.00
कार्टून कौतुक • **देवेंद्र शर्मा** 120.00
लिफ़ाफ़े का अर्थशास्त्र • **डॉ॰ पिलकेंद्र अरोरा** 200.00
अजगर करे न चाकरी • **बाबूसिंह चौहान** 200.00
जिंदगी तेरे नाम डार्लिंग • **डॉ॰ लालित्य ललित** 200.00
विलायतीराम पांडेय • **डॉ॰ लालित्य ललित** 200.00
नो कमेंट • **सुमित प्रताप सिंह** 200.00

सावधान पुलिस मंच पर है • **सुमित प्रताप सिंह** 200.00
चुनिंदा व्यंग्य : आलोक पुराणिक • **सं॰ डॉ॰ रमेश तिवारी** 300.00
चुनिंदा व्यंग्य : आशा रावत • **सं॰ डॉ॰ रमेश तिवारी** 300.00
चुनिंदा व्यंग्य : गिरिराजशरण अग्रवाल • **सं॰ डॉ॰ रमेश तिवारी** 300.00
चुनिंदा व्यंग्य : गोपाल चतुर्वेदी • **सं॰ डॉ॰ रमेश तिवारी** 300.00
चुनिंदा व्यंग्य : प्रेम जनमेजय • **सं॰ डॉ॰ रमेश तिवारी** 300.00
चुनिंदा व्यंग्य : महेशचंद्र द्विवेदी • **सं॰ डॉ॰ रमेश तिवारी** 300.00
चुनिंदा व्यंग्य : श्रवणकुमार उर्मलिया • **सं॰ डॉ॰ रमेश तिवारी** 300.00
चुनिंदा व्यंग्य : सुभाष चंदर • **सं॰ डॉ॰ रमेश तिवारी** 300.00
चुनिंदा व्यंग्य : सुशील सिद्धार्थ • **सं॰ डॉ॰ रमेश तिवारी** 300.00
चुनिंदा व्यंग्य : हरीशकुमार सिंह • **सं॰ डॉ॰ रमेश तिवारी** 300.00

कहानी

एक सपना मेरा भी था • **डॉ॰ आशा रावत** 200.00
एक थी माया • **विजयकुमार** 200.00
सरहदों के पार • **सुरेशचंद्र शुक्ल** 200.00
छोटे-छोटे सुख • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल** 200.00
कथा जारी है • **बाबूसिंह चौहान** 250.00
इक्कीस कहानियाँ • **सत्यराज** 200.00
अंदर धूप बाहर धूप (नारी-मन की कहानियाँ) • **डॉ॰ मीना अग्रवाल** 250.00
कुत्तेवाले पापा • **मीना अग्रवाल** 150.00
क्या अच्छा क्या बुरा • **मीना अग्रवाल** 200.00
उत्तराखंड की लोकगाथाएँ • **डॉ॰ दिनेशचंद्र बलूनी** 200.00
एक बौना मानव • **महेशचंद्र द्विवेदी** 200.00
लव जिहाद • **महेशचंद्र द्विवेदी** 200.00
इमराना हाशिर हो • **महेशचंद्र द्विवेदी** 150.00
हैं आस्माँ कई और भी • **नीरजा द्विवेदी** 200.00
कौन कितना निकट • **रेणु 'राजवंशी' गुप्ता** 120.00
लघु कथाएँ • **डॉ॰ हरिशरण वर्मा** 150.00
कमरा नंबर 103 • **सुधा ओम ढींगरा** 150.00
कहानियाँ अमेरिका से • **सं॰ इला प्रसाद** 150.00
अंतराल • **संगीता** 200.00
प्रेमचंद की कालजयी कहानियाँ • **सं॰ डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका** 150.00
लघुकथाएँ जीवनमूल्यों की • **सं॰ सुकेश साहनी, रामेश्वर कांबोज 'हिमांशु'** 150.00
पंद्रह सिंधी कहानियाँ • **सं॰ देवी नागरानी** 200.00
दर्द की एक गाथा • **सं॰ देवी नागरानी** 300.00
भाँति-भाँति की मानुसी • **अंशु त्रिापाठी** 250.00

लड़की हँस रही है • **डॉ॰ राजेंद्र मिश्र**	300.00
आत्मकथा का कोलाज • **नीलम चतुर्वेदी**	200.00
ऐसा प्यार कहाँ • **नीतू मुकुल**	250.00
रेल कहानियाँ • **कृपासागर साहू**	300.00

उपन्यास

इतिहास की आवाश • **राजेन्द्र मिश्र**	450.00
अनोखा उपहार • **श्रीमती सुषमा अग्रवाल**	200.00
आसरा • **श्रीमती सुषमा अग्रवाल**	100.00
तीन बीघा शमीन • **श्रीमती सुषमा अग्रवाल**	200.00
मन के जीते जीत • **श्रीमती सुषमा अग्रवाल**	200.00
कुल का चिराग • **श्रीमती सुषमा अग्रवाल**	200.00
नया सवेरा • **श्रीमती सुषमा अग्रवाल**	200.00
जागृति • **श्रीमती सुषमा अग्रवाल**	450.00
कालचक्र से परे • **श्रीमती नीरजा द्विवेदी**	200.00
शांतिधाम • **श्रीमती नीरजा द्विवेदी**	250.00
भीगे पंख • **महेशचंद्र द्विवेदी**	200.00
मानिला की योगिनी • **महेशचंद्र द्विवेदी**	200.00
और लहरें उफनती रहीं • **डॉ॰ तारादत्त निर्विरोध**	200.00
बजरंगा (व्यंग्य-उपन्यास) • **डॉ॰ शिव शर्मा**	300.00
अराज-राज • **डॉ॰ मोहन गुप्त**	200.00
सुराज-राज • **डॉ॰ मोहन गुप्त**	350.00
एक गुमनाम फौजी की डायरी • **डॉ॰ आशा रावत**	250.00
एक चेहरे की कहानी • **डॉ॰ आशा रावत**	250.00
गुरुदक्षिणा (व्यंग्य-उपन्यास) • **डॉ॰ आशा रावत**	200.00
एक फरिश्ता ऐसा देखा • **प्रेमसागर तिवारी**	250.00
रोशनी का पहरा • **डॉ॰ आरती लोकेश**	300.00

एकांकी-नाटक

• **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**

मंचीय हास्य-व्यंग्य एकांकी	200.00
मंचीय सामाजिक एकांकी	200.00
बच्चों के हास्य नाटक	200.00
बच्चों के रोचक नाटक	200.00
बच्चों के शिक्षाप्रद नाटक	200.00
बच्चों के अनुपम नाटक	200.00
बच्चों के उत्तम नाटक	200.00
भारतीय गौरव के बाल-नाटक	200.00

 ISSN 0975-735X

प्रेमचंद की कहानियों पर आधारित नाटक	200.00
ग्यारह नुक्कड़ नाटक	200.00
बच्चों के अनोखे नाटक • **प्रकाश मनु**	200.00
हास्य-व्यंग्य के बाल-नाटक • **प्रकाश मनु**	200.00
संसार : एक नाट्यशाला • **बाबूसिंह चौहान**	250.00
ग्यारह एकांकी • **डॉ॰ हरिशरण वर्मा**	200.00
संस्कार एवं अन्य नाटक • **डॉ॰ हरिशरण वर्मा**	300.00
दमन • **रामाश्रय दीक्षित**	100.00
स्वप्न पुरुष • **डॉ॰ उर्मिला अग्रवाल**	250.00
अफलातून की अकादमी • **डॉ॰ शिव शर्मा**	150.00
औरत की जंग • **राजेन्द्र मिश्र**	200.00
प्रजापथ • **राजेन्द्र मिश्र**	200.00

ललित निबंध एवं रेखाचित्र

कैसे-कैसे लोग मिले • **निश्तर ख़ानक़ाही**	125.00
यादों का मधुबन • **कृष्ण राघव**	150.00
समय के चाक पर • **डॉ॰ लालबहादुर रावल**	125.00
समय एक नाटक • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	160.00
दर्पण झूठ बोलता है • **बाबूसिंह चौहान**	60.00
मकड़जाल में आदमी • **बाबूसिंह चौहान**	80.00
उफनती नदियों के सामने • **बाबूसिंह चौहान**	100.00
अनुभव के पंख • **चंद्रवीरसिंह गहलौत**	250.00
मेरे साक्षात्कार • **डॉ॰ बालशौरि रेड्डी**	250.00
आधी हकीकत आधा फसाना • **डॉ॰ बलजीत सिंह**	200.00
फूलों की महक • **डॉ॰ ओमदत्त आर्य**	200.00
संवाद साहित्यकारों से • **डॉ॰ गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया**	200.00

गीत-ग़ज़ल, कविता

निश्तर ख़ानक़ाही समग्र (प्रकाशनाधीन)/ **निश्तर ख़ानक़ाही**	500.000
ग़जल मैंने छेड़ी (ग़जल-संग्रह)/ **निश्तर ख़ानक़ाही**	80.00
ग़जलों के शहर में (ग़जल-संग्रह)/ **निश्तर ख़ानक़ाही**	200.00
मेरे लहू की आग (ग़जल-संग्रह)/ **निश्तर ख़ानक़ाही**	150.00
कोई आवाज देता है • **डॉ॰ कुँअर बेचैन**	250.00
दिन दिवंगत हुए • **डॉ॰ कुँअर बेचैन**	250.00
कुँअर बेचैन के नवगीत • **डॉ॰ कुँअर बेचैन**	200.00
कुँअर बेचैन के प्रेमगीत • **डॉ॰ कुँअर बेचैन**	250.00

पर्स पर तितली (हाइकु) • **डॉ॰ कुँअर बेचैन**	200.00
मातृभूमि के लिए • **रमेश पोखरियाल 'निशंक'**	200.00
संघर्ष जारी है • **रमेश पोखरियाल 'निशंक'**	170.00
जीवन-पथ में • **रमेश पोखरियाल 'निशंक'**	150.00
देश हम जलने न देंगे • **रमेश पोखरियाल 'निशंक'**	150.00
तुम भी मेरे साथ चलो • **रमेश पोखरियाल 'निशंक'**	150.00
झरनों का तराना है • **लक्ष्मी खन्ना सुमन**	200.00
अहसासों के ताने-बाने • **लक्ष्मी खन्ना सुमन**	200.00
समय के भूगोल में • **राजेंद्र मिश्र**	200.00
असाबिया • **राजेंद्र मिश्र**	200.00
आठवाँ राग • **राजेंद्र मिश्र**	200.00
हवाएँ खामोश हैं • **राजेंद्र मिश्र**	200.00
सदियाँ गुजर रही हैं • **राजेंद्र मिश्र**	300.00
शब्द ही नहीं हैं • **राजेंद्र मिश्र**	300.00
सप्त स्वर • **राजेंद्र मिश्र**	400.00
आपातकालीन कविताएँ • **राजेंद्र मिश्र**	300.00
शमा हर रंग में जलती है • **रामेश्वरप्रसाद**	150.00
अक्षर हूँ मैं (कविताएँ) • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	250.00
सन्नाटे में गूँज (ग़ज़ल-संग्रह) • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	200.00
भीतर शोर बहुत है (ग़ज़ल-संग्रह) • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	200.00
मौसम बदल गया कितना (ग़ज़ल-संग्रह) • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	200.00
रोशनी बनकर जिओ (ग़ज़ल-संग्रह) • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	200.00
शिकायत न करो तुम (ग़ज़ल-संग्रह) • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	200.00
आदमी है कहाँ (ग़ज़ल-संग्रह) • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	200.00
ख़ुशबू सा बिखर जाऊँगा (ग़ज़ल-संग्रह) • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	250.00
प्रतिनिधि ग़ज़लें • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	200.00
बूँद के अंदर समंदर (मुक्तक) • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	200.00
मान भी जा छुटकी • **गीतिका गोयल**	150.00
आदमी के हक़ में (ग़ज़ल-संग्रह) • **रामगोपाल भारतीय**	100.00
यहाँ तक वहाँ से (कविताएँ) • **रमेश कौशिक**	200.00
हास्य नहीं व्यंग्य (कविताएँ) • **रमेश कौशिक**	150.00
गांधारी का सच (खंडकाव्य) • **आर्यभूषण गर्ग**	200.00
राधेय (खंडकाव्य) • **डॉ॰ आकुल**	120.00
असितचंद्र : अवदात चंद्रिका (काव्य-नाटक) • **डॉ॰ आकुल**	120.00
शिंदगी गाती तो है/ (ग़ज़ल-संग्रह) • **डॉ॰ आकुल**	120.00
आसमान मेरा भी है (ग़ज़ल-संग्रह) • **किशनस्वरूप**	100.00

 ISSN 0975-735X

बूँद-बूँद सागर मैं (ग़ज़ल-संग्रह) • **किशनस्वरूप**	100.00
आँचल-आँचल खुशबू (ग़ज़ल-संग्रह) • **कर्नल तिलकराज**	200.00
ज़ख़्म खिलने को हैं (ग़ज़ल-संग्रह) • **कर्नल तिलकराज**	200.00
अग्निसुता • **राजेंद्र शर्मा**	150.00
सीतायनी • **डॉ॰ शंकर क्षेम**	150.00
गंगापुत्र भीष्म : शर-शैया से • **डॉ॰ शंकर क्षेम**	150.00
हिरना लौट चलें (गीत-संग्रह) • **शचींद्र भटनागर**	250.00
तिराहे पर (ग़ज़ल-संग्रह) • **शचींद्र भटनागर**	250.00
ढाई आखर प्रेम के (गीत-संग्रह) • **शचींद्र भटनागर**	200.00
अखंडित अस्मिता (मुक्तक) • **शचींद्र भटनागर**	200.00
कुछ भी सहज नहीं (नवगीत-संग्रह) • **शचींद्र भटनागर**	200.00
त्रिवर्णी (नवगीत-संग्रह) • **शचींद्र भटनागर**	200.00
युवाओं के गीत • **शचींद्र भटनागर**	400.00
गुलमुहर की छाँव में (ग़ज़ल-संग्रह) • **मनोज अबोध**	100.00
मेरे भीतर महक रहा है (ग़ज़ल-संग्रह) • **मनोज अबोध**	150.00
तारा प्रकाश समग्र • **तारा प्रकाश**	600.00
उजियारा आशाओं का • **तारा प्रकाश**	150.00
बुलंदी इरादों की • **तारा प्रकाश**	150.00
चलने से मंज़िल मिलती है • **तारा प्रकाश**	200.00
इंद्रधनुष • **तारा प्रकाश**	200.00
संवेदनाओं के रंग • **तारा प्रकाश**	200.00
सुरों के ख़त • **अश्विनीकुमार 'विष्णु'**	100.00
सुनहरे मंत्र का जादू • **अश्विनीकुमार 'विष्णु'**	100.00
सुनते हुए ऋतुगीत • **अश्विनीकुमार 'विष्णु'**	150.00
सुबह की अंगूठी • **अश्विनीकुमार 'विष्णु'**	150.00
सफ़र में साथ-साथ (मुक्तक-संग्रह) • **डॉ॰ मीना अग्रवाल**	200.00
जो सच कहे (हाइकु-संग्रह) • **डॉ॰ मीना अग्रवाल**	150.00
यादें बोलती हैं (कविताएँ) • **डॉ॰ मीना अग्रवाल**	200.00
धूप अपने पन की (मुक्तक-संग्रह) • **डॉ॰ मीना अग्रवाल**	200.00
एक मुट्ठी धूप • **नीरजा सिंह**	100.00
कटे हाथों के हस्ताक्षर • **डॉ॰ कमल मुसद्दी**	150.00
फ़ासले मिट जाएँगे (ग़ज़ल-संग्रह) • **डॉ॰ बलजीत सिंह**	150.00
शब्द-शब्द संदेश (दोहे) • **डॉ॰ बलजीत सिंह**	150.00
जीवन है मुस्कान (दोहे) • **डॉ॰ बलजीत सिंह**	150.00
भीतर का संगीत (दोहे) • **डॉ॰ बलजीत सिंह**	200.00
सुख के बिरवे रोप (दोहे) • **डॉ॰ बलजीत सिंह**	200.00

इंद्रधनुष के रंग (दोहे) • **डॉ॰ बलजीत सिंह**	200.00
प्यार के गुलाल से (हाइकु) • **डॉ॰ बलजीत सिंह**	200.00
हारना हिम्मत नहीं (मुक्तक) • **डॉ॰ बलजीत सिंह**	200.00
मानव तू जग में सुंदरतम • **डॉ॰ बलजीत सिंह**	200.00
रिश्ते नए अब जोड़िए (ग़जलें) • **डॉ॰ बलजीत सिंह**	200.00
बहती नदी हो जाइए (ग़जलें) • **डॉ॰ योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण'**	150.00
अँधियारों से लड़ना सीखें (ग़जलें) • **डॉ॰ योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण'**	200.00
जीवन-अमृत : पर्यावरण चेतना (दोहा-संग्रह) • **डॉ॰ योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण'**	200.00
अक्षर-अक्षर हो अमर (दोहा-संग्रह) • **डॉ॰ योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण'**	200.00
वैदुष्यमणि विद्योत्तमा (खंडकाव्य) • **डॉ॰ योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण'**	200.00
अनजाने आकाश में • **महेशचंद्र द्विवेदी**	170.00
बातें कुछ अनकही • **सत्येंद्र गुप्ता**	200.00
मैंने देखा है • **सत्येंद्र गुप्ता**	200.00
हौसला तो है • **सत्येंद्र गुप्ता**	200.00
जिंदगी रुकती नहीं • **सत्येंद्र गुप्ता**	200.00
जज्बात की धूप • **धूप धौलपुरी**	250.00
आड़ी-तिरछी यादों-सा कुछ • **नवलकिशोर शर्मा**	180.00
जब चाँद डूब रहा था • **नवलकिशोर शर्मा**	200.00
एड्स शतक • **पूरणसिंह सैनी**	150.00
श्रीगोगाचरित (महाकाव्य) • **पूरणसिंह सैनी**	300.00
श्रीकृष्णचरित (महाकाव्य) • **पूरणसिंह सैनी**	800.00
खोजें जीवन सत्य (दोहे) • **डॉ॰ ओमदत्त आर्य**	150.00
अपनी एक लकीर (दोहे) • **डॉ॰ ओमदत्त आर्य**	200.00
राष्ट्र-शक्ति • **सलेकचंद संगल**	150.00
माँ तुझे प्रणाम • **सलेकचंद संगल**	150.00
लहरों के विरुद्ध • **डॉ॰ रामप्रकाश**	200.00
हर वृक्ष महाबोधि नहीं होता • **महेंद्र कुमार**	200.00
पीड़ा का राजमहल • **डॉ॰ उर्मिला अग्रवाल**	200.00
मैं एक समुद्र • **डॉ॰ तारादत्त 'निर्विरोध**	200.00
उड़ान जारी है • **विनोद भृंग**	200.00
कहता कुछ मौन (हाइकु-संग्रह) • **हरिराम पथिक**	200.00
जो जिया वो रचा (मुक्तक-संग्रह) • **हरिराम पथिक**	200.00
धनुषभंजक राम • **चंद्रवीरसिंह गहलौत 'बेदाग'**	200.00
एक कुल्हड़ चाय • **स्वर्ण ज्योति**	200.00
सूर्यनगर की चाँदनी • **रामेश्वर वैष्णव**	150.00
रात • **दामोदर खड़से**	200.00

स्मृतियाँ • **सुषमा अग्रवाल**	200.00
कविताएँ फेसबुक से • **लालित्य ललित**	200.00
दुनिया इतनी भी बुरी नहीं • **लालित्य ललित**	200.00
बचे रहेंगे केवल शब्द • **लालित्य ललित**	200.00
मेरे लिए तुम्हारा होना • **लालित्य ललित**	250.00
सब पता है • **लालित्य ललित**	250.00
आँगन घर में टहलेगा • **लालित्य ललित**	250.00
घर उदास है • **लालित्य ललित**	300.00
अपने में से तुम्हें देखना • **लालित्य ललित**	200.00
आदत सी तुम्हारी • **लालित्य ललित**	250.00
चुप्पी में से उद्घोष • **लालित्य ललित**	300.00
चुप हैं शब्द और उनके अर्थ • **लालित्य ललित**	200.00
कभी सोचता हूँ कि • **लालित्य ललित**	250.00
इतना होने के बाद भी• **लालित्य ललित**	250.00
विरमाल गीत समग्र • **सं॰ डॉ॰ पंकज विरमाल**	500.00
विस्थापित मन • **आस्था नवल**	200.00
रंगारंग कविताएँ • **बलवंत रंगीला**	300.00
सिद्धांत सतसई • **डॉ॰ महेंद्रसागर प्रचण्डिया/संपादन डॉ॰ कनुप्रिया प्रचण्डिया**	300.00
क़तरा-क़तरा सागर • **प्रेमसागर कालिया**	300.00
श्रीमद्भगवद्गीता (पंजाबी कविता अनुवाद) • **अनुवादक प्रेमसागर कालिया**	200.00
समकालीन महिला ग़ज़लकार • **हरेराम 'समीप'**	300.00
कविताओं के मन से • **विजयकुमार**	495.00
सोच की चिंगारियाँ • **चमनलाल**	200.00
मेरी समग्र कविताएँ • **प्रहलाद तिवारी**	950.00
कवि नहीं हूँ, फिर भी • **सुरेंद्रकुमार यादव**	400.00
माट्टी की आवाज • **रामकुमार आत्रेय**	250.00

आत्मकथा-संस्मरण, साक्षात्कार, पत्र

मेरा जीवन : ए-वन • **काका हाथरसी**	300.00
आमिर खान : हिंदी सिनेमा के सेवक • **धर्मेन्द्र उपाध्याय**	250.00
आत्मसरोवर • **ओम्प्रकाश अग्रवाल**	125.00
निष्ठा के शिखर-बिंदु • **नीरजा द्विवेदी**	200.00
स्विट्जरलैंड के वे 21 दिन • **नीरजा द्विवेदी**	200.00
कुछ अपनी कुछ जगबीती • **नीरजा द्विवेदी**	250.00
सफ़र साठ साल का • **डॉ॰ अजय जनमेजय (सं)**	400.00
यादों की गुल्लक • **गीतिका गोयल, डॉ॰ अनुभूति (संपादक)**	300.00

आधी हक़ीक़त आधा फ़साना • **डॉ॰ बलजीतसिंह**	150.00
मेरे साक्षात्कार • **डॉ॰ बालशौरि रेड्डी**	250.00
संवाद : साहित्यकारों से • **डॉ॰ गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'**	200.00
उत्तरोत्तर • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल (संपादक)**	250.00
श्रद्धांजलि • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल (संपादक)**	250.00

बाल-साहित्य

गधा बत्तीसी • **लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'**	200.00
ईनी-मीनी की मजेदार दुनिया • **लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'**	200.00
चिड़ियों की दुनिया रंगीन • **लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'**	200.00
कविताओं में पंचतंत्रा • **लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'**	250.00
छुटके-मुटके जंगल में • **लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'**	200.00
नन्हे-मुन्ने गीत सुहाने • **लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'**	200.00
मैं भी स्कूल जाऊँगी • **लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'**	200.00
नन्ही-मुन्नी बाल ग़जलें • **लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'**	200.00
Tiny -Tots in Forest • **Laxmi Khanna 'Suman'**	200.00
Adventures of the Laughing Donkey • **Laxmi Khanna 'Suman'**	200.00
चुनमुन की कहानियाँ (पुरस्कृत) • **गीतिका गोयल**	200.00
बातूनी कहानियाँ • **गीतिका गोयल**	200.00
धरती पर चाँद (पुरस्कृत) • **शंभूनाथ तिवारी**	200.00
हम बगिया के फूल (बालगीत) • **डॉ॰ बलजीतसिंह**	200.00
आओ गीत सुनाओ गीत (बालगीत) • **डॉ॰ बलजीतसिंह**	200.00
छुट्टी के दिन बड़े सुहाने (बालगीत) • **डॉ॰ बलजीतसिंह**	200.00
दिन बचपन के (बालगीत) • **डॉ॰ बलजीतसिंह**	200.00
जादूगर बादल (बालगीत) • **विनोद भृंग**	200.00
आटे-बाटे दही चटा के (शिशुगीत) • **बालकृष्ण गर्ग**	200.00
बालकृष्ण गर्ग के बालगीत • **बालकृष्ण गर्ग**	500.00
किशोर मन की कहानियाँ • **डॉ॰ सरला अग्रवाल**	200.00
चलो आकाश को छू लें • **डॉ॰ तारादत्त निर्विरोध**	200.00
मानव-विकास की कहानी • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	200.00
पार्टी गेम्स • **चाँदनी कक्कड़**	125.00
कागज की नाव • **डॉ॰ सरोजनी कुलश्रेष्ठ**	200.00
शिक्षाप्रद बालकहानियाँ • **डॉ॰ अशोक कुमार**	200.00
भारतीय लोकजीवन की कहानियाँ • **डॉ॰ तारा प्रकाश**	200.00

विविध

उत्तराखंड में आध्यात्मिक पर्यटन • **डॉ॰ सरिता शाह**	200.00

• **निश्तर ख़ानक़ाही, डॉ॰ गिरिराजशरण, डॉ॰ मीना अग्रवाल**	
पर्यावरण : दशा और दिशा (पुरस्कृत)	300.00
नारी : कल और आज	300.00
• **निश्तर ख़ानक़ाही, डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	
विश्व आतंकवाद : क्यों और कैसे	300.00
हिंसा : कैसी-कैसी	300.00
दंगे : क्यों और कैसे	300.00
• **रमेशचंद्र दीक्षित, निश्तर ख़ानक़ाही, डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	
मानवाधिकार : दशा और दिशा (पुरस्कृत)	300.00
अपराध-अपराधी : अन्वेषण एवं अभियोजन • **डॉ॰ गिरिराज शाह**	200.00
गुरु नानकदेव • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	200.00
अमृतवाणी • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	300.00
आप भी तनावमुक्त हो सकते हैं • **डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल**	250.00
वेद-वेदांत दर्शन • **डॉ॰ मूलचन्द दालभ**	300.00
प्रकृति : एक ज्ञेय तत्त्व • **डॉ॰ मूलचन्द दालभ**	300.00
कन्हैया गीता • **डॉ॰ मूलचन्द दालभ**	900.00
टास्कफोर्स : हैल्थकेयर प्रोजेक्ट्स • **डॉ॰ गोविंद शर्मा एवं रवि लंगर**	450.00
सिद्धाश्रम का संन्यासी • **मनोज भारद्वाज**	300.00
समुद्री दैत्य सुनामी • **डॉ॰ लालबहादुर रावल**	300.00
डगर पनघट की • **सुधीर गुप्ता**	200.00
था सुंदरतम की • **महेंद्र शर्मा**	200.00
Ecosystem in The Central Himalyas • **Dr.Vikram Singh IPS**	200.00

अपना आदेश निम्नलिखित पते पर भेजें

हिंदी साहित्य निकेतन

16 **साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰)**

फोन : 01342-263232, 09557746346, 07838090732

गुड़गाँव कार्यालय

बी-203, पार्क व्यू सिटी 2, सोहना रोड, गुड़गाँव 122018

0124-4076565

केंद्रीय हिंदी संस्थान

मानव संसाधन विकास मंत्राालय, भारत सरकार

संपर्क : हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा 282005, फोन : 0562-2530684,
वेबसाइट : www.hindisansthan.org, www.khsindia.org

संक्षिप्त परिचय

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा 1961 ई॰ में स्थापित एक स्वायत्त शैक्षिक संस्था है। इसका संचालन स्वायत्त संगठन केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल द्वारा किया जाता है। संस्थान का मुख्यालय आगरा में स्थित है और इसके आठ क्षेत्रीय केंद्र–दिल्ली, हैदराबाद, गुवाहाटी, शिलांग, मैसूर, दीमापुर, भुवनेश्वर तथा अहमदाबाद में हैं।

संस्था के प्रमुख उद्देश्य

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुपालन में अखिल भारतीय भाषा के रूप में हिंदी का विकास करते हुए इसके विकास और प्रसार की दृष्टि से उपयोगी शैक्षणिक पाठ्यक्रमों की प्रस्तुति एवं संचालन ■ विभिन्न स्तरों पर गुणवत्तापूर्ण हिंदी-शिक्षण का प्रसार, हिंदी-शिक्षकों का प्रशिक्षण, हिंदीभाषा और साहित्य के उच्चतर अध्ययन का प्रबंधन, हिंदी के साथ विभिन्न भाषाओं के तुलनात्मक भाषावैज्ञानिक अध्ययन को प्रोत्साहन और हिंदीभाषा एवं शिक्षण से जुड़े विविध अनुसंधान कार्यों का आयोजन ■ अपने विभिन्न पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए परीक्षा-आयोजन तथा उपाधि-वितरण ■ संस्थान की प्रकृति एवं उद्देश्यों के अनुरूप उन अन्य संस्थाओं के साथ जुड़ना या सदस्यता ग्रहण करना या सहयोग करना या सम्मिलित होना, जिनके उद्देश्यों से मिलते-जुलते हों और इन समान उद्देश्यों वाले संस्थानों को संबद्धता प्रदान करना ■ समय-समय पर नियमानुसार अध्येतावृत्ति (फैलोशिप), छात्रवृत्ति और पुरस्कार, सम्मान पदक की स्थापना कर हिंदी से संबंधित कार्यों को प्रोत्साहन आदि।

संस्थान के कार्य

शिक्षणपरक कार्यक्रम :

(1) विदेशी विद्यार्थियों के लिए हिंदी-शिक्षण, (2) हिंदीतर राज्यों के विद्यार्थियों के लिए अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, (3) नवीकरण एवं संवर्द्धनात्मक कार्यक्रम, (4) दूरस्थ शिक्षण कार्यक्रम (स्ववित्तपोषित), (5) जनसंचार एवं पत्रकारिता, अनुवाद अध्ययन और अनुप्रयुक्त हिंदी भाषाविज्ञान के सांध्यकालीन पाठ्यक्रम (स्ववित्तपोषित)

अनुसंधनपरक कार्यक्रम :

(1) हिंदी-शिक्षण की अधुनातन प्रविधियों के विकास के लिए शोध, (2) हिंदीभाषा और अन्य भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक व्यतिरेकी अध्ययन, (3) हिंदीभाषा और साहित्य के क्षेत्र में आधारभूत एवं अनुप्रयुक्त अनुसंधान, (4) हिंदीभाषा के आधुनिकीकरण और भाषा प्रौद्योगिकी के विकास के उद्देश्य से अनुसंधान, (5) हिंदी का समाजभाषावैज्ञानिक सर्वेक्षण और अध्ययन, (6) प्रयोजनमूलक हिंदी से संबंधित शोधकार्य। अनुसंधानपरक कार्यों के दौरान द्वितीय भाषा एवं विदेशी भाषा के रूप में हिंदी-शिक्षण के लिए उपयोगी शिक्षण-सामग्री का निर्माण।

शिक्षण-सामग्री निर्माण और भाषा-विकास :

(1) हिंदीतर राज्यों और जनजाति क्षेत्र के विद्यालयों के लिए हिंदी-शिक्षण सामग्री निर्माण, (2) हिंदीतर राज्यों के लिए हिंदी का व्यतिरेकी व्याकरण एवं द्विभाषी अध्येता कोशों का निर्माण, (3) विदेशी भाषा के रूप में हिंदी-शिक्षण पाठ्यपुस्तकों का निर्माण, (4) कंप्यूटर साधित हिंदीभाषा शिक्षण सामग्री का निर्माण, (5) दृश्य-श्रव्य माध्यमों से हिंदी शिक्षण-संबंधी पाठ्यसामग्री का निर्माण, (6) हिंदी तथा हिंदीतर भारतीय भाषाओं के द्विभाषी/ त्रिभाषी शब्दकोशों का निर्माण।

संस्थान के प्रकाशन :

हिंदीभाषा एवं साहित्य, भाषाविज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी अध्ययन, भाषा एवं साहित्य शिक्षण, कोशविज्ञान आदि से संबद्ध विभिन्न विषयों पर उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन। अब तक 150 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। विभिन्न स्तरों एवं अनेक प्रयोजनों की पाठ्यपुस्तकों, सहायक सामग्री तथा अध्यापक निर्देशिकाओं का प्रकाशन। त्रैमासिक पत्रिका–'गवेषणा', 'मीडिया', और 'समन्वय पूर्वोत्तर' का प्रकाशन।

पुस्तकालय :

भाषाविज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भाषाशिक्षण और हिंदी साहित्य के विभिन्न विषयों की पुस्तकों के विशेषीकृत संग्रह की दृष्टि से हिंदी के सर्वश्रेष्ठ पुस्तकालयों में से एक। लगभग एक लाख पुस्तकें। लगभग 75 पत्र-पत्रिकाएँ (शोधपरक एवं अन्य)

संस्थान से संबद्ध प्रशिक्षण महाविद्यालय :

हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण के स्तर को समुन्नत करने तथा पाठ्यक्रम में एकरूपता लाने के उद्देश्य से उत्तर गुवाहाटी (असम), आइजोल (मिजोरम), मैसूर (कर्नाटक), दीमापुर (नागालैंड) के राजकीय हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण महाविद्यालयों को संस्थान से संबद्ध किया गया है।

योजनाएँ :

भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो में सिंहली विद्यार्थियों के लिए केंद्रीय हिंदी संस्थान के पाठ्यक्रम की 2007-08 से शुरुआत, ■ अफगानिस्तान के नान्गरहर विश्वविद्यालय (जलालाबाद) में संस्थान द्वारा निर्मित बी॰ए॰ का पाठ्यक्रम 2007-08 से प्रारंभ, ■ विश्व के कई अन्य देशों (चेक, स्लोवानिया, यू॰एस॰ए॰, यू॰के॰, मॉरिशस, बेल्जियम, रूस आदि) के साथ शैक्षणिक सहयोग और हिंदी पाठ्यक्रम संचालन के संबंध में संवाद जारी ■ हिंदी के बहुआयामी संवर्धन के लिए हिंदी कॉर्पोरा परियोजना, हिंदी लोक शब्दकोश परियोजना, भाषा-साहित्य सीडी निर्माण परियोजना, पूर्वोत्तर लोकसाहित्य परियोजना तथा लघु हिंदी विश्वकोश परियोजना पर कार्य।

डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका
उपाध्यक्ष, के॰हिं॰शि॰मं॰
kkgoyanka@gmail.com

प्रो॰ नंदकिशोर पांडेय
निदेशक
nkpandey65@gmail.com

 ISSN 0975-735X

 ISSN 0975-735X

ISSN 0975-735X

 ISSN 0975-735X

ISSN 0975-735X

 ISSN 0975-735X

ISSN 0975-735X

 ISSN 0975-735X

ISSN 0975-735X

 ISSN 0975-735X

ISSN 0975-735X

 ISSN 0975-735X

ISSN 0975-735X